राजवंश

लव स्टोरी

लव स्टोरी

eISBN: 978-93-5261-947-4
© प्रकाशकाधीन
प्रकाशक: डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.
X-30 ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II
नई दिल्ली-110020
फोन: 011-40712100, 41611861
फैक्स: 011-41611866
ई-मेल: ebooks@dpb.in
वेबसाइट: www.diamondbook.in
संस्करण: 2017
लव स्टोरी
लेखक: राजवंश

लव स्टोरी

"दो हजार से...शो..." राजन ने सामने वाले खिलाड़ी की आंखों में देखते हुए कहा।

"दो हैं किधर?" सामने बैठा खिलाड़ी आंख मारकर मुस्कराया।

"अभी मंगवाए देता हूं...मरा क्यों जाता है?"

"उस्ताद यह जुआ है...जुए में तो बाप-बेटे भी एक-दूसरे पर विश्वास नहीं करते...इसमें उधार का धंधा नहीं चलता।"

"बड़ा अधीर है यार!" राजन मुस्कराया, "दस हजार जीतकर भी तेरा पेट नहीं भरा।"

"भिखारी की झोली है...जितनी भरो थोड़ी है...."

इस वाक्य पर इर्द-गिर्द बैठे सभी व्यक्तियों ने ठहाका लगाया। राजन भी हंसने लगा। अनिल ने भी जेब से बटुआ निकालते हुए कहा, "ले मेरे राजकुमार! अपने पास तो हजार में से पांच सौ ही बच रहे हैं...."

पांच सौ के नोट अनिल ने राजन के सामने ऐसे फेंक दिए जैसे अपनी ही जेब में रखे हों। राजन ने स्वयं अपना पर्स खोला और बोला, "ले सात सौ मेरे पर्स में से भी निकल आए।"

"साढ़े तीन सौ इधर भी हैं..." कुमुद ने मेज पर कुछ नोट डाल दिए।

"तो क्या साढ़े चार सौ मेरे पास नहीं निकलेंगे अपने राजकुमार के लिए," धर्मचन्द ने अपनी जेब में हाथ डालकर सौ-सौ के पांच नोट मेज पर रखकर ढेर में से दस-दस के पांच नोट उठा लिए।

राजन ने असावधानी से सब नोट इकट्ठे किए और सामने डालता हुआ फकीरचन्द से बोला, "ले बे फकीरे...साले दो हजार के लिए भरोसा नहीं कर रहा था...अरे, मेरे इतने मित्र हैं तो मुझे क्या चिन्ता...शो कर दे अब..."

फकीरचन्द ने ठहाका लगाकर, अपनी जांघ खुजाई और बोला–

"शो कराने के बाद तुम सब धन उठा लेना राजकुमार। यह खेल का नियम होता है...एक-दूसरे के सामने डटे हुए खेल में नम्र व्यवहार नहीं चलता...खेल के बाद हारे हुए और जीते हुए एक-दूसरे के गले में बांहें डालकर चलते हैं...तू तो वैसे भी अपना यार...मित्र है...शो करा कर हार भी जाए तो पूरे पैसा उठा लेना।"

"तो शो कर दे ना..." राजन सिगरेट होंठों से लगाता हुआ बोला, "देर क्यों कर रहा है?"

इसी समय अनिल ने जेब से लाइटर निकालकर राजन की सिगरेट सुलगाई और फकीरचन्द ने पत्ते मेज पर डालते हुए कहा–

"...लो तीन बादशाह..."

राजन ने एक लम्बी सांस ली...मुस्कराकर बोला, "जीत गया तू...इधर सबसे बड़ा गुलाम है...सत्ता और अट्ठा है..."

फकीरचन्द ने ठहाका लगाया और नोट अपनी ओर समेट लिए। राजन के चेहरे पर हल्का-सा भी किसी चिंता या खेद का चिन्ह न था। उसने सिगरेट का कश खींचा और मुस्कराकर उधर देखने लगा जिधर संध्या खड़ी हुई मुस्करा रही थी। उसकी मुस्कराहट में भी एक शिकायत थी। राजन सिगरेट होंठों से निकालकर मसलता हुआ बोला, "अच्छा यारो...तुम खेल जारी रखो...मैं जरा अपनी रूठी हुई तकदीर को मना लूं..."

"मनाओ यार! अवश्य मनाओ..." अनिल ठंडी सांस लेकर बोला, "ऐसी सुन्दर तकदीर किसको मिलती है?"

राजन सिगरेट ऐश-ट्रे में मसल कर उठ गया। संध्या ने उसे अपनी ओर आते देखा तो क्रोधित मुद्रा में कंधों को झटककर आगे बढ़ गई। राजन ने कंधे को सिकोड़कर ढीला छोड़ते हुए पैकेट से दूसरा सिगरेट निकाला और उसे होंठों में दबा लिया। फकीरचन्द ने झट उठकर लाइटर जलाया और इसी समय उसकी झोली से कुछ पत्ते सरककर नीचे गिर गए। राजन ने चौंककर पत्तों की ओर देखा... दहला, दुक्की और चौका था। अचानक राजन के नथुने क्रोध से फूल गए और आंखें अंगारे उगलने लगीं। फकीरचन्द ने घबराकर पत्तों की ओर देखा...और उसी क्षण लड़खड़ा कर कुर्सी समेत पीछे उलट गया। राजन का उठा हाथ जोर से उसके गाल पर पड़ा।

"बेईमान...कमीने...निर्लज्ज..." राजन बड़बड़ाया।

"क्या हुआ प्रिंस?" अनिल तेजी से राजन की ओर बढ़ा।

"क्या बात हो गई?" धर्मचन्द ने घबराकर कहा।

राजन दोनों हाथ मेज पर टेक कर उछला और दूसरी ओर कूद गया। उसने फकीरचन्द को कमीज के गिरेबान से पकड़कर ऊपर उठाया और एक हाथ से तड़ातड़ उसके गालों पर चांटे जड़ता हुआ बोला, "लहू पी जाऊँगा तेरा...मुझे कपटी, कमीने, बेईमानों से घृणा है..."

"मार लो यार! मार लो..." फकीरचन्द अपने होंठ का लहू पोंछकर मुस्कराया, "दोस्त दोस्त के हाथों ही पिटता है।"

"चलो छोड़ो प्रिंस!" अनिल राजन के कंधे पर हाथ रखकर बोला, "दोस्त ही तो है...क्षमा कर दो...।"

"जाने दो राजन!" धर्मचन्द ने राजन के कोट का कालर ठीक करते हुए कहा, "तुम्हारा क्या बिगड़ गया दस-पांच हजार में...?"

कुमुद आगे बढ़कर राजन की बो का कोण ठीक करने लगा। राजन ने नई सिगरेट निकालकर होंठों से लगा ली और अनिल ने सिगरेट सुलगा दी। कुमुद ने फकीरचन्द से कहा, "अब खड़ा-खड़ा क्या देख रहा है भोन्दू...क्षमा मांग प्रिंस से..."

"मेरा कौन-सा मान घटता है क्षमा मांगने से..." फकीरचन्द रूमाल से होंठ का लहू पोंछकर मुस्कराया, "कोई दूसरा आंख उठाकर भी देखता तो उसकी आंखें फोड़ देता...किन्तु यह तो अपना यार है...और मार ले..." उसने राजन की ओर देखा और बोला, "मारेगा, प्रिंस?"

"क्षमा कर दिया..." राजन ने सिगरेट का कश खींचकर असावधानी से कहा, "किन्तु याद रखना, यदि अब ऐसी बेईमानी की तो गर्दन तोड़ दूंगा।"

"अब इसकी आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी प्रिंस! आज तो यदि मैं यह दस हजार न बना लेता तो नय्या ही डूब जाती मेरी। तुम तो जानते ही हो मैं कोई बहुत बड़ा आदमी नहीं हूं...छोटी-मोटी कपड़े की दुकान चलाता हूं...जिन थोक माल बेचने वालों से हिसाब-किताब है उनका दस हजार चढ़ गया था। दुकान कुर्क होने वाली थी। जुआ तो यूं ही हंसी-हंसी में खेल लिया...वरना मांगता भी तुम्हीं से..."

"देखा प्रिंस..." अनिल मुस्कराया, "कितना भरोसा है इस तुम्हारी मित्रता पर...अब तो गले लगा लो..."

राजन ने मुस्कराकर फकीरचन्द को गले लगा लिया और उसका गाल सहलाता हुआ बोला, "बहुत चोट लग गई है मेरे लाल के..."

सब हंस पड़े और फकीरचन्द भी खिलखिलाकर राजन से लिपट गया।

अचानक संगीत की मधुर तरंगें वातावरण में फैल गईं और राजन चौंककर हॉल की ओर देखने लगा। फिर उन लोगों से हटकर वह हॉल की ओर बढ़ गया...शेष मित्र फिर मेज़ के गिर्द बैठ गए।

राजन हॉल में आया तो सामने ही संध्या उसकी ओर पीठ किए खड़ी थी। राजन उसके समीप पहुंचा तो संध्या ने मुंह मोड़ लिया। राजन ने गर्दन झटकी और आगे बढ़ गया। एक गोल मेज़ से आवाज आई, "हैलो...प्रिंस..."

"हैलो..." राजन ने आवाज की ओर बिना देखे उत्तर दिया।

फिर एक-एक करके कई मेज़ों से हैलो-हैलो की आवाज़ें उभरीं...और राजन बिना ध्यान दिए सबको उत्तर देता एक खिड़की के पास जाकर रुक गया।

संगीत की तरंगें धीरे-धीरे बह रही थीं और हॉल में ट्यूबलाइट का चांदनी-जैसा प्रकाश छिटका हुआ था। खिड़की के पास ही रात की रानी के महकते हुए पौधे चुपचाप गुमसुम खड़े थे...राजन ने सिगरेट का अंतिम कश खींचकर सिगरेट खिड़की से बाहर फेंक दी। उसी समय पीछे से संध्या ने उसके कंधे पर हाथ रखा। राजन बिना उसे देखे कठोर स्वर में बोला, "क्यों आई हो मेरे पास?"

"इधर देखो तो बताऊं..."

राजन धीरे-से संध्या की ओर मुड़ा। संध्या ने उसकी आंखों में देखकर हल्की-सी मुस्कराहट के साथ कहा, "चैन नहीं पड़ता तुम्हें रूठे देखकर..."

"फिर स्वयं क्यों रूठ जाती हो?"

"इस आशा पर कि शायद तुम कभी स्वयं ही मना लो।"

"यह जानते हुए भी कि..."

"कि तुम किसी को नहीं मनाते..." संध्या आंखें मींचकर खोलती हुई मुस्कराई।

"कठोर हृदय हो ना...आज तक तुम्हें ही सब मनाते चले आए हैं...तुमने कभी किसी को नहीं मनाया...तुम क्या जानो किसी को मनाने में कितना आनन्द आता है..."

"अच्छा..." राजन ने संध्या की आंखों में देखकर कहा, "तो एक बार फिर रूठ कर देखो...मैं देखूंगा कि कितना आनन्द आता है मनाने में..."

"नहीं..." संध्या राजन के कंधे से सिर लगाकर बोली, "अब मैं तुमसे कभी नहीं रूठूंगी...डरती हूं, किसी दिन तुम रूठे ही रह गए तो मैं कहीं की न रहूंगी..."

"सच...!" राजन की मुस्कराहट गहरी हो गई।

"काश! तुम्हें मेरे प्यार पर विश्वास आ सके..."

"यदि विश्वास न होता तो इतने फूलों में से मैं तुम्हें न चुनता..." राजन धीरे-से बोला, "आओ यह काठ के फर्श का हृदय तुम्हारे चांदी के से पैरों तले धड़कने को व्याकुल है..."

"या एक राजकुमार के कोमल चरणों को चूमने के लिए..."

राजन ने संध्या की कमर में हाथ डाल दिया और दोनों वहीं से साज की ध्वनि पर नृत्य करते हुए काठ के फर्श की ओर बढ़ने लगे...एक मेज़ पर बैठे हुए जोड़े ने उन्हें देखा और स्त्री ने एक ठंडी सांस ली।

"हाय! कितने खोए-खोए हैं एक-दूसरे में...."

"काश! कभी तुम भी इसी भाव से मुझे देखतीं।"

"हां! तुम्हें...तुममें और राजन में कौन-सी बात एक है?"

"तो फिर तुमने मुझे किसलिए चुना था?"

"इसलिए कि राजन ने संध्या को चुन लिया था।" स्त्री हंस पड़ी।

पुरुष ने बुरा-सा मुंह बनाकर शराब का गिलास होंठों से लगा लिया और चुस्कियां लेने लगा। एक दूसरी मेज पर बैठे हुए जोड़े में से स्त्री ने कहा, "हाय...राजकुमार है...बिल्कुल राजकुमार..."

"करोड़पति है ना...." पुरुष बुरा-सा मुंह बनाकर बोला, "तुम स्त्रियों को हर वह व्यक्ति राजकुमार दिखाई देता है जो पैसा पानी के समान बहाए..."

"और तुम पुरुष हर ऐसे व्यक्ति से इसलिए जल उठते हो कि किसी बात में उससे होड़ नहीं ले सकते..."

"तो जाओ ना, हाथ थाम लो उसका..."

"जब भी संध्या ने छोड़ा अवश्य थामने का प्रयत्न करूंगी..."

राजन और संध्या साज पर झूमते-झूमते नाचने वालों की भीड़ में सम्मिलित हो चुके थे...संध्या ने राजन के कंधे से सिर लगाकर आंखें बन्द कर लीं...उसके पांव स्वयं ही साज की धीमी गति पर सर के साथ उठ रहे थे।

"क्या सोच रही हो...?" राजन ने धीरे-से पूछा।

"कुछ नहीं...एक स्वप्न देख रही हूं..." संध्या गुनगुनाई।

"क्या? मैं भी तो सुनूं..."

"हमारा ब्याह हो गया है और हम यहां से दूर स्विटजरलैण्ड के सुन्दर वातावरण में 'हनीमून' मना रहे हैं..."

"यह कोई स्वप्न है...यह तो अर्थ है पगली...हमारे प्यार के स्वप्न का..."

"जो शायद कभी साकार न हो सके..."

"हत्...अब दिन ही कितने रह गए हैं इस स्वप्न को साकार होने में...केवल दो महीने बाद परीक्षा है...परीक्षा समाप्त होते ही सफलता की पार्टी में हमारी सगाई की घोषणा हो जाएगी और कुछ समय बाद ब्याह..."

"तुम्हें परीक्षा में अपनी सफलता का इतना विश्वास है?"

"विश्वास मेरा नहीं...मुझे पढ़ाने वालों का है...वे लोग कहते हैं कि जो शब्द मेरी दृष्टि से एक बार गुजर जाए उसे मैं कभी नहीं भूलता...कहो तो पाठ्य-पुस्तक का कोई भी पाठ दोहराऊं..."

संध्या मुस्कराई, फिर ठंडी सांस लेकर बोली, "फिर भी पांच-छः महीने तो लगेंगे ही..."

"पांच-छः महीने तो पलक झपकने में ही बीत जाएंगे..."

"और इस पलक झपकने में तुम इस योग्य हो जाओगे कि हम स्विटजरलैंड तो क्या काश्मीर भी न जा सकेंगे..."

"क्यों? ऐसा क्यों सोचती हो तुम?"

"तुमने यह जुए की लत जो डाल ली है...दस-बारह हजार से कम हारकर तो कभी उठे नहीं...और फिर हर दिन खेलते हो..."

"पचास करोड़ में से लाख-दो लाख निकल भी गए तो क्या अन्तर पड़ेगा...?"

"तुम यह क्यों भूल जाते हो कि पचास करोड़ तुम्हारे अधिकार में नहीं हैं...इस धनराशि का संरक्षक तुम्हारा बड़ा भाई और तुम्हारी बहन है...और इसमें उनका भाग भी तो सम्मिलित है..."

"मोहन भैया...." राजन ठंडी सांस भरकर मुस्कराया, "वे तो मेरे भी संरक्षक हैं...डैडी ने प्राण त्यागते समय मेरा हाथ भैया के हाथ में थमाकर कहा था...मोहन! यह तुम्हारा छोटा भाई ही नहीं...आज से तुम्हारा बेटा भी है...इसका भविष्य अब तुम्हारे हाथ में है...मैं इसे तुम्हारे आश्रय में छोड़े जा रहा हूं...इसका दुख मेरी आत्मा को दु:ख पहुंचाएगा...आज डैडी को स्वर्गवासी हुए दस वर्ष बीत चुके हैं, किन्तु, भैया ने कभी मुझे पिता का अभाव अनुभव होने नहीं दिया..."

"और भाभी ने भी...?"

"भाभी पराया खून है...उसने मुझे मां का स्नेह न दिया तो क्या हुआ...वह मुझे उठते-बैठते हर समय टोकती है...पर मैं उसकी ओर कभी देखता ही नहीं...मेरा सब कुछ मोहन भैया ही हैं..."

"और मोहन भैया तुम्हारी भाभी के पति भी हैं। राजन, भाभी तुम्हारे भैया के जितनी निकट रहती हैं उतनी निकटता तुम्हें प्राप्त नहीं..." उठते-बैठते तुम्हें-टोकने वाली क्या मोहन भैया के कान तुम्हारे विरुद्ध न भरती होगी...पत्नी वह जादू होती है जो अपना प्रभाव धीरे-धीरे दिखाती है..."

राजन ध्यानपूर्वक संध्या की ओर देखते हुए धीरे-से बोला, "क्या पत्नी ब्याह से पहले ही होने वाले पति के गिर्द दीवार खींचना आरम्भ कर देती है?"

"क्या कह रहे हो राजन?"

"मैं भैया को देवता मानता हूं....और देवताओं के पांव कभी नहीं डगमगाते..."

उसी समय एकाएक एक छनाके के साथ संगीत थम गया और राजन ने संध्या का हाथ छोड़ दिया। दोनों भीड़ से बाहर निकल आए...राजन आगे-आगे और संध्या उसके पीछे...राजन के चेहरे पर थकान-सी झलक रही थी।

* *

टेलीफोन की घंटी बजी और मोहन ने ऐनक ठीक करते हुए रजिस्टर पर उंगली दौड़ानी आरम्भ कर दी...उसके सामने मेज पर रजिस्टरों और फाइलों का ढेर था...उंगलियों में बुझा हुआ सिगार दबा था और टेबल-लैम्प के प्रकाश में वह रजिस्टर चैक कर रहा था। टेलीफोन की घंटी निरन्तर बज रही थी। मोहन धीरे-से बड़बड़ाया, "उफ्...फोह...क्या कष्ट है..." उसने ऊंचे स्वर में पुकारा, "अरे भाई राधा...जरा देखना तो...."

"आ रही हूं..." राधा की आवाज आई।

मोहन की दृष्टि निरन्तर रजिस्टर पर जमी रही। घंटी थोड़े-थोड़े समय बाद बजती रही...इतने में पांव की आहट आई और राधा प्रवेश करते हुए बोली, "टेलीफोन आपकी मेज पर है और आप बुलाते मुझे हैं दूसरे कमरे में से...दो बज रहे हैं...कब तक सिर खपाते रहेंगे यहां बैठकर...अपने स्वास्थ्य का भी कुछ ध्यान करें..."

"ऊं...हूं...कर रहा हूं" मोहन वैसे ही रजिस्टर में डूबा हुआ बोला।

राधा ने रिसीवर उठाकर कान से लगा लिया और बोली, "कौन है?"

"भाभी...मैं हूं....भैया कहां हैं?"

"यहीं हैं..."

"क्या कर रहे हैं?"

"अपने स्वास्थ्य का ध्यान कर रहे हैं...तुम कहां हो? अब तुम रात दो-दो बजे तक बाहर रहने लगे हो?"

"ओह, भाभी...मैं इस समय बड़ी उलझन में हूं...भैया से कहना तुरन्त सात हजार रुपये शामू के हाथ भिजवा दें..."

"खूब...केवल सात हजार रुपये...?" राधा व्यंग्यात्मक स्वर में बोली।

"शीघ्र भिजवा दो..." राजन ने गम्भीर स्वर में कहा।

राधा ने चोंगे पर हाथ रखकर कहा, "सुना आपने...? आपके लाडले ने सात हजार रुपये मंगवाए हैं...तुरन्त...क्लब में...?"

"चाबी दराज में है...आलमारी खोलकर निकाल लो...मुझे डिस्टर्ब न करो..."

मोहन ने उत्तर देकर बुझे हुए सिगार का कश लिया और होंठों से इस प्रकार हवा निकाली जैसे धुआं निकल रहा हो...राधा ने मुस्कराकर कहा, "सिगार बुझा हुआ है..."

मोहन ने चौंककर सिगार की ओर देखा और फिर मुस्कराकर तिपाई पर रखा लाईटर उठाकर बोला–

"मेरा तो दिमाग ही खराब हो गया है...तुम मुझे टोकती न रही तो मैं किसी दिन चाय की प्याली के स्थान पर स्याही की दवात उठाकर मुंह से लगा लूंगा..."

"जानती हूं....किन्तु इतनी व्यस्तता भी अच्छी नहीं कि अपने लाड़ले से इतना भी न पूछें कि उसने यह सात हजार रुपये क्यों मंगाए हैं..."

"अरे हां...क्यों मंगवाए हैं...अभी कल ही तो उसने मुझसे दो हजार लिए थे.."

"दो हजार नहीं तीन हजार...और कल नहीं आज शाम को..."

"अरे हां, आज शाम को...पूछो, पूछो उसे अब क्या आवश्यकता पड़ गई है?"

"यह भी कोई पूछने की बात है?" राधा व्यंग्य से बोली, "अब वह क्लब जाने लगा है...और क्लब में इतनी धनराशि कोका-कोला में घोलकर नहीं पी जाती...जुआ भी होता है वहां..."

"नहीं...राजन जुआ नहीं खेलता..."

"पूछ लेती हूं..." राधा ने चोंगे से हाथ हटाकर पूछा, "राजन तुम्हारे भैया पूछ रहे हैं, शाम ही को तुम्हें तीन हजार रुपये दिए थे...इतनी जल्दी सात हजार की क्यों आवश्यकता पड़ गई है?"

"भैया पूछ रहे हैं या तुम?" राजन ने उधर से पूछा।

"यदि मैं भी पूछ लूं तो कोई अपराध नहीं..."

"क्या अब मुझे अपने खर्च का हिसाब भी देना होगा?"

"खर्च सीमा से अत्यधिक बढ़ जाए तो उसका हिसाब मांगना ही पड़ता है...धन कोई जल का सोता नहीं होता जिसे खर्च करते रहो और वह बढ़ता रहे..."

"आप टेलीफोन मोहन भैया को दीजिए..." राजन ने कठोर स्वर में कहा।

राधा ने एक झटके से रिसीवर मोहन की ओर बढ़ा दिया। मोहन राधा को आश्चर्य से देखता हुआ कह रहा था, "यह तुमने क्या किया? बच्चा ही तो है...बेचारे के मन को ठेस पहुंची होगी..."

"हां...ठीक है...मैं आप दोनों भाइयों के बीच में बोलने वाली होती कौन हूं?" राधा क्रोध में बोली, "आप उसकी ठेस का ध्यान करते रहिए ताकि किसी दिन वह आपको इतनी बड़ी ठेस पहुंचाए कि आप संभल न सकें...आपके चौबीस घंटों में से बीस घंटे काम करते बीतते हैं और उसके बीस घंटे मनोरंजन में...पिछले एक महीने से दस हजार रुपये उड़ा चुका है...जरा खाता उठाकर देखिए तो उसे कितना दे चुके हैं...जब धन का यह कुआं खाली हो जाए तो आप मुझे और अपने बच्चे को किसी अनाथालय में भरती करा दीजिएगा..."

यह कहकर राधा झट कमरे से बाहर निकल आई। मोहन अवाक् टेलीफोन का रिसीवर हाथ में उठाए उस द्वार की ओर देखता रहा जिधर से राधा बाहर गई थी। फिर उसने रिसीवर कान से लगाया और बोला, "राजन...?"

"भैया मैंने भाभी की सब बातें सुन लीं...!"

"तुम्हें रुपये किस काम के लिए चाहिए?"

"आप भी वही प्रश्न कर रहे हैं?"

"तुम्हारा बड़ा भाई भी हूं...संरक्षक भी हूं...उत्तर दो...क्यों चाहिए ये पैसे इस समय?"

"भाभी का विचार ठीक है..."

"तुम जुआ खेलने लगे हो?"

"हर बड़ा आदमी खेलता है..."

"हर बड़ा आदमी वह विष भी पीता है जिसे शराब कहते हैं..."

"मुझे रुपया चाहिए...अभी, इसी समय..."

"रुपया नहीं मिलेगा तुम्हें..." मोहन ने गम्भीरता से कहा।

बिना राजन का उत्तर सुने मोहन ने टेलीफोन रख दिया। सिगार बुझ चुका था। उसने राख वाले सिरे से सिगार दांतों में दबाया और दूसरी ओर से उसे सुलगाने लगा। उसकी आंखों से गहरा क्रोध झलक रहा था।

* *

राजन ने पूरे बल से रिसीवर मेज पर दे मारा। रिसीवर के टुकड़े-टुकड़े हो गए। रिसेप्शन-गर्ल घबरा कर राजन की ओर देखने लगी। राजन ने टूटे हुए रिसीवर पर दृष्टि डाली और अत्यन्त क्रोध में भरा हुआ बोला, "यह हानि मेरे नाम में लिख लो..."

"कोई बात नहीं प्रिंस..." रिसेप्शन-गर्ल मुस्कराई।

राजन क्रोध-भरी मुद्रा में घूमा...उसके सामने ही संध्या खड़ी उसकी आंखों में झांककर मुस्करा रही थी। राजन ने झटके से उसे अपने सामने से हटाया और तेज-तेज चलता हुआ मुख्य द्वार की ओर बढ़ा। जिन लोगों ने रिसीवर टूटने की आवाज पर पलटकर देखा था वे आश्चर्य से राजन को जाते हुए देख रहे थे। एक मेज पर बैठी हुई लड़की ने प्रशंसनीय दृष्टि से राजन को देखते हुए कहा, "वाह! क्या ओज है...क्या तेवर हैं...!"

राजन आवेश में आकर बाहर निकल आया। उसके पांव पार्किंग की ओर बढ़ रहे थे। उसके पीछे तेज-तेज चलती हुई संध्या आ रही थी। पार्किंग के निकट पहुंचते-पहुंचते संध्या राजन के सामने आ गई, "यह क्या पागलपन है राजन?" संध्या हांफती हुई बोली।

"आज यह पागलपन किसी मंजिल पर पहुंचकर ही दम लेगा..." राजन मुट्ठियां भींचता हुआ बोला।

"कितने रुपयों की आवश्यकता है तुम्हें?" संध्या ने पर्स खोलते हुए पूछा।

"सात हजार!" अचानक पीछे से अनिल ने उत्तर दिया।

राजन चौंककर पीछे मुड़ा। पास ही अनिल, कुमुद, फकीरचन्द और धर्मचन्द खड़े राजन को देख रहे थे। संध्या ने उन लोगों की ओर देखा और बोली, "मेरे पर्स में इस समय एक हजार हैं...आप लोग कल तक धीरज रखें...मैं कल यहीं पर सात हजार रुपये ले आऊंगी..."

"और हम लोग अपना ऋण पाकर सन्तुष्ट हो जाएंगे..." अनिल व्यंग्यात्मक मुस्कराहट के साथ बोला, "क्या ब्याज भी चाहिए तुम लोगों को?"

"हां...हमें ब्याज भी चाहिए..." अनिल गंभीर होकर बोला।

"तो यह ब्याज मैं पेशगी चुकाए देता हूं..." राजन होंठ भींचकर बोला।

उसने पूरे बल से अनिल को मारने के लिए हाथ उठाया...किन्तु, वह हाथ अनिल की पकड़ में आ गया। अनिल मुस्कराकर बोला, "बड़े भावुक हो यार! यह तो पूछा होता हमें ब्याज चाहिए किस रूप में...तुम हमारे मित्र हो...हमारा तुम्हारा कोई व्यापारिक लेन-देन नहीं...हम तुम्हें चाहते हैं, तुम्हारी दोस्ती चाहते हैं...और तुम्हारे मित्र इतने गिरे हुए नहीं हैं कि केवल सात हजार रुपयों के लिए अपने परम मित्र को अपमानित करते फिरें...हमें ऐसे पैसे नहीं चाहिए जिनके लिए तुम्हारी मंगेतर को अपने पिता से कहना पड़े कि उसके होने वाले करोड़पति स्वामी के भाई ने उसे सात हजार रुपये देने से इन्कार करके भरी क्लब में अपमान किया है..और वह होने वाले पति का ऋण चुका कर उसका मान वापस लाना चाहती है...फिर भी हमें अपने धन का ब्याज अवश्य चाहिए...और यह ब्याज अपने मित्र के सन्तोष के रूप में चाहिए..."

"अनिल...!" राजन ने आश्चर्य से अनिल को देखा।

"तुम बहुत क्रोध में घर जा रहे हो दोस्त! क्रोध किसी भी समस्या का निवारण नहीं करता...तुम अपने भाई के संरक्षण में हो...तुम नहीं जानते कि वह किस प्रकार हिसाब-किताब रखता है...तुम्हें यह भी नहीं ज्ञात कि पिता की मृत्यु के बाद फर्म की आय में कितनी बढ़ोत्तरी हुई है...तुम इससे भी अनभिज्ञ हो कि तुम्हारे पिता अपनी जायदाद के लिए क्या वसीयत कर गए हैं...इसलिए तुम्हें भावुकता से काम नहीं लेना चाहिए....बल्कि नम्रता से इस समस्या को सुलझाना चाहिए..."

"अनिल बाबू ठीक कह रहे हैं राजन!" ...संध्या ने राजन के कंधे पर हाथ रखकर कहा।

"यह तो केवल आरम्भ है..." अनिल मुस्कराकर बोला, "हमने दुनिया देखी है...धन बाप-बेटे को शत्रु बना देता है...इतिहास इस बात का साक्षी है कि...कितने ही ऐसे उदाहरण हैं कि राज और धन के लिए पुत्र ने पिता को बन्दी बना लिया, भाई ने भाई की हत्या कर डाली...पर यह भी ऐतिहासिक वास्तविकता है कि मानव के काम यदि कोई चीज आई है तो वह धन-दौलत ही है...तुम अपने आपको अकेले मत समझो...हम पग-पग पर, प्रत्येक ऊंच-नीच में...हर बात में तुम्हारे संग हैं...हम अपने प्रिय मित्र को मार्ग से भटकने नहीं देंगे...."

और राजन ने अनिल का हाथ दृढ़ता से दबा लिया।

* *

मोहन ने सिगार का एक भरा कश खींचा और सामने फाटक की ओर देखने लगा...फिर उसने अपनी घड़ी देखी। तीन बजकर दस मिनट हुए थे। एकाएक फाटक के पास दो रोशनियां आकर रुकीं। मोहन संभल गया। कार की खिड़की खुली और उसमें से राजन उतरा। फिर कार की खिड़की में एक और चेहरा झलका...मोहन चौंककर बड़बड़ाया, "संध्या...! राजन के साथ...!"

राजन ने संध्या का हाथ दबाया और "बाय-बाय" कहकर हाथ हिलाता हुआ पीछे हट गया। संध्या मुस्कराई और हाथ हिलाकर गाड़ी आगे बढ़ाकर ले गई। राजन ने घूम कर भीतर प्रवेश किया। सहसा उसकी दृष्टि मोहन पर पड़ी। मोहन ने कड़ी दृष्टि से उसे देखा और सिगार का गहरा कश खींचा। राजन क्षण-भर के लिए ठिठका और फिर तेज-तेज पग उठाता हुआ अपने कमरे की ओर बढ़ गया। मोहन का चेहरा और भी गंभीर हो गया। उसे राजन की आंखों में स्पष्ट विद्रोह के चिन्ह दिखाई दिए।

दूसरी सुबह नाश्ते की मेज पर राजन चुपचाप हाथ चला रहा था और मोहन ध्यानपूर्वक उसके मुख के भावों को पढ़ने का प्रयत्न कर रहा था। राधा ने एक बार राजन को देखा और झटके से गर्दन दूसरी ओर फेर ली। मोहन ने राधा से पूछा–

"राजा स्कूल के लिए तैयार हो गया?"

"तैयार हो रहा है..मैं देखती हूं..." राधा चाय का अन्तिम घूंट पीकर उठ गई।

राधा के जाने के बाद मोहन ने राजन से पूछा, "तुम्हारी परीक्षा कब आरम्भ हो रही है?"

"एक सप्ताह बाद..." राजन ने गंभीर होकर कहा।

"गाड़ी कहां है तुम्हारी?"

"रात जाते समय गेयर टूट गया था...वर्कशाप में छोड़ दी है...बहुत तंग करने लगी है...अब एक नई मर्सिडीज बुक करा रहा हूं..."

"जिस चीज का अत्यधिक प्रयोग किया जाएगा उसका यही परिणाम होगा..."

"क्या का गैरेज में खड़ी रखने के लिए खरीदी जाती हैं?" राजन ने झटके से पूछा।

मोहन ने एक ठंडी सांस भरी और कुर्सी की पीठ से टेक लगाता हुआ बोला, "मेरी गाड़ी तुम ले लो...मैं तुम्हारी गाड़ी से काम चला लूंगा, जब तक वह काम देती है...क्या आवश्यकता है इस फिजूलखर्ची की..."

"कहां फिजूलखर्ची की आवश्यकता है और कहां कंजूसी की...यह मैं भी समझता हूं...बच्चा नहीं रह गया हूं अब..." राजन ने झटके से कहा और उठकर तेजी से डाइनिंग-रूम से निकल गया।

राजन के हर भाव से विद्रोह झलक रहा था। मोहन चुपचाप उस द्वार की ओर देखता रहा जहां से राजन बाहर गया था। उसके होंठों पर मुस्कराहट फैल गई।

* *

मित्रों ने राजन को कंधों पर उठा लिया और जोर-जोर से नारे लगाने लगे, "प्रिंस राजन...जिन्दाबाद...प्रिंस राजन जिन्दाबाद...."

वे लोग राजन को उठाये-उठाये फाटक तक ले आए। बड़ी कठिनता से राजन नीचे उतर सका। उसी समय भीड़ को चीरती हुई संध्या राजन के पास पहुंची–

"बधाई हो राजन...तुम फर्स्ट डिवीजन में पास हुए हो..."

"तुम्हें भी बधाई हो संध्या..." राजन ने संध्या का हाथ दबाकर कहा, "आज की विजय उस मार्ग का आरंभ है जिस पर चलकर हम दोनों एक मंजिल पर पहुंचेंगे."

"किन्तु आज राजन हमारा है..." अनिल ने राजन का हाथ संध्या से छुड़ाते हुए कहा, "आज राजन ने अपने मित्रों का सिर मान से ऊंचा कर दिया है...जो लोग राजन को हमारे संग घूमते-फिरते देखते थे, वे समझते थे कि हम राजन को पास न होने देंगे..और आज उन लोगों की पराजय का उत्सव हम मनाएंगे...संध्या देवी! आप तो जीवन-भर राजन के साथ उत्सव मनाती रहेंगी..."

उन लोगों ने फिर राजन को उठा लिया और उसे उठाए-उठाए कार की ओर ले गए। संध्या मुस्कराकर कुछ संकोच में उन लोगों की ओर देखती रही। इस मित्र-मंडली ने राजन को कार में ठूंस दिया और उसी क्षण कार फर्राटे भरने लगी। कार में ठहाके गूंजने लगे। अनिल ने कार एक बार के सामने रोक दी। राजन ने चौंककर पूछा, "यहां क्यों रोकी है गाड़ी?"

"वह उत्सव उत्सव नहीं होता दोस्त! जिसमें लाल परी का नशा सम्मिलित न हो..."

"शराब?" राजन चौंक पड़ा।

"पीकर तो देखो आज....जीवन-भर हमें दुआएं दोगे कि अमृत से परिचय करा दिया।"

राजन असमंजस में पड़ गया। अनिल के चेहरे पर व्यंग्यभरी मुस्कान थी।

"क्या मोहन भैया का चेहरा देख रहे हो कल्पना में...?" अनिल ने पूछा।

"क्यों?" राजन को अचानक क्रोध आ गया।

"जो मूर्ख इस आनन्द से परिचित नहीं होते, वे सदा ही इसे बुरा कहते हैं...वे दूसरों को भी इस आनन्द से दूर रखने का प्रयत्न करते हैं।"

"कौन रोकेगा मुझे?" राजन क्रोध में बोला, "मैं किसी का बन्दी नहीं हूं....स्वतन्त्र हूं..."

"तो फिर आओ मेरी जान! विलम्ब क्यों?"

थोड़ी देर बाद पूरी मंडली शराब में विभोर थी....राजन ने इतना आनन्द शायद कभी पहले अनुभव नहीं किया था। वह नशे में झूमकर बोला, "अरे निर्दयी, अब तक तूने क्यों इस लालपरी से मुझे इतना दूर रखा था।"

"अब तो तुम्हारे पहलू में है....जितना चाही आनन्द उठाओ..." अनिल ने फिर राजन का गिलास भर दिया।

थोड़ी देर बाद वे लोग उठे। राजन ने लड़खड़ाते हुए जेब में से पर्स निकाला और काउंटर पर

फेंकते हुए बोला, "निकाल लो....इस स्वर्ग के टिकट की कीमत निकाल लो...."

काऊंटर-क्लर्क ने मुस्कराकर पर्स उठाया और उसमें से बिल के पैसे निकालकर पर्स वापस राजन को देते हुए वेटर से बोला, "वेटर! साहब को द्वार तक पहुंचा दो....कोई मेज-कुर्सी न तोड़ दें...."

राजन ने क्रोध में काउंटर क्लर्क को घूरा और पर्स काउंटर पर पटककर बोला, "निकाल लो....अपने पैसे पूरे कर लो। आज हम यहां की सारी कुर्सियां-मेजें तोड़कर जाएंगे...."

"अरे-अरे....साहब....यह तो मैंने यूंही कह दिया था...." काउंटर-क्लर्क बौखलाकर बोला।

"कैसे कहा तुमने? जानते नहीं हम कौन हैं....प्रिंस हैं प्रिंस....आज इस बार में एक भी मेज-कुर्सी साबुत न बचेगी...."

बड़ी कठिनता से अनिल, फकीरचन्द, धर्मचन्द और कुमुद ने मिलकर राजन को उपद्रव मचाने से रोका। अनिल ने काउंटर से राजन का पर्स उठाकर उसकी जेब में रख दिया और उसे घेरकर कार में ले आए। कार फिर सड़क पर दौड़ने लगी, स्टेयरिंग राजन ही के हाथ में था और मदिरा के प्रभावाधीन झूम रहा था। शेष मित्र जोर-जोर से ठहाके लगा रहे थे। कार एक लड़की के पास से गुजरी तो अनिल ने खिड़की से सिर निकालकर एक चुम्बन वातावरण में उछाल दिया। लड़की भिन्नाकर कुछ दूर तक कार के पीछे दौड़ी और उन लोगों ने ठहाके लगाए। फिर एक गुजरते हुए राही के सिर से कुमुद ने झपटकर हैट उतार लिया.....राही दूर तक दौड़ा और कुमुद हैट सिर पर लगाकर जोर-जोर से हंसने लगा।

राजन ने कार की गति और तेज कर दी। अनिल उसका कंधा हिलाकर बोला, "और तेज....मेरे यार और तेज.....आज इतनी तेज कार चलाओ जितनी तेज पहले कभी न चलाई हो....आज की शाम हमारी है...."

राजन ने कार की गति और भी तेज कर दी और कार लहराती हुई दूसरी आती-जाती गाड़ियों से बचती-बचाती आगे निकल गई। एक मोड़ पर मुड़ते हुए कार अचानक एक टैक्सी के सामने आ गई। टैक्सी-ड्राइवर ने बड़ी फुर्ती से टैक्सी बचा ली, फिर भी उसका पिछला बम्पर कार से रगड़ता चला गया और टैक्सी उलटते-उलटते बची। पिछला बम्पर टूटकर गिर गया। इस सड़क पर अधिक भीड़ भी न थी।

राजन ने कार रोक ली। टैक्सी भी रुक गई। राजन खिड़की खोलकर लड़खड़ाता हुआ नीचे उतरा। उधर से टैक्सी-ड्राइवर भी नीचे उतरा। राजन ने क्रोधित दृष्टि से उसे घूरकर देखा–

"इडियट....नानसेंस....मर्सिडीज का सत्यनाश कर डाला...."

फिर उसने ड्राइवर को मारने के लिए हाथ घुमाया....ड्राइवर ने फुर्ती से उसकी कलाई पकड़ ली और उसे चांटा मारने के लिए हाथ उठाया, पर ठिठककर रुक गया और बोला, "जाइए बाबूजी! यदि ये गालियां आपने दी होतीं तो गाली का भी उत्तर देता और चांटे का भी।"

"तू उत्तर देता?" राजन क्रोध से मुट्ठियां भींचकर बोला।

"हां मैं उत्तर देता...." ड्राइवर कठोर स्वर में बोला, "टैक्सी चलाता हूं भीख नहीं मांगता.....तुम कोई आकाश से उतरे हो....या संसार भर की इज्जत खरीदकर अपने खजाने में भर ली है? आधा गिलास दारू पी ली और समझने लगे स्वयं को राजकुमार...."

अनिल, फकीरचन्द, कुमुद और धर्मचन्द भी नीचे उतर आए थे। उन्होंने राजन को पकड़ लिया और बलपूर्वक उसे कार में धकेल दिया। ड्राइवर खिड़की के पास पहुंचकर बोला, "जाते कहां हो बाबू? मरम्मत के दाम तो देते जाओ....टैक्सी है टैक्सी मर्सिडीज नहीं जिसे नौकर के हाथ वर्कशाप पहुंचा दोगे और वर्कशाप से बिल बनकर आ जाएगा....आज की मरम्मत का बिल मेरी चार दिन की मजदूरी से भी नहीं पूरा होगा...."

"तू जाता है या मजा चखाऊं?" राजन ने फिर खिड़की खोलनी चाही।

अनिल ने फिर उसकी बांह पकड़ ली। ड्राइवर ने कहा, "मजा तुम क्या चखाओगे.....कहो तो मैं चखाऊं....एक साधारण पुलिस वाला ही इस नई मर्सिडीज को खींचकर थाने ले जाएगा और पीकर गाड़ी चलाने के अपराध में क्या दण्ड मिलेगा, यह स्वयं सोच लो...?"

अनिल ने बड़ी कठिनता से राजन को वश में किया और उसकी जेब से पर्स निकालकर सौ का नोट टैक्सी ड्राइवर की ओर बढ़ाया। ड्राइवर ने नोट को झपट लिया और बुरा सा मुंह बनाकर बोला, "जाओ....और नुकसान मैं स्वयं भुगत लूंगा....।"

थोड़ी देर बाद मर्सिडीज फिर सड़क पर भाग रही थी और चारों मित्र राजन का मूड ठीक करने का यत्न कर रहे थे।

रात को लगभग ग्यारह बजे कार कोठी के कम्पाउंड में पहुंची। ठहाकों का शोर सुनकर मोहन ने अपने कमरे की खिड़की से नीचे देखा। राजन अपने मित्रों के साथ झूमता, लड़खड़ाता हुआ सबसे आगे-आगे था.....मोहन ने ध्यानपूर्वक देखा और वह भाई को इस दशा में देखकर

चौंका। फिर पास ही से उसे राधा की आवाज सुनाई दी, "देख रहे हैं अपने लाड़ले की करतूत....आज शराब पीकर आया है....वह भी गुंडों की टोली के साथ....भगवान की कृपा है कि राजा सो रहा है....वरना न जाने बच्चे पर इसका क्या प्रभाव पड़ता.....किन्तु, अभी क्या है.....आज तो द्वार खुला ही है...."

मोहन कुछ न बोला। उसके चेहरे पर फैली हुई गंभीरता में दुख और क्रोध दोनों सम्मिलित थे। नीचे हॉल में शोर गूंज रहा था और राजन चीख कर नौकर को पुकार कर कह रहा था, "अरे....कहां मर गया? खाना लगा मेज पर।"

"साहब...." नौकर की आवाज आई, "खाना तो केवल आपका रखा है...."

"तो क्या हुआ?" राजन मेज पर हाथ मारकर बोला, "अभी तैयार कर जाकर...देखता नहीं हमारे दोस्त आए हुए हैं...."

"जी....मालिक.....अभी तैयार करता हूं...."

फिर हँसी और धमाधम का शोर गूंजने लगा। मोहन के माथे की सलवटें कुछ गहरी हो गई थीं।

* *

राजन ने अचानक कार रोक ली। संध्या ने चौंककर पूछा, "अरे....यहां क्यों रुक गए?"

"आओ...." राजन उतरता हुआ मुस्कराकर बोला।

संध्या उतर गई। राजन ने दुकान के साइन बोर्ड की ओर संकेत किया।

"यह तो ज्यूलरी की दुकान है...." संध्या ने कहा।

"हां...." राजन संध्या का हाथ अपने हाथ में लेकर मुस्कराया, "तुम भूल रही हो.....आज शाम को मेरे पास होने की खुशी में जो पार्टी होने वाली है....उसी में हमारी सगाई की घोषणा भी होगी....और मैं तुम्हारी उंगली में अंगूठी भी पहनाऊंगा...."

संध्या के होंठों पर मुस्कराहट दौड़ गई। राजन ने उसका हाथ थामे हुए दुकान में प्रवेश किया। काउंटर पर पहुंचकर उसने देखने के लिए अंगुठियां मांगीं। दुकानदार ने अगूंठियों के कई डिब्बे सामने रख दिए। राजन अंगूठियां देखता रहा और संध्या की दृष्टि एक शो केस पर टिक गई। उसने उंगली के संकेत से दुकानदार को बता कर कहा, "जरा यह टाई-पिन निकालिए...."

"क्या परख वाली दृष्टि है आपकी....," दुकानदार शो केस खोलता हुआ प्रशंसनीय स्वर में बोला, "साधारण व्यक्ति की दृष्टि तो इसकी सुन्दरता का मूल्य ही नहीं पा सकती....दो ही पीस तैयार किए गए थे नमूने के लिए.....एक पीस तो कल ही बेचा है.....दुर्गापुर स्टेट के पूर्व राजकुमार की मंगेतर महाराजकुमार की सालगिरह पर उपहार देने के लिए ले गई हैं...."

टाई-पिन निकालकर दुकानदार ने संध्या के सामने रखते हुए कहा, "कीमत भी कोई अधिक नहीं.....केवल डेढ़ हजार रुपये...."

संध्या ने टाई-पिन को ध्यान से देखा, फिर राजन की ओर मुड़ी। इसी समय राजन एक अंगूठी चुनकर संध्या की ओर मुड़ा। दोनों ने एक-दूसरे के हाथों में उपहार की ओर देखा और फिर एक साथ एक-दूसरे की आंखों में। संध्या मुस्कराकर बोली, "अति सुन्दर...."

"बहुत हसीन...." राजन भी मुस्कराया।

दोनों ने अपने-अपने उपहार पैक कराए और दुकान से बाहर निकल आए। राजन साथ वाली दुकान की ओर बढ़ा.....दोनों इस दुकान ने घुस गए। राजन ने अपने लिए एक दर्जन जरसियाँ खरीदीं। थोड़ी देर बाद वे इस दुकान से निकलकर एक तीसरी दुकान में घुस गए, कोई दो घंटे बाद जब कार चली तो उसकी पिछली सीट पर पैकेटों के ढेर पड़े हुए थे।

* *

राजन ने गिलास उठाकर आगे बढ़ाया और उनके चारों दोस्तो ने अपने-अपने गिलास राजन के गिलास से टकराए। अनिल ने मुस्कराकर कहा, "हमारे दोस्त.....प्रिंस राजन की सफलता के नाम...."

सबने अपने गिलास होंठों से लगा लिए और एक ही सांस में गटागट पी गए। अनिल ने दूसरी बोतल खोली और गिलासों में उड़ेलने लगा। राजन ने एक सेब उठाया और खाने लगा। अनिल ने आखिरी गिलास में शराब उड़ेली ही थी कि एक और गिलास मेज पर आ गया। अनिल ने चौंककर कहा, "अरे....यह कौन है?"

धर्मचन्द और फकीरचन्द इधर-उधर हट गए। उनके बीच गिलास वाला हाथ बढ़ाए राजा खड़ा था। राजन ने चौंक कर कहा, "अरे राजा.....तू।"

"अंकल!" यह स्वादिष्ट शर्बत अकेले ही अकेले पी रहे हैं....हम पी पिएंगे...."

''शर्वत....'' अनिल ने ठहाका लगाया। दूसरों के साथ राजन भी हंसने लगा। इसी समय पीछे से राधा ने राजा को कंधे से पकड़कर खींच लिया। राजा मचलकर बोला, ''मैं भी पियूंगा शर्बत....अभी.... मैं भी पियूंगा.....''

राधा खींचती हुई राजा को बाहर ले गई। क्रोध से उसकी आंखें लाल हो रही थीं। राजा लगातार मचले जा रहा था। राधा उसे खींचती हुई मोहन के कमरे में ले गई और जोर से उसे मोहन की ओर धकेल दिया। मोहन घबरा कर राजा को संभालता हुआ आश्चर्य से बोला, "अरे....अरे.....क्या कर रही हो यह?"

"शर्बत मांग रहा है....तो यह भी गुस्से की बात है कोई....सैकड़ों कोका-कोला की बोतलें भरी पड़ी हैं अतिथियों के लिए....एक दे दो..."

"कोका-कोला भी कोई शर्बत है....." राधा विषैले ढंग से मुस्कराई, "आपका लाड़ला वह शर्बत मांग रहा है जो आपके भाई साहब अपने मित्रों के साथ पी रहे हैं...."

"क्या?" मोहन ने आश्चर्य से घबराकर पूछा, "राजन घर में शराब पी रहा है?"

"दूसरी बोतल खोली गई है मेरे सामने....." राधा ने घृणा प्रकट करते हुए कहा, "दोस्तों की पूरी सेना है राजकुमार जी के साथ....उन्हें डर ही किसी बात का है? आज दोस्तों की आवभगत के लिए लाई गई है, कल घर में अपने पीने के लिए लाकर रखी जाएगी। आज बच्चा मांग कर पी रहा है, कल चुरा कर और छिपकर पिएगा.....हानि ही क्या है इसमें....?"

मोहन कुछ न बोला। उसकी भवें सिकुड़ गई थीं....माथे पर सलवटों का जाल-सा बिछ गया था। वह राधा और राजा को वहीं छोड़कर कमरे से निकल गया। अभी वह राजन के कमरे की ओर बढ़ ही रहा था कि राजन की मित्र-मण्डली में से उसे किसी की आवाज सुनाई दी, "इसके गुण धीरे-धीरे खुलते हैं, मेरे लाल! बकरी को एक घूंट पिला दो और उसे शेर के सम्मुख खड़ा कर दो..."

इस वाक्य पर कमरे में कई मिले-जुले ठहाके गूंजे। मोहन ठिठककर रुक गया। फिर कुछ सोचकर वह हॉल की ओर पलट गया। हॉल में सारे अतिथि इकट्ठे हो चुके थे। सामने ही उसे संध्या दिखाई दी जो अपने सबसे सुन्दर वस्त्रों में सुसज्जित थी। उसके होंठों पर एक जगमगाती हुई सी मुस्कान नाच रही थी। वह नौकर से पूछ रही थी, "राजन बाबू कहां हैं....शामू?"

"भीतर हैं....अपने मित्रों के संग..." शामू उत्तर देकर मोहन के पास से गुजरा। मोहन ने उसे रोककर कहा, "शामू....राजन से कहना....पार्टी आरम्भ होने वाली है...सारे अतिथि आ गए हैं।"

शामू सिर हिलाकर भीतर चला गया। मोहन ने जेब से सिगार निकालकर दियासलाई जलाई। इसी समय उसकी दृष्टि संध्या से मिली। संध्या हड़बड़ाकर इधर-उधर देखने लगी....फिर एक लड़की की ओर बढ़ गई। मोहन ने माचिस से तीली निकालकर दांतों में दबा ली और सिगार को माचिस पर रगड़ने लगा। फिर चौंककर उसने सिगार को देखा और तीली की दांतों में से हटाकर सिगार को होंठों में दबा लिया और दूसरी तीली निकालकर सिगार सुलगा लिया। उसने पहला ही कश खींचा था कि राजन के मित्र ठहाके लगाकर हॉल की ओर आने लगे। मोहन चुपचाप वहीं खड़ा सिगार के कश लेता रहा। वे लोग मोहन की ओर देखे बिना लड़खड़ाते हुए हॉल में पहुंच गए। राजन सबसे पीछे रह गया। उसने मोहन की ओर देखा और मुस्कराकर बोला, "अरे भैया! आप अभी तक यहीं खड़े हैं....."

"तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था...." मोहन मुस्कराया।

फिर राजन के साथ चलता हुआ वह हॉल में आ गया। संध्या राजन को देखकर तेजी से उसकी ओर बढ़ती हुई बोली, "हैलो राजन.....कहां थे तुम? मैं कितनी देर से यहां बोर हो रही हूं...."

"अब बोर नहीं होगी...." राजन ने मुस्कराकर संध्या का हाथ अपने हाथ में थाम लिया।

सब लोग एक बड़ी-सी मेज के गिर्द खड़े थे जिस पर खाने-पीने का सामान रखा था। राजन ने आपस में बातें करते हुए अतिथियों को सम्बोधित करने के लिए जोर से मेज को थपथपाया और फिर लड़खड़ा कर संभलते हुए बोला, "लेडीज एन्ड जैंटलमैन....आप लोग शायद जानते न हों, यह पार्टी दोहरी खुशी में दी जा रही है....पहली खुशी तो है मेरी परीक्षा में सफलता की और दूसरी खुशी....मेरे जीवन के नये मोड़ की....जीवन में एक नवीनता की.....और यह नवीनता क्या है....यह आपको मेरे भैया बताएंगे.....क्योंकि उनके सामने बोलते हुए मुझे शर्म आती है...."

राजन ने ठहाका लगाया और अतिथियों में से कुछ ने अनमने मन से उसका साथ दिया। कुछ लोग आश्चर्य से राजन और उसके साथियों को देखने लगे। अनिल के पास खड़े हुए एक अतिथि ने मदिरा की दुर्गंध से बचने के लिए नाक पर रूमाल रख लिया था। राजन मोहन की ओर मुड़ा और जेब से एक डिबिया निकालकर उसमें से अंगूठी निकाली, फिर डिबिया को एक ओर फेंकते हुए मोहन की ओर झुक कर उसके कान में धीरे से बोला, "यह अंगूठी है भैया...."

"मैं नशे में नहीं हूं..." मोहन मुस्कराया, "मुझे दिखाई दे रही है...."

"जानते हैं किसलिए लाया हूं यह अंगूठी...."

"जानता हूं...." मोहन की मुस्कराहट और गहरी हो गई, "संध्या के लिए...."

"आप तो बहुत समझदार हैं भैया! आप स्वयं मेरी और संध्या की सगाई की घोषणा कर दें...."

मोहन ने मुस्कराकर संध्या की ओर देखा.....संध्या ने टाई-पिन निकाल लिया था। उसके होंठों पर एक विजयी मुस्कराहट थी। मोहन ने अंगूठी राजन के हाथ से ले ली और मुस्कराता हुआ अतिथियों की ओर देखकर बोला, "मान्यवर अतिथियों! आज की पार्टी किस उपलक्ष्य में दी जा रही है, यह आप सब राजन ने सुन चुके हैं....राजन ने इसी अवसर पर अपनी खुशियों को दोहरा करने की घोषणा की है....एक बड़े भाई के नाते उसने यह काम मुझे सौंपा है....यह मेरा कर्तव्य है कि राजन की दूसरी खुशी की घोषणा मैं करूं.....क्योंकि राजन मेरा छोटा भाई है....और मैं यह घोषणा करते हुए बड़ी प्रसनन्ता अनुभव करता हूं कि राजन की सगाई....सेठ घनश्यामदास की इकलौती बेटी संध्या से.....नहीं हो रही...."

"भैया....!" अचानक राजन इतनी जोर से बोला कि पीछे खड़े कई अतिथि घबराकर उछल पड़े।

संध्या का चेहरा क्रोध और अपमान से लाल हो गया था....किन्तु मोहन....! उसके चेहरे पर कोई घबराहट अथवा चिन्ता के चिन्ह नहीं थे.....उसने बड़ी शान्ति से राजन की ओर देखा और गम्भीरता से बोला, "चिल्लाओ मत....यह भले मानसों का घर है.....यहां बहुत सारे शिष्ट अतिथि भी उपस्थित हैं।"

राजन का मस्तिष्क अत्यधिक क्रोध से भिन्ना गया था। वह बड़ी कड़ी और कठोर दृष्टि से मोहन को घूर रहा था....उसके होंठ बड़ी सख्ती से भिंचे हुए, नथुने घृणा और क्रोध की अधिकता से फूले हुए थे....उसे ऐसे अनुभव हो रहा था जैसे उसका प्यार करने वाला भाई किसी राक्षस के रूप में उसके सामने आ गया हो। उसने होंठ भींचकर कहा, "आखिर क्यों नहीं हो रही मेरी सगाई संध्या के साथ?"

"इसलिए कि यह सम्बन्ध मुझे पसन्द नहीं...." मोहन ने उसी शान्त मुद्रा में सिगार का एक कश लेकर उत्तर दिया।

"संध्या से ब्याह मैं करूंगा या आप?"

"ब्याह मेरे छोर्ट भाई का है...."

"मैं पूछता हूं संध्या में क्या बुराई है? वह ऊंचे परिवार की नहीं है? शिक्षित नहीं है? सुन्दर नहीं है.....शिष्ट नहीं है?"

"यह सब है....किन्तु, केवल शिक्षा सुन्दरता और उच्च परिवार.....एक कुलीन बहू और मान-मर्यादा रखने वाली बहू की आवश्यकताओं को पूरा नहीं करते..."

"बहुत हो गया राजन बाबू....!" संध्या ने बीच में तड़पकर कहा, "क्या आपने मुझे अतिथियों के सामने अपमानित करने के लिए बुलाया था...? मैं जा रही हूं।"

"ठहरो.....संध्या!" राजन ने संध्या की बांह थाम ली....फिर मोहन की ओर मुड़कर उनकी आंखों में झांककर बोला–

"क्या आप बता सकते हैं कि मेरे विवाह से आप इतना घबरा क्यों रहे हैं?"

"बहुत अच्छे...." मोहन उसी मुद्रा में बोला, "वास्तव में शराब मनुष्य को बहादुर बना देती है....खैर... मैं तुम्हें इंजीनियरिंग की शिक्षा के लिए विलायत भेजना चाहता हूं ताकि वापस लौटकर तुम मेरी ही मिल में दो-तीन हजार रुपये पा सकोगे.....और मुझे बाहर से किसी इंजीनियर को नियुक्त न करना पड़े।"

"या इसलिए कि मेरी विलायत में शिक्षा और निवास के बीच आप ही सारी संपत्ति के मालिक बने रहें....आप जानते हैं कि ब्याह के बाद मैं आपके बहुत से बंधनों से स्वतंत्र हो जाऊंगा...."

"इससे मुझ पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?"

"आप पर इसका प्रभाव अवश्य ही पड़ेगा....आपके हाथ से आधा कारोबार निकल जाएगा....आधी सम्पत्ति निकल जाएगी....फिर आप सुगमता से डैडी की छोड़ी हुई पूरी धन-संपत्ति को हजम न कर सकोगे....पर मैं ऐसा न होने दूंगा....आपकी चाल अब धीरे-धीरे मेरी समझ में आ रही है....आपके लाड़-प्यार का कारण भी खुलकर सामने आता जा रहा है....साथ ही आपको यह भी अनुभव होने लगा है कि मैं पहले के समान अबोध नहीं रहा....अपना

अधिकार पहचानने लगा हूं....इसीलिए आपका व्यवहार बदलना चाहता हूं...."

"मैंने अनुभव कर लिया था...." मोहन ने उसी मुस्कराहट से सिगार का कश लेकर कहा, "कि अब तुम आवश्यकता से बढ़कर समझदार होते जा रहे हो..."

"और अब मैं आंखें बन्द करके कुएं में छलांग लगाने के लिए तैयार नहीं हूं...."

"कोई समझदार व्यक्ति आंखें बन्द करके कुएं में छलांग नहीं लगाता....समझदार तो आंखें खोलकर ही कुएं में छलांग लगाते हैं...."

"मैं वयस्क हो चुका हूं और स्वयं अपनी इच्छाओं का स्वामी हूं....आज मैं अपने भाग के कारोबार और धन-सम्पत्ति का बंटवारा चाहता हूं...."

हॉल में धीमे स्वरों में खुसर-फुसर होने लगी....राधा आश्चर्य से आंखें फाड़े द्वार से टेक लगाकर खड़ी हो गई....शामू की आंखें भी फैली रह गईं। संध्या ने विजयी मुस्कराहट के साथ मोहन को देखा और अनिल, धर्मचन्द, फकीरचन्द तथा कुमुद का नशा और गहरा हो गया....किन्तु मोहन के चेहरे पर तनिक भी परिवर्तन नहीं था, कोई घबराहट और चिन्ता नहीं थी....उसने बड़े सन्तरे की एक फांक मुंह में डाली और फिर चुपचाप सिगार पीने लगा। राजन ने घूर कर कहा, "सुन रहे हैं आप! मैं क्या कह रहा हूं..."

"सुन रहा हूं...." मोहन सिगार का धुआं छोड़ते हुए स्थिर भाव से बोला, "कुछ समय पहले ही इस तूफान की तीव्रता को अनुभव कर रहा था और दो-तीन दिन से मुझे विश्वास हो गया था कि यह प्रचंड तूफान अवश्य ही आएगा, आएगा और तुम्हारे शरीर से वस्त्र उतार कर तुम्हें नग्न छोड़ जाएगा....और तुम पलक झपकते ही कौड़ी-कौड़ी के अधीन हो जाओगे।"

"तुम्हें....यह साहस....!"

"शिष्टता से बात करो...." मोहन आंखें निकालकर बोला, "अब तुम ठाकुर मोहनकुमार के छोटे भाई नहीं हो....तुम एक कंगाल हो और सेठ ठाकुर मोहनकुमार के सामने खड़े होकर बातचीत कर रहे हो। हमने तुम्हें डैडी के स्वर्गवास होने के बाद अपने भाई के समान ही नहीं बल्कि बेटे की भांति तुम्हारा पालन-पोषण किया है....तुम्हारी शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया है....किसी बात पर तुम्हारा मन मैला नहीं होने दिया....तुम्हारी हर इच्छा, प्रत्येक हठ को पूरा किया है....आधी-आधी रात तुमने हजारों रुपयों की मांग की और हमने कभी यह भी नहीं पूछा कि तुम्हें इतने रुपये किसलिए चाहिए....तुमने क्लबों, जुए और शराब में हमारा धन पानी के समान बहाया....हमने कभी तुम्हारा हाथ रोकने का प्रयत्न नहीं किया ताकि तुम्हारे मन को कष्ट न पहुंचे....हमने चाहा कि तुम्हें विदेश भेजकर इंजीनियरिंग की उच्च शिक्षा दिलाएं ताकि द्वार-द्वार भटकने के स्थान पर तुम हमारी ही फैक्टरी में अच्छे वेतन पर नियुक्त हो सको और हमारे संरक्षण में रहो....और तुम हमारे उपकार का बदला यह चुका रहे हो कि आज हमीं से आंखें मिलाकर इस उद्दण्डता से बात कर रहे हो...."

"नि:सन्देह....आंखें मिलाकर मैं समान रूप से आप से बात कर रहा हूं" राजन विषैली मुद्रा

में बोला, "क्योंकि जब तक मैं आपको अपना बड़ा भाई....अपने पिताजी के स्थान पर समझता था, मेरे मन में आपके लिए सम्मान था, स्नेह था, क्योंकि उस समय मैं आपके मन के कूटभावों को नहीं समझता था.....मुझे यह ज्ञान नहीं था कि आप मुझे एक मधुर विष पिलाकर सदा के लिए अपने अधीन रखना चाहते हैं....किन्तु; जब धीरे-धीरे मेरी आंखें खुलने लगीं....आपके मधुर विष का प्रभाव स्वयं ही घटने लगा....आपका व्यक्तित्व, आपकी भावनाएं सब मेरी समझ में आती गईं....आज आप खुलकर स्पष्ट रूप से मेरी आंखों के सामने आ गए हैं....आप मुझे विदेश भेजकर इंजीनियर बनाना चाहते हैं कि मैं वापस आकर इसी प्रकार आपके अधीन रहूं...दो ढाई हजार रुपये मासिक की नौकरी देकर आप मुझे अपना दास बनाएं रखें। मैं कोई आपके टुकड़ों पर पड़ा हुआ भिखमंगा नहीं हूं....मैं अपने स्वर्गीय पिता की सम्पत्ति में आधे का अधिकारी हूं....अब मैं अबोध और अल्प आयु बालक नहीं हूं....अपने ढंग से, अपनी इच्छा-अनुसार जीवन व्यतीत करने का साहस रखता हूं....और आज मैं अपना अधिकार प्राप्त करके ही यहां से टलूंगा...."

"अवश्य मिलेगा...." मोहन विषैली मुस्कराहट के साथ बोला, "तुम्हें, तुम्हारा अधिकार अवश्य मिलेगा...."

फिर मोहन ने अतिथियों में बैठे एक बूढ़े सज्जन की ओर देखा और उधर संकेत करके बोला, "यह है डैडी के समय से हमारे पुराने सालिसिटर.....हमें न्याय परामर्श देने वाले, खन्ना साहब....तुम इनसे अपना अधिकार मांग सकते हो, क्योंकि डैडी ने मरने से कुछ ही समय पूर्व अपना वसीयतनामा तैयार किया था और खन्ना साहब की उपस्थिति में उस पर हस्ताक्षर किए थे....स्वयं खन्ना साहब के हस्ताक्षर साक्षी के रूप में उस वसीयतनामे पर हैं...."

खन्ना साहब अतिथियों की भीड़ में से निकलकर आगे आ गए और राजन की ओर देखकर बोले, "मुझे खेद है राजन! आज मुझे यह समय देखना पड़ रहा है;...मैं तुम्हारे डैडी के समय से ही तुम लोगों का सालिसिटर हूं....तुम्हारे स्वर्गवासी डैडी ने मेरे सामने ही वसीयत की थी....वसीयत के अनुसार तुम्हारे डैडी ने तुम्हारे बड़े भाई मोहन को ही एकमात्र अपनी पूरी सम्पत्ति का मालिक निश्चित किया था।"

"है...." राजन के मन को धक्का-सा लगा।

संध्या आंखें फाड़-फाड़ कर खन्ना साहब की ओर देखती रह गई। अतिथियों में बातें होने लगीं। मोहन के होंठों पर एक सन्तोषजनक मुस्कराहट फैल गई। खन्ना साहब ने बात चालू रखी, "तुम्हारे डैडी की वसीयत के अनुसार तुम्हारे पिता की हर चीज का अधिकारी न्याय द्वारा मोहन ही होता है....इसी वसीयत के अनुसार तुम्हारे पालन-पोषण और देख-रेख का उत्तरदायित्व मोहन पर है....जब तक तुम उससे मिलकर रहते हो तब तक वह तुम्हारे निजी व्यय के लिए तुम्हें एक हजार से तीन हजार रुपये मासिक तक देने का पाबन्द था.....किन्तु उसी समय तक जब तक तुम उसके संरक्षण में इसी कोठी में उसके साथ रहो और तुम दोनों में किसी प्रकार की अनबन न हो.....मोहन ने झगड़े को टालने का बहुत प्रयत्न किया था....वह एक समय से तुम्हारे तेवर देख रहा था। उसे भय था कि तुम आज के समारोह में अवश्य ही कोई झगड़ा खड़ा कर

दोगे....इसलिए उसने मुझसे कह दिया था कि मैं वसीयतनामा साथ लेता आऊं....वसीयतनामा मेरे पास ही है। तुम चाहो तो यहां किसी भी व्यक्ति को दिखा कर अपना सन्तोष कर सकते हो....चाहो तो किसी समय कल किसी वकील को लाकर जांच करा सकते हो।"

"मैं नहीं जानता कि वह ऐसा क्यों कर गए...." खन्ना साहब ने ठंडी सांस लेकर कहा, "किन्तु यह एक स्पष्ट बात है कि तुम्हारा उनकी सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं....जुबान झूठी हो सकती है किन्तु, यह उनका अपना लिखित वसीयतनामा झूठा नहीं हो सकता....हो सकता है इस वसीयत में उनका कोई काम्लेक्स काम कर रहा हो, किसी विशेष घटना या ऐसी परिस्थिति का परिणाम हो जो हम लोगों के ज्ञान से बाहर हो...."

राजन ने वसीयतनामा खन्ना साहब के हाथ से लेना चाहा, किन्तु खन्ना साहब ने हाथ खींच लिया और बोले, "नहीं...यह वसीयतनामा एक अमानत है...मैं इसे इस प्रकार तुम्हारे हाथ में नहीं दे सकता...हां, यदि तुम चाहो तो अपने किसी वकील को लेकर कल मेरे पास आ जाना...हां, इन उपस्थित सज्जनों में से यदि कोई इसे देखना चाहते हों तो देख सकते हैं..."

अतिथियों में से कुछ लोग आगे बढ़ आए और खन्ना साहब के हाथ से वसीयतनामा लेकर पढ़ने लगे। शेष लोग सन्नाटे में खड़े थे...संध्या आश्चर्य से आंखें फाड़े राजन की ओर देख रही थी...और राजन...उसकी तो दशा ऐसी थी मानो उसके तो पांव तले से धरती खिसक गई हो...वह निष्प्राप-सा खड़ा था...उसका चेहरा सफेद हो गया था और आंखों का प्रकाश जैसे लोप हो गया हो...आखिर वसीयतनामा देखने के बाद एक आदमी ने ठंडी सांस लेकर कहा–

"वसीयत तो वही है जो खन्ना साहब ने बताई है....नीचे आत्माराम जी के हस्ताक्षर भी हैं..."

राजन कुछ न बोला। उसकी आंखें अब भी आश्चर्य से फैली हुई थीं। वह धीरे-धीरे होंठों पर जबान फेरकर मुड़ा। दूसरे ही क्षण उसके मस्तिष्क को एक झटका-सा लगा। संध्या अब वहां नहीं थी। न जाने वह किस समय वहां से चली गई थी। अचानक अनिल, धर्मचन्द, फकीरचन्द और कुमुद मेज पर से हट कर राजन के पास आए और बोले, "आओ राजन! चलें..."

राजन ने पांव बढ़ाया ही था कि मोहन ने हाथ उठाकर कहा, "ठहरो...।"

राजन ठिठककर रुक गया। मोहन मुस्कराता हुआ उसके पास आया और बोला, "अभी ऐसी कुछ चीजें तुम्हारे पास हैं जो मेरी सम्पत्ति हैं आज से मैं एक कठोर, बुरा और स्वार्थी भाई कहलाऊंगा...फिर इस उपाधि की कोई श्रेणी कम क्यों रह जाए?"

राजन ने घृणा पूर्ण दृष्टि से मोहन की ओर देखा...फिर चारों ओर देखकर उसने जेबों में हाथ डाले...एक जेब से कार की चाबी निकाली, दूसरी जेब से नोटों का पर्स और तीसरी जेब से सोने का सिगरेट-केस। उसने घृणा से ये सब चीजें मोहन की ओर बढ़ा दीं। मोहन ने उन चीजों पर अपना अधिकार जमाते हुए मुस्करा कर कहा, "और ये कपड़े?...चलो मैं दया करके छोड़ देता हूं, क्यों कि तुम यहां से नंगे नहीं जा सकते...."

राजन की आंखों में घृणा ने प्रतिशोध का रूप धारण कर लिया...उसका मन तो चाहा कि वह

अपने पहने हुए वस्त्रों को फाड़ फेंके, किन्तु; विवश-सा वह इस अपमान को पी गया।

मित्रों को साथ लेकर वह तेजी से हॉल से बाहर निकल गया। उसके बाहर जाते ही मोहन ने बड़ी प्रसन्न मुद्रा में अतिथियों को सम्बोधित किया, "सज्जनो! आप किस प्रतीक्षा में हैं...खाना ठंडा हो रहा है। कृपया आरम्भ कीजिए...।"

द्वार से गुजरते हुए राधा ने राजन को देखा तो उसकी आंखों में अनायास आंसू उमड़ आए। राजा ने मां की साड़ी छूते हुए पूछा, "मम्मी, अंकल कहां जा रहे हैं?"

राधा ने कोई उत्तर न दिया। वह केवल भीगी आंखों से राजन को जाते देखती रही। मां से कोई उत्तर न पाकर राजा भागकर राजन के पैरों से लिपट गया और बोला, "अंकल...आप कहां जा रहे हैं अंकल! आप ही के पास होने पर तो यह समारोह हो रहा है...और आप ही जा रहे हैं..."

राजन ने झुककर राजा को देखा। उसके भोले-भाले चेहरे पर एक गहरी वेदना थी और आंखों में आंसू झलक रहे थे। राजन का मन भी भर आया। उसने राजा के सिर पर स्नेह से हाथ फेरा और धीरे-से दबी आवाज में बोला, "हां बेटे! मैं जा रहा हूं...ऐसी जगह जहां खून के दरिया को सुनहरी दीवारें विभक्त न कर सकें..."

"नहीं अंकल! मैं नहीं जाने दूंगा आपको...आप नहीं जाएंगे..."

राजा रोते हुए राजन की टांगों से लिपट गया। राजन ने बड़ी कठिनाई से उसे अलग किया। नीचे बैठकर उसे प्यार किया और फिर तेजी से उठकर द्वार की ओर बढ़ गया। राजा हाथ उठा-उठाकर चिल्लाता ही रहा, "अंकल...अंकल..."

राधा के चेहरे पर चिन्ता और बेचैनी की गहरी रेखाएं उभर आईं...उसने घबराकर बाहर द्वार की ओर देखा जहां से राजन अभी-अभी बाहर निकला था। मोहन इस समय मिठाई का एक टुकड़ा उठाकर मुंह में डाल रहा था। राधा ने पति के कंधे पर हाथ रखकर बड़े दुख से कहा, "देखिए तो...राजन सचमुच ही जा रहा है...भगवान के लिए उसे रोक लीजिए..."

"चुप...!" मोहन इतनी जोर से चिल्लाया कि राधा हड़बड़ाकर पीछे हट गई और डरी हुई दृष्टि से मोहन को देखने लगी।

यों गला फाड़कर चीखने से मोहन को खांसी आ गई और वह सीने पर हाथ रखकर बुरी तरह खांसने लगा।

* *

राजन ने अपने ध्यान में खोए जेब टटोली, फिर चौंक पड़ा और ठंडी सांस लेकर अनिल से बोला, "एक सिगरेट देना..."

अनिल ने जेब में हाथ डाला और कुमुद की ओर देखकर बोला, "पैकेट खुला हुआ नहीं है,

तुम जरा एक सिगरेट निकालो…"

कुमुद ने सिगरेट निकालकर राजन को दिया। राजन ने अनिल और कुमुद को ध्यान से देखा फिर सिगरेट सुलगाकर धुआं ऊपर छोड़ा…

"अब धुआं ही छोड़ते रहोगे या कुछ सोचोगे भी?"

"क्या सोचूं?" राजन कुछ खिन्न होकर बोला, "मेरे मस्तिष्क में तो बस एक ही बात बार-बार चक्कर लगा रही है, मेरे पास पिस्तौल होती तो इस स्वार्थी आदमी को गोली मार देता…"

"गोली उसे क्यों मारते…" कुमुद ने बुरा-सा मुंह बनाकर कहा, "गोली मारनी है तो अपने डैडी को मारो…"

"डैडी मर चुके हैं…किन्तु मैं तो अब भी नहीं सोच सकता कि वह मेरे साथ इतना बड़ा अन्याय करेंगे…"

"खूब!" अनिल व्यंग्यात्मक ढंग से बोला, "तुम अभी तक इसे अपने डैडी का अन्याय ही समझ रहे हो…"

"और क्या समझूं…?" राजन ने अनिल को घूरकर कहा।

"यार! हमने दुनिया देखी है…यह दुनिया एक बहुत बड़ा रंगमंच है, जहां भांति-भांति के नाटक होते रहते हैं…और जो लोग नाटक की कला में कुशल होते हैं वे किसी भी दृष्टि में अपनी इच्छानुसार जो मोड़ चाहें उत्पन्न कर सकते हैं…"

"क्या मतलब…?"

"अब मतलब भी समझाना पड़ेगा…" अनिल झल्लाकर बोला, "क्या तुमने शिक्षा झक मारने के लिए प्राप्त की है? अरे कभी भी पिता अपनी संतान से ऐसा अन्याय नहीं कर सकता है…जो वसीयत खन्ना साहब ने दिखाई है वह तुम्हारे डैडी की असली वसीयत नहीं हो सकती…वसीयत जाली भी बनाई जा सकती है…"

"क्या कहते हो?" राजन धीरे-से बोला, "इस पर डैडी के हस्ताक्षर हैं…"

"हस्ताक्षर क्या नकली नहीं हो सकते? मेरे पास लाओ…मैं उसकी वैसी ही नकल करके दिखा सकता हूं…"

"अरे हां…" फकीरचन्द उछलकर बोला, "यह तो मैंने सोचा ही नहीं था।"

"अब मुझे विश्वास है कि यह वसीयत जाली है…" धर्मचन्द संभलता हुआ आवेश में बोला, "और यदि तुम इसे स्वीकार करने से इन्कार कर दो तो न केवल न्यायालय से तुम्हें अपनी सम्पत्ति का आधा भाग मिल जाएगा बल्कि जाली वसीयत बनाने के अपराध में मोहन और खन्ना साहब को जेल की हवा खानी पड़ेगी…"

राजन की आंखें चमक उठीं…उसके नथुने फूल गए…मोहन को बन्दीगृह में देखने की

कल्पना से उसके प्रतिशोध की भावना को कुछ सन्तोष मिला। वह बड़बड़ाया, "मैं...मैं...उसे न्यायालय में चैलेंज करूंगा..."

"और हम सब लोग तुम्हारे साथ हैं..." अनिल सहानुभूति से राजन के कंधे पर हाथ रखते हुए बोला, "कोई चिन्ता न करो...तुम इस संसार में अकेले नहीं हो...मुझे विश्वास है कि तुम सफल होकर रहोगे...तुम्हारी सम्पत्ति, तुम्हारा कारोबार तुम्हें अवश्य मिलेगा...पच्चीस करोड़ थोड़े नहीं होते राजन! इससे एक पूरी रियासत खरीदी जा सकती है...अपनी कोठी, अपनी कारें...हम पग-पग पर तुम्हारे साथ होंगे..."

"मुझे अपना मैनेजर बना लेना...." कुमुद ने बड़े मूड़ में कहा, "मेरे बाबा मुझे सदा निखट्टू कहकर पुकारते हैं...मैं उन्हें बता दूंगा कि मैं निखट्टू नहीं हूं..."

"मुझे तो भाई केवल पच्चीस हजार रुपये उधार दे देना," फकीरचन्द ठंडी सांस लेकर बोला, "इस साले हर दिन के झगड़े से छुटकारा मिल जाएगा...मैं अपना कारोबार अलग करके बैठ जाऊंगा..."

"मेरा काम केवल दस हजार में चल जाएगा..." धर्मचन्द आगे खिसकता हुआ बोला, "एक वर्ष हो गया जब तुम्हारी भाभी के गहने, काम आरम्भ करने के लिए गिरवी रखे थे...आज तक नहीं छुड़ा सका...अब तुम्हारे द्वारा यह काम हो जाए तो जीवन-भर तुम्हारी भाभी तुम्हें आशीर्वाद देगी..."

"तुम लोग अभी से कल्पना की दुनिया में विचरने लगे हो..." अनिल बुरा-सा मुंह बनाकर बोला, "अरे राजन को मुकदमा जीतने तो दो...फिर जो कुछ उसका है वह सब हमारा ही है...हम कोई पराए थोड़े हैं...आओ...उठो...राजन! मैं अभी तुम्हें वकील चटर्जी के पास लिए चलता हूं...नगर का माना हुआ वकील है...इसके बाद हम लोग जरा बार में चलेंगे...सब नशा उखड़ गया है, इस बात से..."

सारी मित्र-मंडली उठ खड़ी हुई। राजन की आंखों में प्रतिशोध की भावना और घृणा की आग स्पष्ट झलक रही थी...उसके होंठों पर एक घृणामय मुस्कराहट फैल गई।

* *

वकील चटर्जी ने चौंककर कहा, "क्या कहा, वसीयत मिस्टर खन्ना ने तैयार की है?"

"जी हां!" अनिल ने हाथ मलते हुए कहा, "इसीलिए तो हम आपके पास आए हैं...इस नगर में आपके अतिरिक्त और कौन-सा वकील खन्ना साहब से टक्कर ले सकता है?"

"यह तो ठीक है मिस्टर अनिल..." चटर्जी ने कहा, "किन्तु, मेरे परामर्श की फीस पांच सौ रुपये है...पहले...फिर परामर्श..."

अनिल ने राजन की ओर देखा। राजन जेब टटोलने लगा। अनिल ने अपनी जेब में से सौ

रुपये का एक नोट निकाला और कुमुद इत्यादि की ओर देखकर बोला, "लाओ भई....पांच सौ रुपये पूरे करो....एक दोस्त का काम है.....मेरे पास केवल तीन सौ हैं, दूसरे दो दिन के खर्च के लिए रखे हैं...."

कुमुद, धर्मचन्द और फकीरचन्द ने अनमने मन से अपनी-अपनी जेबें टटोलीं और बड़ी कठिनाई से फीस के पांच सौ रुपये पूरे किए गए। मिस्टर चटर्जी ने पैसे गिने और बोले, "हां, अब विस्तार से पूरी बात बताइए...."

अनिल ने एक बार फिर वर्णन किया। चटर्जी ने आंख से चश्मा उतारकर पोंछते हुए कहा, "भई! देखिए.....हो सकता है आप लोग अपने स्थान पर ठीक सोचे रहे होंगे.....किन्तु अभी तक खन्ना साहब का पहला रिकार्ड बिल्कुल उजला है और मेरा विचार है कि वह इतनी बड़ी भूल करके अपने कैरियर को दागदार न बना सकेंगे.....मेरा परामर्श है कि जो दस-पन्द्रह हजार रुपये आप मुकदमेबाजी में लगाएंगे इससे कोई व्यापार आरम्भ कीजिए और संतोष से बैठ जाइए। व्यर्थ के मुकदमे की घुन निकाल दीजिए...."

"जी....!" अनिल ने आश्चर्य से कहा।

सभी दोस्तों ने एक-दूसरे की ओर देखा और फिर अनिल शुष्क स्वर में बोला, "यदि यही परामर्श देना था आपको तो हमारे पांच सौ रुपये क्यों आपने जेब में रख लिए...."

"वह तो परामर्श की फीस है जनाब!" चटर्जी....मुस्कराकर बोला, "चूंकि आपका केस था इसलिए मैं रात के ग्यारह बजे भी परामर्श देने के लिए तैयार हो गया वरना आठ बजे के बाद मेरे मुवक्किल द्वार से ही लौटा दिए जाते हैं...."

"किन्तु मिस्टर चटर्जी। मुझे विश्वास है कि मेरे डैडी मेरे प्रति इतना अन्याय नहीं कर सकते थे....मेरे भाई ने मुझसे धोखा किया है...."

"ठीक है....यदि आपको विश्वास है तो मैं क्या कह सकता हूं....मैं तो वकील हूं और वकील का काम केस लड़ना है....आप लोग कल किसी समय कोर्ट में आ जाइए....पांच हजार रुपये मेरी फीस के लेते आइए, केस फाइल कर दिया जाएगा...."

उन लोगों ने फिर एक-दूसरे की ओर देखा और चटर्जी ने उकताए हुए ढंग से घड़ी पर दृष्टि डालते हुए कहा, "मेरा विचार है आप रात में सोचकर किसी निर्णय पर पहुंच सकते हैं....मुझे कल के मुकदमे का अध्ययन करना है...."

"एक मिनट ठहरिए.....वकील साहब। हम लोग जरा सा आपस में परामर्श कर लें...." अनिल ने उठते हुए कहा।

राजन उठने लगा तो अनिल ने कहा, "तुम यहीं ठहरो राजन।"

राजन हक्का-बक्का इन लोगों को देखता रह गया। अनिल, धर्मचन्द, फकीरचन्द और कुमुद पर्दे की ओट में चले गए। राजन के कान उधर ही लगे हुए थे। उसके कानों में यह वार्तालाप पड़ा।

"अब क्या विचार है यारो....।" अनिल ने कहा।

"तुम्हीं बताओ?" यह कुमुद की आवाज थी।

"विचार क्या है भाई।" धर्मचन्द बोला, "यदि राजन केस जीत गया तो समझ लो कि हम लोगों की पांचों उंगलियां घी में हैं...."

"इसलिए हम पांच हजार का प्रबन्ध कर दें...."

"बिल्कुल...."

"और यदि केस हार गया तो.....पांच सौ तो डूब ही गए हैं....यह पांच हजार भी डूबे ही समझो।"

"ओहो...." फकीरचन्द चिन्तामय स्वर में बोला, "इस विषय पर तो विचार ही नहीं किया था मैंने..."

"हमें हर पहलू पर विचार करना चाहिए....खन्ना साहब वास्तव में अपनी ईमानदारी के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं....यदि सच ही वसीयत जाली प्रमाणित न हुई तो सब कुछ चौपट हो जाएगा....मोहन से दुश्मनी अलग हो जाएगी....धनी आदमी है, व्यर्थ में किसी ढंग से हमसे बदला लेने पर उतर आया तो किससे प्रार्थना करते फिरेंगे?"

"यह भी ठीक है भाई! अपनी गांठ में इतने पैसे हैं नहीं कि इतना बड़ा जुआ खेला जाए...." फकीरचन्द ने अपना अन्तिम निर्णय दिया।

"फिर मेरे ही पास कोई फालतू थोड़े ही है..." कुमुद ने कहा।

राजन को ऐसे अनुभव हो रहा था जैसे उसका मस्तिष्क झाएं-झाएं कर रहा हो....उसकी आंखों के आगे अंधेरा सा छाने लगा, शरीर पसीने से भीग गया। धीरे-धीरे उसने आंखें खोलीं और घबराया हुआ शून्य में देखने लगा। फिर उसने अनिल, धर्मचन्द, फकीरचन्द और कुमुद को चटर्जी से बातें करते हुए देखा। अनिल कह रहा था–

"अच्छा वकील साहब! इस समय हम लोग चलते हैं....हम लोग कल सुबह तक किसी निर्णय पर पहुंचकर आपको सूचित करेंगे...."

"ठीक है...." चटर्जी ने कहा।

"आओ राजन! चलें...." अनिल ने राजन की ओर मुड़ते हुए कहा।

राजन चुपचाप उठकर उन लोगों के साथ बाहर निकल आया। अनिल ने अपनी कार के पास पहुंचकर घड़ी देखी और चौंकते हुए बोला, "अच्छा भई मैं तो चलता हूं....ग्यारह बज चुके हैं....मुझे याद ही नहीं रहा था आज मेरी सास का ऑपरेशन हुआ है....मेरी पत्नी अपनी मां के पास ही अस्पताल में होगी....उसे यहां से लेकर मुझे घर पहुंचना है।"

यह कहकर अनिल बिना किसी का उत्तर सुने ही गाड़ी की खिड़की खोलकर ड्राइविंग-सीट

पर बैठ गया। दूसरी ओर से खिड़की खोलकर धर्मचन्द उसके बराबर वाली सीट पर आ विराजा और बोला, "चलो यार! मुझे रास्ते में छोड़ते जाना....मेरा सिर पीड़ा से फटा जा रहा है।"

गाड़ी स्टार्ट हुई और तेजी से आगे बढ़ गई। राजन कुछ भी न बोला। कुछ क्षण बाद फकीरचन्द ने उकता कर कहा, "आखिर हम यहां कब तक खड़े रहेंगे?"

राजन ने चौंककर फकीरचन्द की ओर देखा किन्तु, कुछ बोला नहीं। फकीरचन्द ने एक लम्बी जम्हाई ली और बोला, "मेरा घर तो इस ओर है भई....अरे हां, तुम कहां जाओगे?"

"मैं...?" राजन धीरे से बड़बड़ाया, "हां, मैं कहां जाऊंगा? मैं कहां जाऊंगा?"

"मेरा विचार है आज की रात तुम कुमुद के यहां काट लो....कल फिर कहीं प्रबन्ध कर लेना....क्यों कुमुद...?"

''ईं....ह....हां....हां....क्या हानि है इसमें.....आज की रात मेरे यहां रहो....कल कहीं प्रबन्ध कर लेना।''

"तो फिर मैं चलता हूं..."

उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही फकीरचन्द तेजी से एक गुजरती हुई टैक्सी को रुकवा कर उसमें सवार हो गया। टैक्सी चल पड़ी और राजन टैक्सी को जाते देखता रह गया। कुमुद कुछ चिन्तित, कुछ उकताया हुआ-सा खड़ा था। उसने चोर-दृष्टि से राजन को देखा और बोला, "तो फिर चल रहे हो?"

"ई....हां, चल रहा हूं...." राजन बड़बड़ाया।

दोनों साथ-साथ चल पड़े। कुमुद कुछ इस प्रकार उदास, अनमना-सा उकताता हुआ धीरे-धीरे चल रहा था मानो किसी परिचित की अर्थी के संग विवशत: श्मशान-घाट की ओर चल रहा हो....और राजन कुछ इस दशा में चल रहा था मानो अपनी अर्थी स्वयं उठाए हो। उसका माथा सपाट था, होंठ बन्द थे और आंखें भावहीन, बस वह चुपचाप फैली हुई थीं....वह पलक भी नहीं झपक रहा था। कुछ दूर चलने के बाद कुमुद ने राजन को सिगरेट सुलगा कर दिया और कहा, "लो सिगरेट पियो....।"

"ऊ हूं...." राजन ने सिगरेट की ओर देखा और बोला, "मूड नहीं है...."

कुमुद ने सिगरेट अपने होंठों में दबा लिया और माचिस की तीली हवा में उछालता हुआ चिन्तित स्वर में बोला, "समझ में नहीं आता आखिर अब होगा क्या।"

राजन कुछ न बोला....चुपचाप चलता रहा। कुमुद ने फिर निस्तब्धता को तोड़ा, "तुमने भी कुछ सोचा इस विषय पर?"

"ऊं हूं...." राजन बहुत धीमे स्वर में बोला।

"क्या होगा?"

"कुछ नहीं होगा...." राजन बड़बड़ाया।

"मेरा भी यही विचार है...." कुमुद शीघ्रता में बोला "अनिल, धर्मचन्द और फकीरचन्द भी यही कह रहे थे....यदि वसीयत सच्ची निकल आई तो व्यर्थ ही समय और धन नष्ट होगा....बेहतर यह होगा कि तुम हालात के साथ समझौता कर लो...."

"हूं...." राजन चलते हुए अपने ध्यान में खोया बोला।

"तुम्हें डिग्री मिल ही गई है....इसके द्वारा तुम्हें कहीं कोई उचित नौकरी अवश्य मिल जाएगी और रोटी का सहारा हो जाएगा....आजकल आदमी को दो जून रोटी और तन ढांपने को कपड़ा मिल जाए तो भगवान की बड़ी कृपा है.....मैं भी तुम्हारे लिए कोई काम ढूंढूंगा.....तुम स्वयं भी प्रयत्न करना...."

"हूं...." राजन उसी मुद्रा में बोला।

चलते चलते कुमुद अपने फ्लैट पर पहुंच गया....फिर घंटी बजाकर उसने द्वार खुलवाया और राजन को वहीं छोड़कर स्वयं भीतर चला गया। राजन चुपचाप वहीं खड़ा रहा....उसकी आंखें वैसे ही शून्य में घूर रही थीं....। लगभग पन्द्रह मिनट उसे वहीं खड़े रहना पड़ा....फिर कुमुद बाहर निकला और हाथ मलता हुआ बोला, "क्षमा करना मैं जरा बाथ-रूम में चला गया था।"

"हूं...." राजन बहुत धीमे स्वर में बोला।

मैंने तुम्हारी भाभी से कहा था कि राजन यहीं सोएगा...

"हूं...."

"किन्तु, भई क्या बताऊं....बड़ी विचित्र नारी है...इतनी डरपोक नारी तो मैंने आज तक नहीं देखी....वह कहती है कि यदि कोई पराया पुरुष यों हार में रात को रहेगा तो अड़ोस-पड़ोस वाले क्या सोचेंगे....तुम तो जानते हो कि घर में हम दोनों पति पत्नी के अतिरिक्त कोई तीसरा व्यक्ति नहीं रहता...."

"हूं...." राजन ने बिना कोई चिन्ता प्रकट किए उसी सन्तोष में उत्तर दिया।

"यार! बुरा न मानना, कुछ विचित्र सी स्थिति बन गई है..."

"चुप रहो..." अचानक राजन इतनी तेजी से चिल्लाया कि कुमुद अनायास उछल पड़ा।

फिर घबरा कर वह अपने फ्लैट में घुस गया और उसने भीतर से द्वार बन्द कर लिया। राजन चीख-चीख कर कहता रहा, "तुम सब नीच हो, स्वार्थी हो, कृतघ्न हो..."

"यार! क्या मूर्खता है...." कुमुद ने द्वार में से गर्दन निकालते हुए कहा, पड़ोस वाले क्या कहेंगे?

"चुप रह...." राजन फिर दहाड़ा।

कुमुद ने झट द्वार बन्द कर लिया...राजन क्रोधित दृष्टि से द्वार को यों देखता रहा जैसे अब किसी ने सिर निकालकर बाहर झांका तो वह उसका सिर फोड़ देगा....किन्तु, अब कुमुद ने द्वार नहीं खोला.....हां अब दूसरे फ्लैटों के द्वार बारी-बारी खुलने लगे थे....और आवाजें आ रही थीं।

"कौन चीख रहा है?"

"पागल मालूम होता है?"

"शराब पीकर आया है...."

"यह तो कुमुद के घर के सामने खड़ा है...."

"नहीं भई। कुमुद साहब तो बहुत भले आदमी हैं..."

"तब तो कोई शराबी ही है..."

राजन ने चारों ओर दृष्टि घुमा कर अपने-अपने द्वारों में से झांकती हुई आंखों को देखा....जिधर भी वह देखता वे आंखें डर कर पीछे हट जातीं और खट से द्वार बन्द हो जाता। आखिर जब एक द्वार पर उसकी दृष्टि टिकी तो एक अधेड़ आयु के व्यक्ति ने डरते-डरते कहा, "आगे जाओ भाई। क्यों शरीफ आदमियों की नींद नष्ट करते हो..."

"खामोश..." राजन पागलों के समान चीखता हुआ उस द्वार की ओर झपटा।

अधेड़ आयु के व्यक्ति ने झट द्वार बन्द कर लिया....और राजन मुट्ठियां भींचकर बड़बड़ाया, "यह कोई शरीफ नहीं....सभी कमीने हैं....नीच...."

इसी प्रकार बड़बड़ाता हुआ वह धीरे-धीरे एक ओर चलने लगा...."कोई शरीफ नहीं है....सभी कमीन हैं....नीच....।"

पास ही कोई कुत्ता भौंककर राजन की आवाज में आवाज मिलाने लगा...राजन ने मुट्ठियां भींचकर कुत्ते की ओर देखा और फिर एक पत्थर उठाकर उसने कुत्ते की ओर फेंका-कुत्ता चाओं-चाओं करता हुआ तेजी से भागा....राजन पत्थर उठा-उठाकर मारता हुआ कुत्ते के पीछे दौड़ता चला गया।

* *

"क्या बात है?" संध्या ने नौकर की ओर देखा।

"बेटा! राजन बाबू आपसे मिलना चाहते है...."

"राजन!" अनिल हड़बड़ा कर खड़ा हो गया।

"अरे-अरे...।" संध्या उसकी बांह पकड़ कर बिठाती हुई बोली, ''बैठो तुम्हें क्या हो गया है?''

"अरे कहीं वह मुझे यहां न देख ले..." अनिल घबराया।

"देख लेगा तो क्या हुआ!" संध्या ने मुस्कराकर कहा।

"पागल हो रहा है वह..." अनिल ने चिन्तामय स्वर में कहा, "रात कुमुद को ही मारने दौड़ पड़ा था...बड़ी कठिनाई से उस बेचारे ने अपने प्राण बचाए....पड़ोसियों से अलग बहाना करना पड़ा कि एक दोस्त था जो शराब पीकर आ गया। कुछ रुपये ऋण मांग रहा है.....तुम्हारे साथ मुझे देखकर और भड़क उठेगा...."

"क्यों भड़क उठेगा....क्यों भड़क उठेगा...." संध्या ने विषैली मुस्कराहट से कहा, "क्या मैं कोई उसकी खरीदी हुई दासी हूं?"

"तुम उससे प्रेम करती थीं ना..." अनिल मुस्कराया।

"प्रेम हूं" संध्या ने बुरा सा मुंह बनाकर कहा, "प्रेम तो एक हल्के नाजुक कूंजे से भी अधिक

कोमल होता है, अनिल बाबू! मैं जीवन भर उस अपमान को नहीं भूल सकती जो भरी सभा में मेरे प्रति किया गया है....उसके भाई ने मुझे क्या समझ रखा है.....क्या मैं किसी भिखारी की बेटी हूं....मेरा बाप भी लखपति था....इन दिनों कुछ उलझनों की फेरी में आ गए हैं हम लोग तो क्या हुआ....सेठ शंभूनाथ तो इतना पीछे पड़ा है कि डैडी उससे दस-बीस हजार रुपये लेकर कारोबार की साख संभाल लें.."

किन्तु डैडी ही उसके उपकार अधीन नहीं होता चाहते....क्योंकि सेठ शंभूनाथ का इंगलैंड-रिटर्न्ड अर्धपागल बेटा मुझे पसंद नहीं। डैडी मेरा ब्याह मेरी इच्छानुसार करना चाहते हैं...अब क्या इतने बड़े आदमी की बेटी के ससुराल वाले इतने गिरे-पड़े होंगे कि दस बीस हजार से हमारी सहायता करके कारोबार की गिरती हुई साख को न संभाल सकें...

"कदापि नहीं...." अनिल ने मुस्कराकर संध्या का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा, "आखिर कारोबार होगा किसका? तुम भी तो अपने डैडी की इकलौती बेटी हो।"

"इकलौती बेटी....डैडी की सम्पत्ति की एकमात्र मालिक.... संध्या ने मुस्कराकर टाई-पिन अनिल की टाई में टांकते हुए कहा।"

"राजन!" अनिल अचानक उछलते हुए चिल्लाया।

संध्या ने भी चौंककर द्वार की ओर देखा। राजन मुट्ठियां भींचे, नथुने फुलाए हुए खूंखार दृष्टि से उन दोनों को घूर रहा था। उसके बाल बिखरे हुए थे, दाढ़ी बढ़ गई थी। और पतलून मसली हुई थी। उसकी आंखों से एक जुनून और पागलपन झांक रहा था। संध्या ने क्रोध-भरे स्वर में कहा–

"यह क्या मूर्खता है? बिना अनुमति भीतर कैसे चले आए?"

राजन कुछ न बोला। वह संध्या और अनिल को घूरे जा रहा था। उसकी आंखें आग उगल रही थीं। संध्या ने झुंझलाकर कहा, "सुना नहीं तुमने....यहां क्या लेने आए हो? निकल जाओ यहां से...."

राजन कुछ न बोला....वह मुट्ठियां भींचे हुए उसी क्रोधित मुद्रा में संध्या की ओर बढ़ता रहा जैसे उसकी गर्दन दबोच डालेगा। संध्या घबराकर पीछे हटती हुइ बोली, "होश में आओ....राजन कहीं तुम पागल तो नहीं हो गए?"

"होश में आ गया हूं..." राजन दांतों पर दांत जमाकर बोला, "पागलपन की सीमा से निकल आया हूं...तुम सब कमीने हो कृतघ्न हो।"

"राजन....!" संध्या क्रोध से चीख पड़ी।

उसी समय राजन ने झपट कर संध्या की गर्दन दबोच ली और हांफते हुए फूली सांस से बोला, ''जीवित नहीं छोड़ूंगा तुझे.....कमीनी...जीवित नहीं छोड़ूंगा।''

संध्या की चीखे निकलने लगीं। अनिल ने झपटकर राजन से संध्या को छुड़ाने का प्रयत्न किया....संध्या बिलबिला कर पूरी शक्ति लगाकर राजन की पकड़ से निकल गई और चीख-

चीखकर नौकरों को पुकारने लगी। राजन ने फिर संध्या की ओर झपटने का प्रयत्न कियां। अनिल ने जोर से राजन की ठोड़ी पर घूंसा मारा और राजन उछलकर द्वार के पास जा गिरा। इतने में चारों ओर से नौकरों ने आकर उसे पकड़ लिया। संध्या कंकपाती हुई चीख रही थी, "निकाल दो इसे....धक्के मारकर निकाल दो....यह होश में नहीं है....पागल हो गया है।"

राजन चीखता रहा और नौकरों ने उसे धक्के मारकर कोठी से बाहर निकाल दिया। राजन सड़क पर गिर पड़ा और कोठी फाटक बन्द हो गया। राजन ने होंठ और माथे का लहू पोंछा और कोठी के फाटक को जोर-जोर से हिलाते हुए चिल्लाया–

"तुम सब कमीने हो....कमीने"

* *

सुषमा ने पाठ दोहराते हुए एक लम्बी जम्हाई ली और बोली–"कुछ समझ में आया....बेबी!"

सुषमा ने यह कहकर दृष्टि उठाई तो बेबी मेज पर रखी हुई कापी पर सिर रखे गहरी सांसें ले रही थी।

"अरे....यह तो सो गई....बेबी....ऐ बेबी...."

सुषमा से चौंककर पलटते हुए देखा और फिर मुस्कराकर उठती हुई बोली, "मैंने सोचा था कल सप्लिमेंट्री का पहला पेपर है आज जरा पाठ पूरे करा दूं किन्तु, यह तो एक पाठ भी पूरा न कर सकी।"

"ग्यारह बजने वाले हैं ना...." शंकर ने मुस्कराकर कहा।

"ग्यारह...." सुषमा चौंककर उठती हुई बोली, "उफ! बहुत देर हो गई....भैया शायद आ गए होंगे....कमरे की चाबी मेरे पास है अच्छा मैं चलती हूं।"

फिर सुषमा ने उठते-उठते बेबी की ओर देखा.....उसके भोले-भाले चेहरे पर सोते में भी एक मुस्कराहट थी। सुषमा ने मुस्कराकर बेबी के बालों पर हाथ फेरा, फिर उसे गोद में उठाकर बिस्तर पर लिटा दिया और उसे चादर ओढ़ाते हुए बोली, "बहुत कमजोर हो गई है बेचारी....दोहरा परिश्रम करना पड़ता है ना....शंकरजी....! आप इसके स्वास्थ्य का ध्यान रखा करें...."

"स्वास्थ्य का ध्यान...." शंकर फीकी-सी मुस्कराहट के साथ बोला, "मैं तो बहुत ध्यान रखता हूं....घर में किस चीज की कमी है? हजारो रुपये महीने की आमदनी है और खाने वाले केवल दो ही है....किन्तु केवल खाने-पीने से ही स्वास्थ्य थोड़े बनता है सुषमा देवी।" बच्चों को उचित देखभाल की भी आवश्यकता होती है....आज पांच वर्ष हो गए इसकी मां को मरे हुए....जब यह केवल चार ही वर्ष की थी तब से सिर पर मां की छाया नहीं पड़ी। मुझे दिन भर काम पर गैरेज में रहना पड़ता है....घर पर नौकरानी ही होती है, न जाने कैसे खिलाती पिलाती

है....मुझे स्वयं निरन्तर यही चिन्ता रहती है, किन्तु समझ में नहीं आता क्या करूं?

शंकर सुषमा के मुंह की ओर देख रहा था। सुषमा ने सिर पर साड़ी का आंचल ठीक किया और बोली, "आप ठीक ही कहते हैं शंकरजी! मां के बिना बच्चों का जीवन ऐसे ही होता है जैसे तपती धूप में नन्हे कोमल पौधे...."

"किन्तु मैं इसकी मां को भगवान के घर से वापस नहीं ला सकता। स्वयं भी सोचता हूं कि बेबी को एक मां की छाया की आवश्यकता है, यदि ब्याह करूंगा भी तो ऐसी औरत से जो बेबी को प्यार करे!"

"यह भी आप ठीक कहते हैं...." सुषमा ने ठंडी सांस लेकर कहा, "यदि सौतेली मां से भी स्नेह न मिला तो बेचारी का जीवन नष्ट हो जाएगा...."

यह कहकर सुषमा दवात का ढक्कन बन्द करके द्वार की ओर बढ़ी। शंकर ने कहा, "जबसे तुमने बेबी को पढ़ाना आरम्भ किया है वह तुमसे हिलमिल गई है....दिन भर तुम्हारी ही बातें करती है...."

"बच्चे तो प्यार के ही भूखे होते हैं शंकरजी! मैं जब भी बेबी को देखती हूं मुझे अपना बचपन याद आ जाता है....यही विवशता और भोलापन होता है हर बे-मां के बच्चे के चेहरे पर..."

"यही तो मैं भी सोचता हूं....जितना बेबी तुम्हें चाहती है उतना ही तुम भी उसे प्यार करती हो....तुम मां की ममता का मूल्य जानती हो....तुम उसे भरपूर ममता दे सकती हो...."

"जी...." सुषमा ने चौंककर शंकर की ओर देखा।

"मेरा मतलब है....कल तुमने तनख्वाह मांगी थी....यह तुम्हारे पैसे रखे हैं..."

शंकर ने जेब में से दस-दस के पांच नोट निकालते हुए सुषमा की ओर बढ़ा दिए। सुषमा मुस्कराहट के साथ बोली, "कल शाम मैंने अपना वेतन मांगा था....आपने पचास रुपये दे दिए थे..."

"ओह....मुझे याद ही नहीं रहा....मैं जानता हूं तुम्हारे भैया की क्या आय है....किसी समय भी आवश्यकता पड़ सकती है....इन्हें अगले महीने की पेशगी समझकर रख लो...."

"धन्यवाद! शंकरजी! यदि पेशगी की आवश्यकता पड़ गई तो भैया कुछ अधिक समय तक टैक्सी चला लिया करेंगे।"

"फिर भी आवश्यकता तो किसी समय भी पड़ सकती है....अभी चार पांच दिन पहले की ही तो बात है तुम्हारे भैया की टैक्सी का एक्सिडेन्ट हो गया था.....ढाई तीन सौ रुपये मरम्मत में लग गए थे....रख लो समय पर काम आएंगे।"

सुषमा ध्यान से शंकर का चेहरा देखती रही....शंकर की आंखों का पीला प्रकाश धीरे-धीरे लाल रंग में परिवर्तित होता जा रहा था। उसने कुछ रुककर धीरे से कहा, "बहुत देर हो रही है

शंकरजी! भैया मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे....मैं जा रही हूं..."

सुषमा ने द्वार की ओर बढ़ने के लिए पहला पग उठाया ही था कि शंकर दोनों बांहें फैलाकर उसका रास्ता रोककर खड़ा हो गया। सुषमा ध्यानपूर्वक उसके चेहरे पर उत्पन्न भावों का निरीक्षण करती बड़बड़ाई "शंकरजी...."

"बहुत धैर्य कर चुका हूं सुषमा..." शंकर कंपकंपाती हुई आवाज में बोला, "कई दिनों से साहस बटोर रहा था कि तुमसे मन की बात कह दूं....जबसे तुमने बेबी के हृदय में प्यार का पौधा लगाया है, चुपके-चुपके दबे पांव तुम मेरे हृदय में भी उतरती चली आई हो, तुम्हें घर में देखता हूं तो कभी-कभार यों अनुभव होता है कि बेबी की मां घर में चल-फिर रही है....कई रातें बिस्तर पर करवटें बदलते-बदलते तुम्हारे ही विषय में सोचते हुए गुजर जाती हैं....आंख लग जाने पर स्वप्न में भी तुम बेबी की मां के रूप में ही आती हो....अब और सहन करना मेरे वश में नहीं सुषमा....बिल्कुल नहीं....मैं तुम्हारे आगे हाथ जोड़ता हूं....मेरी बेबी को एक मां दे दो....मेरे हृदय की दहकती हुई ज्वाला पर अपने शीतल भीगे होंठों का अमृत जल छिड़क दो...."

सुषमा के होंठों पर सन्तोषमय मुस्कराहट फैल गई। उसने धीरे से कहा, "मुझे बेबी से अत्यधिक प्यार है शंकरजी....इसी कारण मेरे मन में आपके लिए भी सहानुभूति है, क्योंकि आप बेबी के पिता हैं....मां के बाद उस अबोध का एकमात्र सहारा है....आप मेरे भैया को भी बहुत निकट से जानते हैं....उन्होंने जिन परिस्थितियों में एक मां और एक बाप बनकर मुझे पाला है....उन परिस्थितियों ने उन्हें कितना विद्रोही बना दिया है....मैं इसीलिए भैया से आपकी शिकायत न करूंगी कि कहीं कल आपकी बेबी को भी बाप की छाया से वंचित न होना पड़े...."

शंकर की सांसें और तेज हो गई थीं और उसकी आंखों से चिंगारियां निकलने लगीं। सुषमा ने उससे बचकर द्वार से निकलने का प्रयत्न किया किन्तु शंकर ने झपटकर उसे बांहों में दबोच लिया और हांफता हुआ बोला, "आज की रात मेरी है सुषमा....आज की रात मेरी है....कल सुबह तुम स्वयं रो-रोकर भैया से कहोगी कि वह तुम्हारे फेरे शंकर के साथ करवा दें....मैं उस समय भी तुम्हें अपनी पत्नी बनाना स्वीकार कर लूंगा.....क्योंकि मैं किसी दशा में भी तुम्हें छोड़ नहीं सकता....मुझे तुम्हारे शरीर, अंग प्रत्यंग में पदमा दिखाई दे रही है....तुम सुषमा नही हो पदमा..... हो मेरी पदमा....."

"छोड़ दीजिए शंकरजी!" सुषमा कांपते स्वर में विनयपूर्वक बोली "भगवान के लिए मुझे छोड़ दीजिए..."

"यह असम्भव है....अब मुझसे तुम्हें कोई नहीं छुड़ा सकता....मैं जानता हूं कि तुम शोर नहीं मचाओगी....यदि तुमने शोर मचाया तो बात तुम्हारे भैया के कानों तक भी अवश्य ही पहुंचेगी....तुम्हारा भैया यदि आवेश में आकर मेरे प्राण भी ले लेगा तो वह भी फांसी के तख्ते पर लटकेगा....और तुम....तुम अपने भाई को अपने सामने फांसी लगते नहीं देख सकतीं...."

"हां, हां, मैं शोर नहीं मचाऊंगी," सुषमा बिलबिला कर बोली "मुझे भैया के जीवन से अधिक

अपनी इज्जत प्यारी है....रास्ते वाले क्या जानेंगे कि मैं लुट गई या बच गई किन्तु ऊपर भगवान भी तो है शंकरजी उसके कठोर दण्ड से बचिए....भगवान के लिए मुझे जाने दीजिए..."

किन्तु, शंकर तो पागल सा हो रहा था....वासना ने उसे अंधा कर रखा था....उसने बलपूर्वक सुषमा को बिस्तर की ओर खींचने का प्रयत्न किया....उसी समय सुषमा ने पूरी शक्ति से स्वयं को शंकर के चंगुल से छुड़ाना चाहा.....इस खींचातानी में सुषमा का ब्लाउज मसक कर पीठ से हट गया किन्तु यह तो वासना का चढ़ा हुआ भूत था जिसने उसे इतना बल भी दे दिया था। उसका सांस अत्यधिक फूला हुआ था और उसकी टांगें कांप रही थीं। सुषमा के दोनों हाथ स्वतन्त्र थे.....एक हाथ से वह अपने मुंह पर से शंकर का हाथ हटाने का प्रयत्न कर रही थी और दूसरे हाथ से शंकर की पीठ पर घूंसे मारे जा रही थी।

शंकर को एक छाया सी दिखाई दी। शंकर ठिठककर रुक गया। किन्तु, दूसरे ही क्षण उसने सन्तोष की सांस ली....वह छाया लड़खड़ाती हुई उसके पास से बिना कोई ध्यान दिए निकलने लगी–शंकर ने सोचा कोई बेसुध शराबी होगा....उससे क्या भय है....किन्तु, ज्योंही वह लड़खड़ाता हुआ व्यक्ति उनके पास से निकलने लगा सुषमा ने हाथ बढ़ाकर जोर से उसका हाथ पकड़ लिया। वह व्यक्ति लड़खड़ा कर उसकी ओर मुड़ गया। घबराहट में शंकर की पकड़ ढीली पड़ गई। सुषमा एक बार पूरे बल से मचली और शंकर के कंधे से कूद गई। उसने उस व्यक्ति का हाथ अब भी नहीं छोड़ा था। धरती पर पैर पड़ते ही वह उस राह चलते व्यक्ति से चिपट गई और हांफती हुई बोली, "बचाओ....भगवान के लिए मुझे बचाओ।"

"आं...." वह आगंतुक आंखें फाड़कर देखता हुआ बोला, "कौन.....कौन है?"

दूसरे ही क्षण शंकर ने उस व्यक्ति को एक घूंसा मारा और वह लड़खड़ा कर पीछे हटा। सुषमा उसके साथ ही घिसटती चली गई। वह एक सहमी हुई फाख्ता के समान थर-थर कांप रही थी....वह व्यक्ति अब और अधिक आंखें फाड़कर शंकर को देख रहा था। शंकर ने इस बार सुषमा का हाथ पकड़ कर खींचने का प्रयत्न किया....किन्तु सुषमा ने उस व्यक्ति की कमीज गले से थाम ली और वह दूर तक उसके साथ खिंचता चला आया और फिर उसने एकाएक सुषमा का हाथ पकड़ कर जोर से झटका दिया। सुषमा का हाथ शंकर की पकड़ से स्वतंत्र हो गया। शंकर भन्ना कर फिर सुषमा की ओर झपटा। इस बार उस व्यक्ति ने हाथ घुमाकर शंकर की कनपटी पर मारा और शंकर का पूरा शरीर झनझना उठा। वह न केवल हड़बड़ा कर पीछे हटा बल्कि ठोकर खाकर पीठ के बल गिर पड़ा। वह व्यक्ति यों हाथ फैलाए हुए शंकर पर झुका हुआ झूम रहा था जैसे उस पर प्रहार करने वाला हो। इसी समय शंकर के कानों से एक आवाज टकराई, "सुषमा...."

यह सुषमा के भाई चन्दर की आवाज थी। शंकर के शरीर में सन्नाटा-सा दौड़ गया। दूसरे ही क्षण वह फुर्ती से उठा और तीर के समान अपने मकान की ओर भागता चला गया। सुषमा के मस्तिष्क का सन्नाटा धीरे-धीरे गहरा होता जा रहा था। इसी सन्नाटे में उसने चन्दर की आवाज सुनी थी....और फिर उसे अनुभव हुआ कि वह अब बिल्कुल सुरक्षित है....उसका मस्तिष्क तरंग में बेसुध सा झकोले खाने लगा।

चन्दर ने परछाइयों को हिलते हुए देखा था। धुंधली रोशनी में वह केवल सुषमा की झलक ही पहचान सका था....उसके पांव में स्फूर्ति आ गई थी...वह भागता हुआ उनके पास पहुंचा...और... एकाएक उसके मस्तिष्क को एक तीव्र धक्का लगा। सुषमा एक अनजाने व्यक्ति की बांहों में बेसुध पड़ी हुई थी....उसका ब्लाउज पीछे से फटा हुआ था, बाल बिखरे हुए थे और साड़ी का आंचल सड़क पर पड़ा था। वह व्यक्ति आंखें फाड़फाड़कर सुषमा को ध्यानपूर्वक देखता हुआ कह रहा था, "मैं....मैं तुम से प्यार करता हूं संध्या....मैं तुमसे प्यार करता हूं....तुम.....तुम....बेवफा नहीं हो सकतीं....सब....सब कमीने हैं.....मैं.....मैं सबको जान से मार दूंगा...."

और अचानक उस व्यक्ति की आंखें क्रोध की तीव्रता से फट गईं और वह बड़े कठोर भाव से सुषमा को देखने लगा....उसने दोनों हाथों से सुषमा की गर्दन पकड़ ली–

चन्दर को सहसा ऐसा अनुभव हुआ जैसे उसके पूरे शरीर में एक ज्वालामुखी फूट पड़ा हो....उसका समस्त शरीर क्रोध की अधिकता से आग उगलने लगा था....उसने दोनों हाथों की मुट्ठियां कसकर बन्द कर लीं और आगे बढ़कर झटके से उस व्यक्ति को हाथ से पकड़ करे खींचा। सुषमा एक निराश्रित स्तंभ के समान उस व्यक्ति की बांहों से छूटकर एक ओर जा गिरी....वह व्यक्ति झटके से एक पग पीछे हट गया और आंखें फाड़-फाड़कर चन्दर को देखने लगा। चन्दर ने दांत भींचकर कहा, "तुम हो बाबूजी। अभी पिछला भी कुछ शेष तुमसे चुकाना है....टैक्सी की मरम्मत में ढाई सौ रुपये लगे थे....किन्तु तुम्हारी मरम्मत तो अब भगवान भी न कर सकेगा....वह टैक्सी का मुआमला था....तुम दारू पिए हुए थे सो क्षमा किया जा सकता था....किन्तु; दारू पीकर एक शरीफ लड़की को तुम टैक्सी समझो....यह अपराध तो कदापि क्षमा नहीं किया जा सकता।"

"भाग जाओ...." वह व्यक्ति लड़खड़ाता हुआ बोला, "तुम सब कमीने हो....नीच हो...."

अचानक चन्दर का भरपूर घूंसा उस व्यक्ति की कनपटी पर पड़ा और वह लड़खड़ा कर पीछे हटता हुआ आंखें फाड़-फाड़ कर चन्दर की ओर देखने लगा। चन्दर ने उछल कर अब उस व्यक्ति के पेट में पांव से ठोकर मारने का प्रयत्न किया किन्तु, दूसरे ही क्षण चन्दर की टांग को खींचकर एक ओर झटका दिया और चन्दर मुंह के बल जा गिरा। जितने समय में चन्दर उठकर उसका सामना करता वह व्यक्ति स्वयं ही औधे मुंह सड़क पर जा गिरा।

सुषमा अब तक कुछ सुधि में आ चुकी थी। उसने अपने आप को संभाला और आंखें फाड़कर देखा। उसकी दृष्टि चन्दर पर पड़ी। पहले उसे चन्दर का धुंधला-धुंधला प्रतिबिम्ब सा दिखाई दिया और फिर उसका चेहरा स्पष्ट दिखाई देने लगा। वह बड़े खूंखार ढंग से चाकू लिए उस व्यक्ति की ओर बढ़ रहा था। अचानक सुषमा चीखती हुई उठ बैठी, "भैया...!

और फिर वह झपटकर हवा की सी फुर्ती से चन्दर और उस व्यक्ति के मध्य आती हुई बोली, "क्या कर रहे हो भैया....क्या कर रहे हो?"

"सामने से हट जा सुषमा! मैं इस कुत्ते का सिर धड़ से अलग कर दूंगा..."

"किस अपराध में इसे मारोगे भैया?" सुषमा हांफती हुई बोली "इस अपराध में कि उसने तुम्हारी बहिन का सतीत्व एक कुत्ते से बचाया है।"

"इसने? इसने बचाया है तुम्हें?"

"हां भैया....यदि समय पर यह व्यक्ति देवता बनकर न पहुंच जाता तो...तो..." कहते कहते सुषमा ने दोनों हाथों से अपना चेहरा छिपा लिया।

"कौन था? कौन था वह दुष्ट मैं उसकी बोटियां करके फेंक दूंगा।"

"वह...." सुषमा ने झट कहा, "पता नहीं कौन था? मैं शंकर जी के यहां से निकलकर यहां पहुंची ही थी कि उसे कुत्ते ने पीछे आकर मुझे दबोच लिया था।"

"किधर गया वह भाग कर?"

"मैं तो बेहोश हो गई थी....न जाने किधर गया....अब तक पता नहीं कहां पहुंचकर छिप गया होगा।"

"खैर....तू देखकर पहचान तो लेगी?"

"अंधेरा था गली में भैया। इसलिए शायद ही पहचान सकूं...."

चन्दर सुषमा को कुछ देर ध्यानपूर्वक देखता रहा....! फिर हल्की-सी सांस लेकर बोला, "अच्छी बात है....चल घर..."

"किन....किन्तु भैया..." सुषमा ने सड़क पर पड़े उस व्यक्ति की ओर देखकर करुणामय स्वर में कहा, "इस गरीब को क्या यों ही पड़ा रहने दोगे?"

"मेरे यहां शराबियों के लिए कोई स्थान नहीं है।" चन्दर ने कठोर स्वर में उत्तर दिया।

"शराबी! किन्तु? भैया, इसके मुंह से तो शराब की दुर्गन्ध नहीं आ रही..."

चन्दन ने ध्यान से उस व्यक्ति की ओर देखा, फिर उसके पास बैठकर झुककर उसका मुंह सूंघकर बोला, "अरे....सच ही यह शराब तो नहीं पिए है...." फिर उसका हाथ थामते हुए चौंककर बोला, "अरे.....इसे तो बहुत सख्त बुखार है....फुंक रहा है इसका पूरा शरीर आग के समान...."

"सूरत भी तो देखा कैसी हो रही है भैया! यह किसी भारी कष्ट में पड़ा दिखाई देता है..."

"और अब हमें भी अपने साथ किसी कष्ट में डालेगा।" चन्दर झुककर उसे बांहों पर उठाते हुए बड़बड़ाया।

"मेरे भगवान! भार तो देखो....पहलवान है, पूरा पहलवान...."

* *

कोठरी में पहुंचकर चन्दर ने अजनबी को बिस्तर पर लिटा दिया और अपनी दोनों बांहों को दबाता हुआ बोला, "हाथ तोड़ दिए इसने तो मेरे....अरे घर में कोई सैरिडॉन इत्यादि भी होगी.....इसे तो बहुत तेज बुखार है...."

"गोली तो कोई नहीं है..." सुषमा ने चिन्ता भरे स्वर में कहा।

"फिर क्या करूं? इस समय दवा-दारू ही कहां से मिलेगी?"

"पास ही तो वैद्यजी का घर है...चले जाओ....रात में और दशा खराब हो गई....और भगवान न करे कहीं यह मर गया तो कोई आपत्ति न आ पड़े...."

"मर....मर....मर गया ....अरे बाप रे..." चन्दर ने घबराकर अजनबी को उठाने का प्रयत्न किया और सुषमा उसे पकड़ते हुए बोली–

"अरे....अरे....यह क्या कर रहे हो?"

"मर गया तो न जाने किस संकट में पड़ जाएं....मैं इसे बाहर ही डाल देता हूं..."

"तुम्हारा दिमाग क्या खराब हो गया है भैया! एक बीमार आदमी को यों ठिठुरती शीत में सड़क पर फेंक आओगे तो न मरता भी मर जाएगा।"

"यह भी तू ठीक कहती है...." चन्दर बड़बड़ाया, किस जंजाल में फंसा दिया तूने?

"जंजाल कह रहे हो भैया! इसने तो आज मेरी लाज बचाई है..."

"अरे हां....इस साले का एहसान भी तो है हम पर....देखभाल तो करनी ही पड़ेगी...चाहे आगे चलकर स्वयं भूखे ही रहना पड़े....वाह भगवान! तू भी कहेगा कि मैंने आदमी बनाए हैं...."

चन्दर बड़बड़ाता हुआ कोठरी से बाहर निकल गया। सुषमा ने अजनबी को रजाई ओढ़ा दी। पहली बार उसने ध्यानपूर्वक उसके चेहरे पर दृष्टि डाली। दाढ़ी बढ़ी हुई, लजीला, पीला-पीला सा चेहरा....ऐसे लगता था कई दिनों से मुंह नहीं धुला....सिर के बालों में धूल अटी हुई थी....गोरे....गोरे, भरे चेहरे पर विशेष चिन्ता और निराशा के चिन्ह थे....उसके होंठों पर पपड़ियां जम गई थीं। सुषमा का हृदय धड़क उठा।

थोड़े समय बाद घर में पांव की आहटें गूंजी और इसके साथ ही चन्दर वैद्य जी को कंधे पर उठाए भीतर आया। वैद्य जी कह रहे थे, "अरे, अरे....क्या करता है रे....उतार, उतार मुझे...."

चन्दर ने वैद्य जी को उतार कर फर्श पर खड़ा कर दिया। वैद्य जी ने उसे घूंसा दिखाकर कहा, "मैंने कह दिया कई बार....इतनी रात गए मैं किसी के घर नहीं जाता...."

"नहीं जाते....तभी तो उठाकर लाया हूं....और अब जब आ ही गए तो रोगी को देखो...."

"आ गया हूं? है....!" वैद्य जी ने चौंककर इधर-उधर देखा।

"किधर है रोगी...." सुषमा ने मुस्कराकर अजनबी की ओर संकेत किया।

वैद्य जी मुंह-ही-मुंह बड़बड़ाकर अजनबी को देखने लगे। चन्दर वैद्य जी से बोला, "ध्यान रखना वैद्य जी। मरने न पाए....मेरे पास दवा दारू के पैसे तो हो सकते हैं अर्थी उठाने के लिए नहीं..."

"अरे....मरेगा नहीं तो क्या जीवित बचेगा....इसके पेट में तो घास का तिनका भी नहीं....जाने कब से भूखा है?"

"धत् तेरी....चन्दर मुंह बनाकर बोला, फिर वह सुषमा की ओर देखकर कहने लगा, "सुन लिया तूने....अब झोंक चूल्हा....मेरे लिए तूने पांच रोटियां रखी होंगी....उनमें से एक रोटी भी कम नहीं करूंगा....वैसे भी इतनी बड़ी देह को उठाकर लाया हूं....भूख बढ़ गई है...."

"हां..." वैद्य जी ने कहा, "रोटी खिला दो बुखार में जिससे चार दिन में ठीक होना हो तो चार सप्ताह लग जाएं....अरे अभी इसे दूध दिया जाएगा....केवल दूध...."

"दूध..." चन्दर चौंककर बोला, "तुम्हारा दिमाग तो ठीक है वैद्य जी....मां के दूध के बाद यहां केवल चाय में थोड़ा-सा दूध देखने को मिला है...इस हट्टे-कट्टे व्यक्ति के लिए इतना दूध कहां से लाऊंगा?"

"वह तो किसी प्रकार प्राप्त करना ही पड़ेगा....चल मेरे साथ मैं दूध दिए देता हूं...दूध के साथ एक पुड़िया दवाई भी दे देना....एक पुड़िया दो घन्टे बाद....फिर चार पुड़ियां कल....भगवान ने चाहा तो कल शाम तक बुखार टूट जाएगा...."

"और साथ ही मेरी कमर भी टूट जाएगी....क्या हर पुड़िया दूध के साथ दी जाएगी?" चन्दर ने घबराकर पूछा।

"नहीं, इस समय एक पुड़िया दूध के साथ....फिर एक पुड़िया सुबह दूध के साथ....."

"हे भगवान!" चन्दर ने लम्बी सांस ली।

वैद्य जी खड़े हो गए। चन्दर ने झुककर उन्हें फिर कंधे पर उठा लिया। वैद्य जी गड़बड़ाकर बोले, "अरे...अरे क्या करता है?"

तुम्हारा नियम नहीं टूटना चाहिए वैद्य जी! रात में तुम कहीं आते-जाते नहीं, मैं ही उठाकर लाया हूं.....मैं ही वापस पहुंचाऊंगा।

वैद्य जी टांगें हिला-हिलाकर 'अरे' अरे ही करते रह गए और चन्दर उन्हें उठाए हुए कोठरी से बाहर निकल गया। सुषमा ने मुस्कराकर उन्हें जाते हुए देखा और फिर अजनबी को देखने लगी। वह अब धीरे-धीरे कराह रहा था। सुषमा उसके ऊपर झुक गई। थोड़े समय बाद अजनबी ने आंखें खोल दीं और ध्यानपूर्वक सुषमा को देखने लगा। फिर उसने धीरे-से आंखें बन्द कर लीं मानो उसने कुछ न देखा हो। उसके होंठों पर एक हल्की-सी मुस्कराहट रेंग गई और वह न जाने किस कल्पना में डूबा बड़बड़ाया, "संध्या! ....मैं जानता था....मेरी संध्या मुझे धोखा नहीं दे सकती....मेरी संध्या...."

"मैं संध्या नहीं..." सुषमा ने अजनबी पर झुककर धीरे से कहा, "मैं संध्या नहीं हूं।"

अजनबी ने धीरे से आंखें खोल दीं और फिर आंखें झपकाकर सुषमा को देखते हुए आश्चर्य से बोला, "कौन.....कौन हो तुम....?"

"आपकी तबीयत ठीक नहीं है..." सुषमा ने सहानुभूति भरे स्वर में कहा, "भैया आपके लिए दवा लेने गए हुए हैं...."

"भैया....कौन भैया? मैं कहां हूं?''

अजनबी ने उठना चाहा किन्तु, सुषमा ने शीघ्र ही उसके सीने पर हाथ रखकर फिर उसे लिटाते हुए कहा, "लेटे रहिए....आपकी तबीयत ठीक नहीं है।"

अजनबी फिर सुषमा को देखता हुआ लेट गया। इससे पूर्व कि वह कुछ और बोलता चन्दर वापस लौट आया। उसके एक हाथ में दूध का गिलास था और दूसरे हाथ में दवाई की पुड़िया। अजनबी चन्दर को यों देखने लगा जैसे उसे पहचानने का प्रयत्न कर रहा हो। चन्दर ने सिर हिलाकर कहा, "आ गए होश में....देख लीजिए....ध्यान से देख लीजिए....आपके हिसाब में एक सौ पचास रुपये के साथ एक रुपया बारह आने और लिख दिए गए हैं...."

अजनबी कुछ न बोला। वह अब भी ध्यान से चन्दर को देखे जा रहा था। चन्दर ने सुषमा से कहा, "ले.....झट से दूध गर्म करके ले आ साहब को दे दे....मेरी तरकारी भी गर्म कर दे....भूख के मारे प्राण निकले जा रहे हैं....न जाने किस अशुभ व्यक्ति का मुंह देखा था घर से निकलते समय...."

* *

* *

एक विचित्र-सा शांतिमय सन्नाटा राजन के पूरे शरीर में फैला हुआ था....एक गहरे उन्माद के समान....कभी ऐसे ज्ञात होता जैसे वह हुआ था....वह गहरे उन्माद के समान....कभी ऐसे ज्ञात होता जैसे वह गहरी और मीठी नींद सो रहा हो कभी यों लगता कि वह जाग रहा है और जो कुछ दिखाई दे रहा था स्वप्न नहीं था वास्तविकता थी....उसके शरीर के नीचे सख्त और खुरदरी जमीन नहीं बल्कि नर्म और कोमल बिस्तर था। अर्धनिद्रा की सी दशा में उसने आंखें बन्द कर लीं। उसे यों अनुभव हो रहा था मानों वह अपने घर में नर्म और गुदगुदे बिस्तर पर सो रहा है.....उसके होंठों पर एक सांत्वना भरी मुस्कराहट फैल गई।

अचानक उसे अपने शरीर पर एक नर्म रेशमी सरसराहट-सी अनुभव हुई और उसने आंखें खोल दीं। एक साड़ी का आंचल उसके पास ही लटका हुआ था और नीचे गिरी हुई रजाई सरककर उसके शरीर पर आ गई थी। उसने आंखें खोलने का प्रयत्न किया किन्तु, फिर आनन्ददायक गर्मी उसके शरीर में फैल गई और उसने आंखें बन्द कर लीं....उसके मस्तिष्क पट

पर कल्पना में एक चेहरा उभरा....कभी ऐसा लगता कि वह चेहरा संध्या का था और कभी उस लड़की का जिसने कुछ देर पहले उसे दवाई पिलाई थी....फिर इन्हीं चेहरों के साथ एक और चेहरा उभरा....यह चेहरा उस टैक्सी ड्राइवर का था जिससे उसकी झड़प हुई थी....किन्तु; वह टैक्सी ड्राइवर कहां था; यह तो मोहन का चेहरा था....नहीं टैक्सी-ड्राइवर....इसी विश्वास और सन्देह की खींचातानी में धीरे-धीरे वह गहरी नींद में खो गया।

कुछ ही क्षण बाद राजन के कंधों से दो नर्म-नर्म हाथ टकराए और इन हाथों ने उसे करवट बदलने में सहायता दी....अजनबी ने आंखें खोल दीं....वही रात वाला चेहरा उसके सामने था।

"अब जाग जाइए और दवा पी लीजिए..." कांपते हुए होंठों से आवाज निकली।

राजन जाग उठा। थोड़ी देर बाद वही लड़की एक प्याली में दूध लाई और दवाई वाली पुड़िया खोलकर राजन के मुंह में डालना ही चाहती थी कि राजन ने कराह कर कहा, "ठहरो....मैं बैठ जाऊं।"

लड़की ने दूध की प्याली और दवाई की पुड़ियो को मेज पर रखा और उठकर बैठने में राजन की सहायता की....उसकी पीठ से तकिया लगा दिया फिर अपने हाथ से उसने दवाई राजन के मुंह में डाली और दूध का प्याला उसके होंठों से लगा दिया। राजन जब दूध पी चुका तो लड़की ने तौलिए से उसका मुंह साफ किया और बोली, "अब लेट जाइए...."

"नहीं..." राजन ने कमजोर आवाज में कहा, "लेटे-लेटे उकता गया हूं...."

"अब आपका ताप भी हल्का है....लड़की ने राजन का माथा छू कर कहा, "शाम तक तीनों पुड़ियां खा लेंगे तो बिल्कुल उतर जाएगा...."

"मुझे यहां कौन लाया?" राजन ने लड़की को ध्यान से देखते हुए पूछा।

"भैया उठाकर लाए थे....आप गली में बेहोश होकर गिर गए थे...."

"वह टैक्सी ड्राइवर तुम्हारा भाई है?"

"हां...चन्दर मेरा भाई ही है....मेरा नाम सुषमा है। मैं ट्यूशन करके लौट रही थी...रास्ते में एक गुण्डे ने मुझसे अशिष्टता करना चाही....आपने मुझे बचा लिया था....फिर आप बेहोश हो गए थे।"

"मैंने बचा लिया था?" राजन ने आश्चर्य से पूछा।

"हां....आप उस समय अर्ध-चेतना की दशा में थे...रात वैद्य जी आपको देखने आए थे....कह रहे थे आपने दो तीन दिन से कुछ नहीं खाया।"

"बहुत कुछ खाया-पिया था इन दो तीन दिनों में..." राजन फीकी-सी मुस्कराहट के साथ बोला, "अपने खून के धक्के.... अपने प्यार के धक्के....दूसरों की स्वार्थता...हवा और मिट्टी....कितना कुछ तो खाया है.....जो चीजें जीवन के चौबीस वर्षों में नहीं खाई वे अड़तालीस घण्टों में खाने को मिल गईं...."

"ओह...." सुषमा ने राजन को ध्यान से देखते हुए सहानुभूति प्रकट की, "आप बहुत दुखी जान पड़ते हैं...."

"दुखी.....हूं...." राजन गर्दन झटक कर बोला, "दुखी उसे कहते हैं जो सिर पर चोट खाए घाव दबाए बैठा हो....आज तक मैंने अपना जीवन व्यर्थ गंवाया है....किन्तु; आज से मेरे जीवन का उद्देश्य आरम्भ होता है....जो दुख मेरे पास एकत्र हुए हैं, उन्हें सुरक्षा से रखूंगा और एक दिन उन्हीं लोगों को बांटूंगा जिन्होंने ये दुख मुझे दिए हैं...." यह कहते-कहते राजन की आंखों में अंगारे से सुलगने लगे.....उसके चेहरे पर एक भयानक निश्चय की रोशनी छा गई।

सुषमा ध्यान से राजन को देखती रही और फिर धीरे से बोली, "तो आप बदला लेंगे उन लोगों से जिन्होंने आपको दुख दिए हैं..."

"क्या पत्र का उत्तर देना बदला होता है? पानी के तल पर कंकड़ फेंक कर यह आशा करना कि इसमें लहरें नहीं उठेंगी मूर्खता ही तो है...कभी-कभी उठने वाली लहरें किनारों से मिट्टी भी नोंच लाती हैं।"

"क्या आप और भैया एक ही बात पर विश्वास रखते हैं?" सुषमा ने ठंडी सांस लेकर कहा, "बादल बरस कर धरती का सीना भारी कर देते हैं...किन्तु, धरती कभी बादलों की ओर कीचड़ नहीं उछालती..."

"धरती निष्प्राण होती है...राजन किसी निष्प्राण धरती का नाम नहीं है..." राजन ने होंठ भींचकर कहा, "क्या तुमने मुझे इसलिए यहां स्थान दिया है कि..."

"भगवान् के लिए ऐसा न कहिए..." सुषमा झट बोली, "हमने आपको कोई स्थान नहीं दिया...आदमी का आदमी पर एक अधिकार होता है...और अपना अधिकार लेने वाले ही आदमी कहलाते हैं वरना आदमी और पशु में क्या अन्तर है सिवा इसके कि आदमी बोल सकता है और पशु नहीं..."

"और उन लोगों के विषय में तुम्हारा क्या विचार है जो किसी का अधिकार मार लेते हैं...वे भी आदमी ही कहलाते हैं...किन्तु तुम उस बीज के विषय में नहीं जानतीं जिसे आदमी धरती में गाड़ देता है और वह चुपचाप गड़ जाता है, बबूल का पेड़ बन जाता है और इसमें कांटे निकल आते हैं..."

"बबूल का पेड़ तो एक होता है...आप उन बीजों की ओर भी तो देखिए जो आदमी के हाथों धरती में गड़ते हैं और बढ़कर छायादार पेड़ बनते हैं और आते-जाते आदमी को अपनी छांव से सुख और शान्ति देते हैं..."

"और एक दिन ऐसे ही पेड़ों को आदमी काट ले जाता है...किसी भवन ने निर्माण के लिए, या जला कर आग उत्पन्न करने के लिए...मैं ऐसा पेड़ नहीं हूं सुषमा देवी! मेरे कांटे लोग अनुभव करेंगे...एक-एक कांटे में विष भर दूंगा।"

यह कहते-कहते राजन बिस्तर से उतर कर जूते पहनने लगा। सुषमा ने हड़बड़ा कर कहा,

"अरे...अरे कहां जा रहे हैं आप?"

"मैं उम्र भर तो यहां रहने नहीं आया था....तुम लोगों ने मेरी देखभाल की है.....यह मुझ पर ऋण रहेगा....."

"और फिर आपका ऋण तो हम शायद जीवन भर न उतार सकें....यह ऋण जो मेरी ज्जत बचा कर आपने मुझे दिया है...."

"चुकाओगी यह ऋण?" राजन ने सुषमा को घूर कर देखा ।

"यदि प्राण देकर भी चुकाना पड़े तो इन्कार नहीं...."

"तो उठाओ मुझे...." राजन गंभीर होकर बोला, "और धक्के देकर निकाल दो यहां से...."

"जी.....यह...." सुषमा आश्चर्य से उसे देखने लगी।

"मैं अपने मन में यह चुभन लेकर जीवित नहीं रहना चाहता कि इस दुनिया में कहीं मानवता भी है.....मैं चाहता हूं मेरा निश्चय न डगमगाए...."

राजन जूते पहन कर जाने के लिए तैयार हो गया। सुषमा बोली, "राजन बाबू! मोती केवल सीप को ही दुनिया समझ लेता है, किन्तु दुनिया केवल सीप में ही सिमट कर सीमित नहीं होती....आदमी के पास खोजने वाली दृष्टि हो तो उसे हर कोने में...हर स्थान में मानव दिखाई देंगे....रात का अंधेरा देखकर ही यह विश्वास नहीं कर लेना चाहिए कि उजाला होता ही नहीं। हर रात एक सवेरा रखती है...."

"कुछ सवेरे ऐसे भी होते हैं जिन्हें मानव स्वयं उत्पन्न करता है..."

राजन द्वार की ओर बढ़ता हुआ लड़खड़ाया.....सुषमा ने झट आगे बढ़कर उसका हाथ थाम लिया और कहा, "इतनी देर तो ठहर जाइए कि आपकी तबीयत ठीक हो जाए...."

"नहीं, मैं इस बिस्तर की कोमलता को अपने शरीर में नहीं समेटना चाहता..."

राजन फिर बढ़ने लगा और फिर लड़खड़ाकर गिर जाता यदि सुषमा उसे सहारा न देती तो....उसकी आंखों में अंधकार छा रहा था, "मैं अवश्य जाऊंगा सुषमा देवी! मुझे कोई नहीं रोक सकता.....कोई नहीं रोक सकता...."

सुषमा ने बलपूर्वक राजन को खींचकर बिस्तर पर लिटा दिया। राजन ने दोनों आंखें फाड़कर चारपाई की पट्टियां मजबूती से पकड़ लीं।

* *

चन्दर सिर से टोपी उतारता हुआ भीतर आया। सुषमा चूल्हा जलाकर रोटियां पका रही थी। चन्दर ने होंठों पर जीभ फेरी और चूल्हे की ओर बढ़ते हुए बोला, "वाह! मजा आ गया....आज तो गर्म-गर्म रोटी मिलेगी खाने को..."

"अरे भैया!" सुषमा चौंककर मुस्कराई, "तुम आज इतनी शीघ्र कैसे लौट आए?"

"जिस दिन गर्म-गर्म रोटी भाग्य में होती है, उस दिन टैक्सी में कोई-न-कोई विकार उत्पन्न हो जाता है...." चंदर पटरे पर बैठता हुआ बोला, "ला शीघ्र निकाल तरकारी...."

"अरे....अरे....हाथ तो धो लो जरा...कितने काले हो रहे हैं....देखो ना...."

"काम वाले हाथ हैं...चोरी में काले नहीं हुए....ला जल्दी कर...."

"पहले हाथ धोओ....तब मिलेगी रोटी...." सुषमा ने दृढ़ स्वर में कहा।

चन्दर ने सुषमा को घूरकर देखा, कुछ देर यों ही देखता रहा, फिर ठंडी सांस लेकर उठता हुआ बोला–

"डरता हूं अपने क्रोध से....तेरी ससुराल वाले कहीं यों न कहें कि बहू को गंजा करके भेजा है. रुपये दो रुपये के कृत्रिम बाल भी नहीं जमा दिए सिर पर..."

सुषमा हंसकर रह गई। चन्दर उठकर जैसे ही मटके की ओर मुड़ा उसकी दृष्टि राजन पर पड़ी जो चुपचाप बिस्तर पर लेटा उसी की ओर देखे जा रहा था। चन्दर ठिठककर रुक गया और फिर मुंह बनाकर बोला, "अबे लाट साहब! कब तक तोड़ते रहोगे मुफ्त की रोटी बिस्तर पर पड़े-पड़े....."

"अरे भैया...." सुषमा बौखलाकर बोली और भैया की ओर देखने लगी।

राजन ने क्रोधभरी दृष्टि से चन्दर को घूरा और नथुने फुलाकर बोला, "घबराओ मत....ब्याज के समेत तुम्हारा ऋण उतारूंगा...."

"क्या बुद्धि चमक उठी है.... चन्दर हाथ बजाकर बोला, "क्या बिस्तर पर पड़े-पड़े किसी खजाने का पता लगा रहे हो?"

"चन्दर भैया। क्या दिमाग खराब हो गया है तुम्हारा?" बीच में सुषमा बोली।

"सच्ची बात कहने वाले का दिमाग खराब ही होता है...." चन्दर ने कहा।

"अबकी बार तो कहकर देखो...." राजन बिस्तर से पैर उतारता हुआ बोला।

सुन लिया तूने.... चन्दर ने सुषमा की ओर देखा, "चेतावनी दे रहा है, मुफ्त की रोटियां तोड़कर, फिर वह राजन के पास जाकर बोला, "क्या कर लोगे मेरा, अबकी बार कहा तो..."

"सिर तोड़ दूंगा तुम्हारा....मैं स्वयं जाने का प्रयत्न करता हूं.....तुम्हारी बहन शपथ दे-देकर रोक लेती है...."

चन्दर ने मुंह पर हाथ रख ठहाका लगाया और सुषमा की ओर देखकर बोला, "सुन लिया तूने....उस दिन टैक्सी तोड़ दी थी, अब मेरा सिर तोड़ेगा....उंगली पकड़ते-पकड़ते पौंचे तक तो आ पहुंचा, बस केवल गर्दन तक पहुंचना शेष है....अच्छा अब उठो तो सही तुम बिस्तर से....."

"भैया!" सुषमा हड़बड़ाकर खड़ी हो गई।

राजन क्रोध की तीव्रता से उठकर खड़ा हो गया। चन्दर हाथ धो रहा था। राजन मुट्ठियां भींचता हुआ उसकी ओर देखता रहा फिर धीरे कंपकंपाते स्वर में बोला, "यदि सुषमा का ध्यान न होता तो तुम्हें अशिष्टता का मजा चखा देता..."

"सुन लिया तूने...." चन्दर सुषमा की ओर देखकर बोला, "अब भी स्वर नहीं बदला, अभी तक भाई स्वयं को राजमहल में समझ रहे हैं..."

राजन तेजी से द्वार की ओर बढ़ा....चन्दर ने कहा, "ओ-अरे....जाते किधर हो?"

"नरक में...यहां एक क्षण नहीं रुक सकता..."

"पांव तो निकालकर देख कोठरी से...." चन्दर ने लोहे की चाबी उठाकर कहा, "सिर न फोड़ दिया तो चन्दर नाम नहीं....मजाक है, चन्दर के यहां से इस प्रकार चले जाना....इतने दिन रोटियां तोड़ी हैं....इसका मूल्य तो चुका कर जाओ...."

सुषमा खड़ी कंपकपाती रही। उसके होंठ क्रोध की तीव्रता से सिल से गए थे। राजन मुट्ठियां भींचे चन्दर को घूरता रहा, फिर बोला, "एक-एक पैसा चुकाऊंगा तुम्हारा चाहे मजदूरी ही करनी पड़े...."

सुन लिया तूने, यह मजदूरी करेगा.... राजन ने व्यंग्यात्मक स्वर में कहा, "अरे बाबूजी! कभी कार छोड़कर साइकिल भी चलाई है जीवन में, मजदूरी के बहाने यहां से भागना चाहते हो कि मेरे पैसे ही मार लो....फिर कभी मुंह ही न दिखलाओ....मैं इतना मूर्ख नहीं हूं....जब तक मेरे पैसे न चुका दोगे मैं यहां से निकलने ही नहीं दूंगा....कल से चलना मेरे साथ, तुम्हारे कोमल शरीर की कोमलता का ही ध्यान करके तुम्हारा धंधा तैयार किया है....मेरे गैरेज से तुम्हें टैक्सी मिल जाएगी....शहर की सड़कों से तुम परिचित हो ही....बहुत आवारा घूम चुके हो..."

राजन हक्का-बक्का चन्दर को देखता रह गया। सुषमा के चेहरे की विचित्र दशा थी....उसके होंठ यों कंपकंपा रहे थे जैसे वह अभी हंस पड़ेगी या रो पड़ेगी। चन्दर ने उसे घूर कर कहा, "अब मुंह क्या ताक रही है खड़ी-खड़ी.....दो थालियां लगा....बाबूजी बहुत दिनों से बिस्तर पर बैठे-बैठे खा रहे हैं....आज यहां मेरे साथ बैठकर खाएंगे...." फिर उसने राजन से कहा, "क्या कभी आदमी नहीं देखा जो इस प्रकार आंखें फाड़े खड़े हो...उधर जाकर हाथ-मुंह धोओ....बिस्तर पर पड़े-पड़े हाथ धो लेने से आदमी का शरीर मिट्टी हो जाता है...."

राजन फिर भी चन्दर को देखता रहा। चन्दर ने उसे मटके की ओर धक्का देते हुए कहा, "अब जाओ न....."

राजन चुपचाप हाथ धोने लगा। सुषमा उसके हाथों पर पानी डाल रही थी और वह राजन की आंखों में छाए हुए आंसुओं को देख रही थी।

* *

* *

सुषमा शंकर के घर में आई तो सबसे पहले उसकी दृष्टि शंकर पर ही पड़ी जो सुषमा को देखकर ठिठक गया था। सुषमा क्षण-भर के लिए रुकी और फिर सीधी बेबी के कमरे में चली गई। बेबी पुस्तक खोले बैठी थी....सुषमा को देखकर उसके चेहरे पर प्रसन्नता की लकीरें दौड़ गईं। वह उठती हुई बोली, "नमस्ते दीदी...."

"जीती रहो...." सुषमा ने प्यार से बेबी के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "बैठ जाओ..."

"बेबी बैठकर पढ़ने लगी। सुषमा ने पूछा, "कल तुम्हारी कौन-सी परीक्षा है?"

"गणित की....अन्तिम पर्चा है...दीदी।"

"ठीक है...आज मन लगाकर पढ़ समझ लो....और देखो...कल अन्तिम पर्चा समाप्त हो जाने पर मत समझना कि यह परीक्षा भी अन्तिम थी....मैं कल भी पढ़ाने आऊंगी....और रोज आती रहूंगी...."

"अच्छा दीदी...." बेबी ने खुशामद-भरे स्वर में कहा, "केवल कल की छुट्टी दे दीजिए...."

"अच्छा, कल की छुट्टी रही।" सुषमा मुस्कराकर बोली।

बेबी ने उठकर सुषमा के गले में प्यार से बांहें डाले दीं....फिर वह पुस्तक खोलकर बैठ गई।

लगभग एक घंटा बाद सुषमा बेबी के कमरे से निकली। बाहर शंकर खड़ा उसे ध्यानपूर्वक देख रहा था। उसने सुषमा से कहा–

"मैं तुसमे कुछ बातें करना चाहता हूं....मेरे साथ आओ..."

"बातें यहां खड़े-खड़े भी हो सकती हैं...." सुषमा, ने गंभीर स्वर में उत्तर दिया।

"घबराओ नहीं..." शंकर फीकी मुस्कराहट से बोला, "अभी रात इतनी सुनसान नहीं हुई कि अन्धेरे शैतान की आंखों में चमक उत्पन्न हो जाए..."

शंकर घूमकर कमरे में चला गया। सुषमा सन्तोष से कमरे में आई। उसके चेहरे पर कोई भय नहीं था...एक आत्मविश्वास था। अचानक शंकर ने घूमकर कठोर स्वर में पूछा–

"तुम यहां अब क्यों आई हो?"

"बेबी को पढ़ाने के लिए..." सुषमा ने गंभीर होकर उत्तर दिया, "आप भूल रहे हैं कि आप ही ने बेबी के भविष्य का उत्तरदायित्व मेरे कंधों पर डाल रखा है..."

"बेबी को पढ़ाने के लिए या मुझे मेरी गिरावट का भास दिलाने के लिए..."

"नहीं...!" सुषमा के होंठों पर एक हल्की-सी आत्मविश्वास की हंसी फैल गई, "बल्कि इसलिए आती हूं कि मानव-मानव से कभी निराश नहीं होता...अमावस की रात के अंधेरे में भी कहीं न कहीं मानव को प्रकाश की चमक आ ही जाती है...मन का शैतान उसे ही डराता है जो उससे डर कर भागे...और शैतान उससे भागता है जो उसके पीछे मानवता का प्रकाश लेकर दौड़ पड़े। मैं आपसे डरने लगती तो आप पर शैतान की पकड़ और दृढ़ हो जाती...किन्तु मैं आपसे नहीं डरती और इसी कारण आपका शैतान निर्बल पड़ रहा है...क्योंकि आप स्वयं ही जानते हैं कि आपके भीतर कहीं-न-कहीं मानवता का कोई अंश अवश्य छिपा है...बेबी आपकी बेटी है और बेबी ही के समान पलकर बड़ी होने वाली कोई लड़की आपकी बहन भी हो सकती है...जो किरणें आपके अन्तर में छिपे हाथ बेबी को प्रदान करते हैं वही किरणें एक बहन को भी दे सकते हैं।"

शंकर हक्का-बक्का सुषमा की ओर देखता रहा। उसकी आंखें फटी हुई थीं। सुषमा ने ठंडी सांस लेकर कहा, "दुनिया की हर नारी से केवल एक ही सम्बन्ध तो आवश्यक नहीं होता...मैं

जानती हूं आपके मन में मेरे प्रति असीम प्यार है...बहुत स्थान है...आपने मुझे सपनों में देखा होगा...रातों को जाग-जागकर मेरे बारे में सोचा होगा...किन्तु कभी आपके मनोमस्तिष्क पर छाए शैतान ने आपकी सोचों की दशा बदल दो होगी...मैं आपको आमन्त्रित करती हूं शंकरजी! आप मुझसे प्रेम कीजिए...मैं भी आपसे असीम प्यार करूंगी...क्योंकि मैं वह वृक्ष हूं जिसने उस समय जब वह केवल पौधा था कभी प्यार के बादल के छोटे-से टुकड़े की भी छांव नहीं देखी।"

"सुषमा..." शंकर की आवाज कंपकंपा उठी, "मुझे क्षमा कर दो सुषमा, मैंने तुम्हें समझने में कितनी भूल की थी...मैंने यह स्वप्न में भी न सोचा था कि तुम्हारा इतना मूल्य है कि मैं सौ जन्म लेने पर भी इसे नहीं चुका सकता।"

"चुका सकते हैं आप..." सुषमा की मुस्कराहट गहरी हो गई।

"हां चुका सकता हूं...अपने भैया से कह दो कि मैंने तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार किया है, वह मुझे इसका दण्ड दे तो मेरी आत्मा को शान्ति मिल पाएगी..."

"नहीं, एक और मार्ग भी है..." सुषमा ने मुस्कराकर कहा, "अभी-अभी आप मुझे बहन कहकर देखिए...आप यों अनुभव करेंगे कि आपने एक पवित्र मार्ग मुझे देकर अपने पाप के मूल्य से कहीं अधिक चुका दिया है..."

"सुषमा! मेरी बहन..."

शंकर ने आगे बढ़कर सुषमा को गले लगा लिया और उसके माथे पर स्नेह-भरे होंठ रख दिए...सुषमा रो पड़ी। उसके गले से भर्राई हुई आवाज निकली।

"आज, आज जीवन में पहली बार मैंने कुछ जीता है शंकर भैया!" कहते-कहते सुषमा शंकर के कंधे पर सिर रखकर रोने लगी।

♩ ♩

"टैक्सी..."

राजन के कानों से आवाज टकराई और उसने एकाएक ब्रेक लगा दिए। राधा एक दुकान से निकली थी और दुकान का नौकर हाथों में आठ-दस पैकेट उठाए हुए उसके पीछे था। राधा ने पैकेट पिछली सीट पर रख दिए और नौकर को एक रुपये का नोट देकर गाड़ी में बैठ गई।

टैक्सी चल पड़ी। राजन ने सामने लगे शीशे में से देखा। एकाएक राधा सीधी बैठती हुई चौंककर बोली, "ओह...गांधी नगर चलना है..."

राधा ने पीठ से टेक लगा ली। अचानक उसकी दृष्टि सामने लगे शीशे पर पड़ी और वह आश्चर्य भरे स्वर में बोली, "अरे राजन!"

राजन कुछ न बोला। उसकी आंखें बिना पलकें झपकाए सामने मार्ग पर लगी हुई थीं। टैक्सी पूरी गति से दौड़ रही थी। राधा ने व्यंग्य के स्वर में फिर पूछा, "कहां थे तुम इतने दिनों से? कहां रहते हो अब?"

राजन अब भी मौन रहा। राधा ने फिर कहा, "यह टैक्सी कब से चलाना आरम्भ किया है?"

"....."

"राजा तुम्हें बहुत याद करता है...कभी-कभी तो तुम्हारी तस्वीर देखकर रोते-रोते बुरा हाल कर लेता है।"

"....."

"तुम बोलते क्यों नहीं! चुप क्यों हो?"

राजन फिर भी कुछ न बोला। राधा चुप बैठी रह गई। टैक्सी पूरी गति से दौड़ती रही। थोड़ी देर बाद टैक्सी गांधी नगर में आत्मभवन के पोर्टिकों में आकर रुक गई। राधा पिछला द्वार खोलकर उतरी और अगले द्वार के पास आकर धीरे से बोली, "राजा से नहीं मिलोगे राजन?"

राजन ने एक झटके के साथ हाथ आगे कर दिया। उसके दांत मजबूती से भिंच गए थे। राधा ने चुपचाप पर्स में से दस रुपये का नोट निकालकर राजन के हाथ में रख दिया। राधा ने पिछली सीट से पैकेट उठाए और टैक्सी फर्राटे भरती हुई फाटक से बाहर निकल गई। राधा कुछ देर तक खड़ी उस फाटक को देखती रही जिसमें से टैक्सी अभी-अभी बाहर गई थी। उसकी आंखें डबडबा आईं और फिर वह बोझल पांव उठाती हुई भीतर चली गई।

हॉल में राजा तेजी से ट्राइसिकल चला रहा था, मोहन लम्बी आराम कुर्सी पर अधलेटा सिगार के कश लगा रहा था। उसने राधा को आते देखा और मुस्कराकर बोला, "बड़ी देर लगा दी तुमने?" अचानक वह चौंककर सीधा बैठता हुआ बोला, "क्या हो गया है तुम्हें? बीमार दिखाई दे रही हो..."

"राजन मिला था मुझे आज।"

"हूं..." मोहन राधा को ध्यानपूर्वक देखता हुआ धीरे से बोला।

"एक बात कहूं...कहा मानोगे मेरा?" राधा ने अचानक कहा।

"हूं..." मोहन का चेहरा गंभीर हो गया।

"बुला लाओ उसे...छोटा भाई ही तो है, भूल कर बैठा है...बड़ों का काम छोटों की भूलें क्षमा कर देना होता है।"

"हूं...." मोहन ने लम्बी सांस ली, "तो उसे बुला लूं...अपनी धन-सम्पत्ति का आधे का साझीदार बना लूं...उसे एक बार फिर बेधड़क ऐश करने का अवसर दे दूं ताकि कुछ समय बाद तुम्हें और राजा को किसी के आगे हाथ फैलाकर भीख मांगने के लिए छोड़ दूं...यही चाहती हो ना तुम...!"

"मुझे विश्वास है अब उसे समझ आ गई होगी...."

"चुप रहो..." मोहन ने अचानक जोर से राधा को डांटते हुए कहा, "यदि अब तुम्हारे होंठों

पर उसका नाम भी आया तो देखना मुझसे बुरा न होगा।"

राधा की आंखें अनायास ही भर आईं। इसी समय राजा की साईकिल लुढ़क गई और राजा फर्श पर गिर कर रोने-बिलखने लगा। राधा शीघ्र दौड़कर उसकी ओर चली गई।

* *

राजन बस-स्टाप पर लगी हुई सवारियों की लम्बी लाइन के पास से टैक्सी को धीरे-धीरे चलाता हुआ गुजरने लगा। साथ ही वह गर्दन निकालकर पूछता जाता था–

"टैक्सी चाहिए साहब...टैक्सी...टैक्सी..."

अचानक राजन की दृष्टि क्यू में खड़े हुए राजा पर पड़ी और उसने उसके पास पहुंचकर टैक्सी को ब्रेक लगा लिए। राजा की दृष्टि भी राजन से मिली और वह अनायास पुकारा उठा, "अंकल..."

राजा क्यू में से निकलकर तेजी से राजन की ओर भागा। राजा उसके पास पहुंचकर चीखा, "अंकल...!"

दूसरे ही क्षण राजन ने उसे गोद में उठा लिया और छाती से लगाते हुए बोला, "राजा...मेरे बेटे..." उसकी आवाज भर्रा गई थी और उसने राजा का मुंह चूम लिया।

"अंकल, अंकल..." राजा जोर से राजन से चिमटता हुआ बोला, "आप कहां चले गए हैं अंकल! आप कहां रहते हैं?"

"यहीं रहता हूं बेटे...इसी शहर में..."

"तो आप घर क्यों नहीं आते अंकल..." राजा ने हिचकियां लेते हुए राजन का चेहरा दोनों हाथों में थामते हुए कहा, "आप घर क्यों नहीं आते?"

"वह घर मेरा नहीं है बेटे...वह घर तुम्हारे डैडी का है।"

"डैडी बहुत बुरे हैं अंकल!" राजा सिसकियां लेते हुए बोला, "आप मुझे बहुत याद आते हैं...जब मैं आपको याद करके रोता हूं तो डैडी मुझे बहुत डांटते हैं...एक बार...एक बार मम्मी ने आपको वापस बुलाने को कहा था तो डैडी उन पर बहुत बिगड़े और बोले कि अब आगे से आपका नाम भी उन्होंने लिया तो अच्छा न होगा..."

"डैडी ठीक कहते हैं..." राजन ठंडी सांस लेकर बोला, "उनके सामने किसी को मेरा नाम न लेना चाहिए..."

"किन्तु, क्यों अंकल! आप हैं तो डैडी के छोटे भाई।"

"बेटे! तुम्हारे डैडी जिस दुनिया में रहते हैं वहां कोई किसी का भाई नहीं होता...किन्तु छोड़ो इस बात को, तुम आज बस के क्यू में क्यों खड़े हो?"

"आज छुट्टी शीघ्र हो गई थी। ड्राइवर तो पांच बजे ही लेने आता इसलिए मैं बस से वापस घर जा रहा था।"

"चलो बेटे! मैं तुम्हें दूसरी टैक्सी में बिठाए देता हूं..."

"नहीं अंकल! आप मुझे अपनी टैक्सी में ले चलिए...."

"ले चलूंगा किन्तु एक शर्त पर..."

"आप अपनी टैक्सी में ले चलेंगे तो आपकी हर बात मान लूंगा।"

"तुम मुझे घर के भीतर चलने को नहीं कहोगे..."

"नहीं कहूंगा...आपको भी मेरी एक बात माननी पड़ेगी।"

"क्या?"

"आप मुझे हर दिन स्कूल में मिलने आया करें...मुझे आप बहुत याद आते हैं अंकल!"

"मेरे बेटे!" राजन ने राजा को कलेजे से चिपटा कर कहा, "मैं अवश्य ही तुझे मिलने तेरे स्कूल में आया करूंगा। इस अंधेरे संसार में तू ही तो एक चमकता हुआ तारा है मेरे लिए..."

राजा जोर से राजन से चिपट गया। राजन ने एक बार फिर उसे प्यार किया और टैक्सी में अपने साथ वाली सीट पर बिठा लिया। टैक्सी सड़क पर दौड़ने लगी। राजा ने रास्ते में पूछा, "अंकल! आपने दूसरा घर ले लिया है?"

"नहीं बेटे!"

"फिर कहां रहते हैं?" राजा ने आश्चर्य से पूछा।

"एक मित्र के घर में रहता हूं..."

"मित्र के घर में क्यों रहते हैं अंकल! आप अपना घर क्यों नहीं ले लेते...?"

"अपना घर बनाने का यत्न कर रहा हूं..."

"तो अपना घर बहुत अच्छा बनाइएगा अंकल। डैडी के घर से भी बहुत बड़ा...और बहुत सुन्दर घर।"

राजन कुछ न बोला और चुपचाप गाड़ी ड्राइव करता रहा। राजा उसके बहुत निकट साथ लगा बैठा था।

* *

एक होटल के पास से गुजरते हुए अचानक एक महिला ने पुकारा 'टैक्सी'। राजन ने टैक्सी रोक ली। होटल के फाटक से निकल कर एक जोड़ा टैक्सी के पास पहुंचा और राजन के मस्तिष्क में इतना तीव्र झटका लगा मानो किसी ने उसके कानों के पास बम दे मारा हो। वह

सन्नाटे में बैठा रह गया। टैक्सी के पास आने वाली महिला 'संध्या' थी...संध्या जो राजन की प्रेमिका थी...संध्या, जिसे राजन मन से प्यार करता था...प्राणों से बढ़कर उसका आदर करता था। संध्या, वही संध्या जिसने राजन के पास होने की खुशी में होने वाले समारोह में उसे भेंट करने के लिए डेढ़ हजार रुपये का टाई पिन खरीदा था। इस समय संध्या अनिल के साथ नहीं थी...इस समय संध्या के साथ सन्तोष था...सन्तोष जिसे राजन बहुत अच्छी प्रकार से जानता था...सन्तोष शहर के रईस का इकलौता बैठा था।

अचानक पास ही से राजन ने आवाज सुनी, "जरा सुनिए मिस संध्या!" यह अनिल की आवाज थी।

राजन चुपचाप सामने मुंह किए; बिना उनकी ओर मुड़े देखता बैठा रहा। उसने संध्या की आवाज सुनी जो अनिल से कठोर स्वर में कह रही थी, "आपको सामाजिक शिष्टाचार का ध्यान नहीं, मिस्टर अनिल। ...आप देख नहीं रहे क्या, मैं एक फ्रेंड के साथ जा रही हूं" फिर उसने सन्तोष से कहा, "चलिए मिस्टर सन्तोष!"

राजन ने कनखियों से अनिल को देखा जो सन्नाटे में खड़ा हुआ था। उसके मुंह पर कुछ ऐसे चिन्ह थे जैसे कोई यात्री मंजिल के पास आकर लुट गया हो। राजन के चेहरे पर एक गहरी सन्तोष भरी मुस्कराहट रेंग गई। संध्या और सन्तोष पिछली सीट पर बैठ गए। संध्या ने कहा, "चलो ड्राइवर..."

टैक्सी स्टार्ट होकर चल पड़ी, राजन ने अपने सामने लगे शीशे की दिशा बदल दी थी। सन्तोष संध्या से कह रहा था, "यह अनिल तुमसे क्या कहना चाहता था?"

"कहता क्या...?" संध्या ने कठोर स्वर में कहा, "हर युवक हर युवा से एक ही बात कहता है, मैं तुमसे प्यार करता हूं...आप स्वयं सोचिए सन्तोष जी! क्या प्यार भी ऐसी वस्तु है जिसे नारी सभाओं में बांटती फिरे...मैं तो तंग आ गई हूं आजकल के युवकों की मानसिक दशा देख-देखकर, जरा किसी से हंसकर दो-चार बातें कीं, बस वह यही समझ लेता है कि मैं उसके ठेके में आ गई हूं...किसी से मिल-जुल नहीं सकती, कोई बात नहीं कर सकती...बस अधिकार जमाना चाहते हैं...इन महोदय के साथ दो दिन क्या बिताए कि भूल के शिकार हो गए...मैंने अनुभव किया कि इनके मन में कुछ खोट उत्पन्न हो रहा है सो रिजर्व हो जाना पड़ा..."

"यह दोष अनिल का नहीं है संध्या!" सन्तोष के स्वर में हल्की-सी लड़खड़ाहट थी, "दोष तुम्हारे सौन्दर्य का है..."

"तो क्या मैं इतनी सुन्दर हूं?" संध्या ने एक मोहिनी अदा से पूछा।

"तुम अत्यधिक सुन्दर हो...तुम्हें अपनी सुन्दरता का भास नहीं, जिस दिन भास हो जाएगा तो तुम स्वयं जान जाओगी कि जो भी तुमसे मिलता है वह तुम्हारी ओर किसी दूसरे का देखना क्यों पसन्द नहीं करता।"

"हटिए भी आप तो मजाक करते हैं।"

"चलो अच्छा है, इसे मजाक समझकर ही टाल जाना...कहीं मेरा नाम भी अनिल जैसे लोगों की सूची में लिख डालो।"

"यह आप क्या कह रहे हैं सन्तोष बाबू!" संध्या गम्भीर होकर बोली, "आपका नाम भी यदि इन्हीं लोगों की सूची में लिखना होता तो मैं स्वयं किसी से सम्बन्ध बढ़ाने का प्रयत्न नहीं करती...लोग स्वयं ही मेरी ओर बढ़े हैं...मैंने सामाजिक शिष्टाचार के नाते उनका स्वागत किया और लोगों ने न जाने क्या-क्या आशाएं मुझसे लगाए रखीं...आप तो जानते हैं सन्तोषजी! मैं एक नारी हूं और नारी जीवन में केवल एक बार किसी पुरुष को चाहती है...उसी के लिए जीती है और उसी के लिए प्राण भी दे देती है।"

"अच्छा..." सन्तोष ने एक व्यंग्यपूर्ण ठहाका लगाया।

"और क्या? आप अब स्वयं सोचिए पन्द्रह हजार भी कोई चीज है...अचानक डैडी का सारा बैलेंस रोटेशन में फंस गया और पन्द्रह हजार कैश की आवश्यकता आ पड़ी...किन्तु अनिल साहब के पास पन्द्रह हजार रुपये होते तो देते..."

"सच है..." सन्तोष ने जेब में हाथ डालते हुए कहा, "जिसके पास होंगे ही नहीं वह देगा ही कहां से..."

"अरे-अरे...यह आप क्या कह रहे हैं?" संध्या ने घबराकर कहा।

"मैं अनिल नहीं हूं संध्या! बीस-पच्चीस हजार के नोट तो हर समय पर्स में रहते हैं।"

"उफ...फो...देखिए, आप तो व्यर्थ ही लज्जित कर रहे हैं...'' संध्या ने कहा।

"इसका मतलब है तुम मुझे पराया समझ रही हो?"

"अरे अरे...यह आप क्या कह रहे हैं सन्तोष बाबू! आपको पराया समझती तो इतने आदमियों में आप ही का चुनाव कैसे करती?"

राजन चुपचाप ड्राइव करता रहा। उसका निचला होंठ दांतों के बीच दबा हुआ था। उसने शीशे में से देखा सन्तोष हजार-हजार रुपये के पन्द्रह नोट संध्या की ओर बढ़ा रहा था। संध्या ने हाथ बढ़ाते हुए कहा, "अब नहीं लेती तो आप नाराज हो जाएंगे..." नोट लेकर पर्स में रखते हुए वह बोली, "आप कितने अच्छे हैं सन्तोष बाबू!"

"यह अंगूठी पहनो" सन्तोष ने उंगली से अंगूठी उतार कर संध्या को पहनाते हुए कहा, "इक्कीस हजार के नग जड़े हैं इसमें!"

"ओह...सच!" संध्या की आंखें चमक उठीं।

"अगले इतवार को मैं एक बहुत बड़ी पार्टी का आयोजन कर रहा हूं। पार्टी में हमारी मंगनी की घोषणा कर दी जाएगी।"

"ओह...सच, सन्तोष बाबू।" संध्या की आवाज कंपकंपा रही थी।

"सच मेरी जान! बिल्कुल सच, मुझे भी जीवन साथी बनाने के लिए ऐसी ही नियम की पक्की और भली लड़की की आवश्यकता है...खोज है।"

यह कहते-कहते सन्तोष ने संध्या की कमर में हाथ डालना चाहा। संध्या हल्के-से हंसकर सिकुड़ गई और धीरे से सन्तोष का हाथ अपनी कमर से हटा दिया।

अचानक टैक्सी के इंजन ने चलते-चलते दो-तीन छीकें लीं और दो-तीन धक्के लेकर गाड़ी रुक गई। संध्या ने घबरा कर पूछा, "क्या हो गया? ड्राइवर! यह क्या हो गया?"

"इंजन में कुछ खराबी हो गई है।" राजन ने गम्भीरता से कहा।

संध्या राजन की आवाज पहचान कर कुछ चौंक पड़ी। राजन टैक्सी से उतरा और इंजन का बोनट उठा कर उस पर झुक गया। संध्या के चेहरे पर कई रंग आए और चले गए। बड़ी कठिनाई से उसने अपने भावों पर नियन्त्रण पाया। उसने इस बीच यह भी नहीं सुना कि सन्तोष उससे क्या कहता रहा। थोड़ी देर बाद राजन ने बोनट बन्द कर दिया। सन्तोष ने गर्दन निकालकर पूछा, "इंजन ठीक हो गया क्या?"

"नहीं साहब!" बिना उसकी ओर देखे राजन ने उत्तर दिया, "समझ में नहीं आ रहा क्या खराबी हो गई है?"

"कैसे ड्राइवर हो तुम?" सन्तोष झुंझला कर बोला, "इंजन की खराबी समझ में नहीं आती?"

"मेरी समझ जरा कमजोर है साहब!" राजन सिगरेट पैकेट से निकालकर होंठों में दबाता हुआ बोला, "किसी चीज के भीतर क्या खराबी है, यह जरा देर से समझता हूं...."

"अब फिर क्या तुम्हारे बाप के कंधों पर सवार होकर जाएं?"

अचानक राजन की आंखें क्रोध से लाल हो गईं। उसने खिड़की के पास आकर कहा, "जरा एक बार फिर तो कहिए साहब! फिर मैं आपको चार आदमियों के कंधों पर सवार करा दूं।"

"क्या कहते हो?" सन्तोष ने नथुने फुलाकर क्रोध में कहा।

अचानक राजन ने झटके से गाड़ी की खिड़की खोली और सन्तोष की बांह पकड़कर झटके से उसे बाहर खींच लिया। सन्तोष अरे-अरे करता रह गया। राजन ने भीतर झांककर संध्या से कहा, "कहिए तो आपके साथ भी यही व्यवहार किया जाए?"

संध्या बौखलाई हुई दूसरी ओर की खिड़की खोलकर नीचे उतर गई। सन्तोष ने राजन के बल का अनुमान लगा लिया था। संतोष अपने कोट का कॉलर और आस्तीन बार-बार झटककर ठीक करता हुआ संध्या और राजन की ओर देखकर बोला, "जानते नहीं हो मैं कौन हूं? टैक्सी नीलाम करा दूंगा तुम्हारी।"

राजन ने उत्तर दिए बिना असावधानी से नया सिगरेट सुलगाया और फिर एक हाथ भीतर डालकर स्टेयरिंग थामा और दूसरे हाथ से टैक्सी को धकेलता हुआ चल पड़ा।

* *

राजन पसीने में डूबा हुआ टैक्सी धकेलता गैरेज में पहुंचा। बहुत बड़ा गैरेज था जिसमें कई कारीगर इधर-उधर पड़ी हुई कई गाड़ियों पर काम कर रहे थे। अचानक एक कारीगर ने राजन को देखा और चौंककर बोला, "अरे पार्टनर! यह क्या हुआ टैक्सी को?" फिर वह जोर से चीखा, "अबे लड़को! धक्का लगाओ टैक्सी को।"

सब कारीगर अपना काम छोड़कर गाड़ी को धकेलने लगे। राजन को ऐसे अनुभव हो रहा था जैसे इन सबने मिलकर उसका बोझ बांट लिया हो...केवल टैक्सी का बोझ ही नहीं बल्कि वह बोझ भी, जो संध्या के चरित्र को देखकर उसके मस्तिष्क पर आ पड़ा था...और दूसरे ही झण राजन का मूड अच्छा हो गया। इतने में शंकर हाथ में बड़ा-सा रेंच लिए हुए काम करने वाले वस्त्र पहने एक ट्रक के नीचे से सरककर निकला और राजन के पास आता हुआ बोला, "अरे! यह क्या हुलिया बना रखा है तूने? क्या अकेला ही खींचकर लाया है?"

"रास्ते में इस गैरेज का कोई कारीगर नहीं मिला" राजन मडगार्ड पर बैठता हुआ मुस्कराया।

"अरे आदमी नाम के राजन, रास्ते में कोई मजदूर ही पकड़ लिया होता, दो-चार रुपये ले लेता।"

"जब मेरी बांहों में बल था तो दो-चार रुपये क्यों व्यर्थ गंवाता।"

"बड़ा कंजूस है।" शंकर हंसकर बोला, "अरे भोलू! देख! बाहर वाले से चाय के लिए कह दे...एक एस्प्रो भी लेता आइयो।"

"नहीं शंकरजी! अभी मैं इतना बूढ़ा नहीं हुआ हूं...केवल चाय काफी है।"

भोलू दौड़ता हुआ बाहर चला गया। शंकर ने राजन से पूछा, "क्या खराबी हो गई है इंजन में?"

"मालूम होता तो स्वयं ही ठीक करने का प्रयत्न करता...दो-एक छींके आईं और गाड़ी थम गई।"

"ठंडक लग गई शायद" शंकर हंस पड़ा!

"अबे क्या ड्राइवर है तू...कचरा आ जाने से जेट का छेद बन्द हो जाता है...पिस्टन को पेट्रोल की सप्लाई रुक जाती है और इंजन छींक कर ठहर जाता है।"

"अरे शंकर दादा!" एक कारीगर हंसकर बोला, "राजन बाबू कार चलाने वाले साहब ठहरे...इंजन ने गुर्राहट भी की तो गाड़ी वर्कशाप में...यह क्या जानें कि कौन-सी खराबी कब उत्पन्न होती है और उसे कैसे ठीक किया जाता है।"

"किन्तु अब जानना पड़ेगा।" शंकर ने कहा, "अब इसके नीचे मर्सिडीज या शेवरले नहीं होती, टैक्सी होती है...अब इसका उद्देश्य घूमना नहीं आजीविका कमाना है...गाड़ी में छोटी-मोटी

खराबियां तो होती ही रहती हैं, कुछ नहीं सीखेगा तो हर घण्टे बाद गाड़ी लेकर गैरेज में लौट आया करेगा।"

"तुम ठीक कहते हो शंकरजी।" राजन सुनकर शंकर को ध्यानपूर्वक देखता हुआ बड़बड़ाया, "तुम ठीक कहते हो।"

"चल इधर आ!" शंकर बोनट उठाता हुआ बोला, "मैं तुझे बताऊंगा काबोरेटर का कचरा किस प्रकार साफ किया जाता है।"

राजन मडगार्ड से उठकर शंकर के साथ इंजन पर झुक गया।

* *

रात के लगभग दो बजे राजन कोठरी के द्वार पर पहुंचा। फिर कुछ ठिठक कर उसने द्वार खोलना चाहा किन्तु द्वार स्वयं ही खुल गया। राजन ने विस्मय से सुषमा को देखा जो द्वार पर खड़ी थी। राजन अंधेरे में था और सुषमा उसे न देख सकती थी। किन्तु राजन सुषमा को स्पष्ट देख रहा था। उसकी आंखें अनिद्रा के कारण लाल हो रही थीं और पलकें झुकी पड़ रही थीं...उसका रंग फीका-फीका सा था।

"राजन बाबू!" सुषमा ने द्वार से पीछे हटते हुए कहा, "इतनी देर क्यों लगा दी आज?"

"तुम अभी तक जाग रही हो?" राजन ने भीतर प्रवेश करते हुए सुषमा को ध्यानपूर्वक देखते हुए कहा।

"आप ही की प्रतीक्षा में जाग रही थी।" सुषमा ने मुस्कराकर कहा, "सोचा, आप न जाने किस समय थके-थकाए आएं...मेरी नींद गहरी हो, द्वार की आहट न सुनाई दे और आपको कष्ट हो।"

राजन ने ध्यानपूर्वक देखा, एक विचित्र-सा स्नेह था, एक सहानुभूति का भान था, इस भोलेपन में जो सुषमा के चेहरे पर फैली हुई थी। अचानक सुषमा ने राजन का हुलिया देखा। उसके वस्त्रों पर कितने ही कालिख के धब्बे थे...चेहरे पर भी कालिख लगी थी। सुषमा उसका चेहरा देखकर हंस पड़ी, "यह हुलिया क्या बना रहा है आपने?"

"टैक्सी खराब हो गई थी..." राजन ने धीरे से कहा।

"चलिए हाथ-मुंह धो लीजिए...मैं तरकारी गर्म करती हूं..."

राजन हाथ-मुंह धोने लगा, सुषमा पानी डालती रही। फिर उसने साबुन उठाकर राजन को दिया। राजन ने साबुन मलते हुए कनखियों से सुषमा का चेहरा देखा। सुषमा उसी की ओर देखे जा रही थी। राजन को अपनी ओर देखते हुए पाकर वह गड़बड़ा कर दूसरी ओर देखने लगी। राजन मुंह-हाथ धोकर तौलिए से साफ करने लगा। जब वह तरकारी गर्म करने चूल्हे के पास बैठी तो राजन ने कहा, "रहने दो, गर्म न करो, यों ही दे दो...व्यर्थ कष्ट करोगी।"

"कष्ट ठंडी तरकारी खाने में होता है, तरकारी गर्म करने में नहीं," सुषमा मुस्कराई।

"यह क्या बक-बक लगा रखी है?" अचानक नींद में डूबी हुई आवाज में चन्दर बोला, "चुपचाप सो जाओ।"

"राजन बाबू आए हैं भैया।" सुषमा मुस्कराई।

"तो कोई आफत आ गई है?" चन्दर झल्लाए हुए स्वर में बोला।

"बिस्तर छोड़ो राजन बाबू का..."

"राजन बाबू कोई लाट साहब है...कि एक दिन फर्श पर नहीं सो सकता। आज मेरे बदन में बहुत दर्द है, मैं बिस्तर नहीं छोडूंगा।"

राजन चुपचाप खाना खाता रहा। फिर उसने हाथ धोकर तौलिए से हाथ पोंछे और सन्तोष के बिस्तर के पास पहुंचा। एक हाथ उसने चन्दर की गर्दन में डाला और दूसरा घुटनों के नीचे...और उसे बिस्तर से उठा लिया।

"कौन है...यह मैं हवाई जहाज में कैसे पहुंच गया?" चन्दर नींद में सिर हिलाकर बड़बड़ाया।

"अब तुम्हारा जहाज लैंड करने जा रहा है।"

"जरा सावधानी से" चन्दर ने आंखें बन्द किए ही कहा, "मेरा बदन बहुत दुख रहा है।"

राजन ने कुछ सोचा और मुस्कराकर फिर चन्दर को बिस्तर पर लिटा दिया। चन्दर ने आंखें बन्द किए ही कहा, "धन्यवाद" और करवट बदलकर खर्राटे लेने लगा।

राजन नीचे फर्श पर बिछे हुए चन्दर के बिस्तर पर लेट गया। थोड़े अन्तर पर ही सुषमा का बिस्तर था। राजन ने सिगरेट सुलगाई और धीरे-धीरे कश लेने लगा। सुषमा बरतन रखकर मुड़ी और चन्दर के बिस्तर पर पहुंचकर वह चन्दर की पीठ पर खड़ी होकर उसका शरीर दबाने लगी। राजन ने कहा–

"यह क्या कर रही हो? यह कोई सेवा का समय है? सो जाओ चैन से।"

"भैया के बदन में दर्द हो रहा है।"

"अरे! किस चिन्ता में पड़ी हो तुम...सो जाओ निश्चिंत होकर।"

सुषमा चुपचाप मुस्कराकर चन्दर को दबाती रही और राजन बिना बोले सिगरेट के कश लेता रहा। बार-बार वह सुषमा की ओर देखता...अब तो राजन करोड़पति नहीं, दस-पन्द्रह रुपये रोज का साधारण टैक्सी-ड्राइवर है....फिर भी कितनी सेवा करती है उसकी...कितनी देखभाल करती है...राजन ने सुषमा की ओर देखा जिसकी पलकें नींद के बोझ से झुकी जा रही थीं किन्तु फिर भी वह चन्दर का बदन दबा रही थी...इस समय कितनी आभा थी उसके मुख पर, कितनी दीप्ति थी...एक गहरे स्नेह और ममता का प्रकाश...उसने सोचा, यह सुषमा है जिसके जीवन का ध्येय ही सेवा करना है...सेवा ही तो नारी का सबसे बड़ा सौन्दर्य है...अपने घर में वह माता-पिता,

बहन-भाइयों की सेवा करती है और पति के घर जाकर पति की और बाल-बच्चों की सेवा करती है।

राजन सोच ही रहा था कि सुषमा को नींद की जोरदार झपकी आई और वह बेसुध होकर चारपाई से नीचे गिर पड़ी। दूसरे ही क्षण राजन की बलशाली बांहों ने उसे संभाल लिया। सुषमा इस प्रकार हक्की-बक्की आंखें फाड़कर राजन को देख रही थी जैसे उसकी समझ ही में न आया हो कि यह अचानक क्या हो गया, किन्तु जैसे ही पूरी सुधि में आई वह तड़पकर राजन की बांहों से निकली और झट अपने बिस्तर पर चली गई। गड़बड़ा कर उसने राजन की ओर देखा। राजन को यों लगा मानो सुषमा के पूरे मुखड़े पर किसी ने गुलाल छिड़क दिया हो...उसकी अंखड़ियां लाज से गुलाब की पंखुड़ियां बन गई थीं! राजन का दिल बुरी तरह धड़क रहा था जैसे जीवन-भर की पूरी धड़कनें आज ही पूरी करेगा...यह कौन सी लाज थी? कौन सी दुनिया का पर्दा था जो राजन ने आज तक किसी स्त्री के मुख पर नहीं देखा था, किसी स्त्री की आंखों में उसने यह अलौकिक रंग न पाया था।

राजन ध्यानपूर्वक पलक झुकाए हुए सुषमा की ओर देखता रहा। सुषमा ने कई बार घबराए हुए भाव से राजन की ओर देखा और बार-बार आंखें झुका लीं...कभी वह इधर-उधर देखने लगती...कितनी सुन्दर थी यह घबराहट भी...राजन के होंठों पर एक विचार-भरी मुस्कराहट रंग गई। दूसरे ही क्षण सुषमा ने दोनों हाथों से अपना चेहरा छिपा लिया। एकाएक राजन का हृदय जोर से धड़का...और फिर उसे ऐसे अनुभव हुआ जैसे उसकी धड़कनें किसी गहरे कुएं में जा गिरी हों।

इसी समय हल्की-सी कराहट के साथ करवट बदलते हुए चन्दर बड़बड़ाया, "अबे अंधा है क्या? देखकर नहीं चलता...एक्सीडेन्ट हो जाता तो?"

राजन ने मुस्कराकर आंखें भींच लीं। बहुत देर तक वह यूंही आंखें बन्द लिए कल्पना में खोया रहा और फिर गहरी सांसें लेने लगा जैसे वह गहरी नींद सो रहा हो...किन्तु सुषमा को देखने की इच्छा को वह अधिक समय तक दबाए न रख सका। चन्द मिनट पश्चात् उसने फिर आंखें खोलकर सुषमा की ओर देखा। सुषमा ने एक हाथ की कलाई से आधा चेहरा आंखों समेत ढक रखा था और कंधों तक रजाई ओढ़ी हुई थी। उसकी गहरी सांसों की आवाज कमरे के मौन में अलग सुनाई दे रही थी। उसका दूसरा हाथ जमीन पर फैला हुआ था। राजन चुपचाप सुषमा के होंठों की हल्की-सी थरथराहट देखता रहा...फिर उसकी आंखें सुषमा के चेहरे से उसके फर्श वाले हाथ पर आकर टिक गईं...कोमल, भरा हुआ पतली उंगलियों वाला सफेद सुन्दर हाथ।

"नहीं" वह होंठों में बड़बड़ाया, "सुषमा मेरे मित्र और कृपालु चन्दर की बहन है..."

तू भी तो उसका मित्र है, और तेरा भी तो उस पर उपकार है...उसका वैरी तो नहीं तू! उसके मन ने कहा।

"किन्तु यह पाप है, मित्रता के विश्वास की उजली बेदाग चादर पर यह एक गंदा और अपवित्र धब्बा है...

"निस्सन्देह यह पाप होता," उसके अन्तर ने कहा, "यदि तेरी नीयत में पाप होता तो, प्यार करना तो कोई पाप नहीं है...प्यार तो एक पवित्र भाव है यदि इसमें वासना, काम सम्मिलित न हो तो देवताओं ने भी किया है...देवता पापी तो नहीं होते।"

"किन्तु," राजन का गला शुष्क हो गया।

"क्यों अपने आप को छल दे रहा है," उसका मन फिर बहने लगा, "तू कुछ भी सोच...किन्तु यह खुली वास्तविकता है कि तू सुषमा से प्यार करने लगा है और तेरे प्यार में पाप की मिलावट नहीं...यह सच्चा प्यार है।"

"हां!" राजन ने होंठ हिलाए, "यह सच है...यह भास मुझे अभी-अभी हुआ है कि मैं सुषमा से प्यार करने लगा हूं...सुषमा चुपके-चुपके अनजाने ही मेरे मनो-मस्तिष्क में प्रवेश कर गई है...उसका विचार धमनियों में समा गया है।"

फिर पता नहीं किस समय राजन की आंख लग गई। रात-भर वह अनोखे सपने देखता रहा।

दूसरी सुबह उसके कानों के पास कोई चीज जोर से बजी और राजन जाग उठा...किन्तु उसने आंखें बन्द रखीं। आंखों के पपोटों पर उसे तेज उजाले का भास हो रहा था...फिर एक आवाज उसके कानों से टकराई–

"कितनी देर सोते रहेंगे? दस बज रहे हैं।"

"दस..."

राजन हड़बड़ाकर बिस्तर पर ही खड़ा हो गया। सुषमा चाय की प्याली हाथ में लिए पास खड़ी मुस्करा रही थी। राजन के मस्तिष्क में अचानक रात वाली सुन्दर घटना उभर आई और उसने गड़बड़ा कर सुषमा के चेहरे से दृष्टि हटाकर प्याली उससे लेनी चाही। सुषमा ने झट प्याली पीछे खींच ली, "आं हां... पहले कुल्ला कीजिए..."

राजन ने शीघ्र ही मटके से पानी लेकर कुल्ला किया और प्याली सुषमा से लेकर चाय पीने लगा। सुषमा चूल्हे के पास चली गई और राजन चोर दृष्टि से सुषमा की ओर देखता रहा। वह रात की घटना की प्रतिक्रिया जानने के लिए बेचैन था। आखिर सुषमा ने ही मौन भंग करते हुए कहा, "एक बात कहूं राजन बाबू!"

राजन का हृदय जोर से धड़का। शरीर में अपराधियों की-सी डरी-डरी सनसनी दौड़ गई...वह बड़ी कठिनाई से बोल सका, "कहो..."

"आप यह बैड-टी की आदत छोड़ दीजिए...रात-भर के खाली पेट पर चाय बड़ी हानि पहुंचाती है...."

राजन ने सन्तोष की गहरा सांस ली और धीरे से मुस्करा कर बोला, "छोड़ दी..."

"अच्छा, अब शीघ्र ही मुंह धो लीजिए...परांठे ठंडे हो जाएंगे...आज आपको बहुत देर हो गई है। भैया तो आठ बजे ही चले गए थे। वह उसी समय आपको जगाए दे रहे थे। मैंने बड़ी कठिनाई

से रोका उन्हें।”

राजन चुपचाप मटके के पास जाकर हाथ-मुंह धोने लगा।

* *

सवारी की आवाज सुनकर राजन ने टैक्सी रोक दी और हाथ बढ़ाकर पिछली खिड़की खोल दी। एक स्वस्थ सांवले रंग का युवक टैक्सी में सवार होता हुआ अपने साथियों से बोला, "आओ यारो बैठो...तुम भी क्या याद करोगे।"

राजन ने सिगरेट निकालकर सुलगाई। इतनी देर में दो साथी उस युवक के साथ बैठ गए और तीसरा राजन के साथ अगली सीट पर चला आया। सांवले रंग के युवक ने राजन के कंधे पर हाथ मारकर कहा, "चलो बादशाहो...रीगल बार चलो..."

टैक्सी चल पड़ी। युवक बड़ा प्रसन्न दीख रहा था।

अगली सीट पर बैठे मित्र ने पीछे मुड़कर सांवले युवक से पूछा, "कौन सी मिलेगी आज?"

"जो यार लोग चाहें..." सांवले युवक ने खुले हृदय से उत्तर दिया, "आज हम बहुत खुश हैं...सबको अपनी-अपनी पसन्द की पिलाएंगे...फिर वहां से जुहू चलेंगे...आज वहां बढ़िया 'माल' मिलेगा।"

"अवश्य चलेंगे..." पीछे से एक साथी उछलकर बोला, "आज तुम खुश हो तो हम सब तुम्हारी खुशी में सम्मिलित हैं..."

"अरे खुश क्यों न होंगे..." तीसरे ने चहककर कहा, "हमारा एक साथी उन्नति कर रहा है...हमारे लिए खुशी और गौरव की बात है।"

"वास्तव में इससे बढ़कर और खुशी की बात क्या हो सकती है...बल्कि यह तो मान का स्थान है कि हमारा एक मित्र अपने बूते पर अपने साहस और परिश्रम से एक साधारण मिस्त्री से इतनी बड़ी फैक्ट्री का मालिक बन बैठा है और अब उसने नया प्लान बना डाला है तो स्टेट बैंक ने डेढ़ लाख रुपया देना तय किया है इसके लिए।"

"रीगल बार के लिए..." राजा बहुत धीरे व्यंग्यभरे स्वर में बड़बड़ाया।

"क्या...?" राजन के साथ अपनी सीट पर बैठे व्यक्ति ने चौंककर पूछा।

"मैं पूछा रहा था रीगल बार ही चलना है?"

"और कोई इससे अच्छी बार हो तो वहां ले चलो।" पीछे बैठा सांवला युवक बोला। वह अत्यधिक प्रसन्न मुद्रा में था।

"दूसरी बार बहुत दूर है।" एक ने कहा, "फिर यहां से जुहू के लिए टैक्सी ही नहीं मिलेगी।"

"चिन्ता मत करो यारो!" युवक बोला, "छः महीने तक यह टैक्सी इत्यादि का झगड़ा भी समाप्त हो जाएगा...मैंने एम्बेसेडर अभी से बुक करा दी है...हां...शान से घूमा करेंगे..."

"डेढ़ लाख रुपया...जिन्दाबाद..." राजन बड़बड़ाया।

"क्या कह रहे हो?" साथ बैठे व्यक्ति ने राजन से पूछा।

"कुछ नहीं..." राजन ने गम्भीर होकर उत्तर दिया।

"अरे यारो! जीवन में और रखा ही क्या है?" सांवला युवक प्रसन्न मुद्रा में बोला, "खाओ पियो...और ऐश करो..."

"और मित्रों को ऐश कराओ..." राजन फिर बड़बड़ाया, "फिर टैक्सी-ड्राइवर बन जाओ।"

"तुमने फिर कुछ कहा?" साथ बैठे व्यक्ति ने कुछ क्रोध प्रकट करते हुए राजन से पूछा।

"नहीं साहब..."

रीगल बार के सामने टैक्सी रुक गई। मित्र-मंडली टैक्सी में से उतरी। सांवले स्वस्थ युवक ने किराया दिया और साथियों के कंधों पर हाथ रखकर बोला, "चलो...यारो..."

"मेरी जेब खाली होने के लिए व्याकुल है..." राजन ने मुस्कराते हुए व्यंग्य कसा।

मंडली में से केवल एक साथी ने यह वाक्य सुना और राजन को घूर कर देखा। राजन बड़े सन्तोष से सिगरेट का कश ले रहा था। वह व्यक्ति पलट कर दूसरे साथियों के संग बार की ओर बढ़ गया। इसी समय बार में से अनिल, कुमुद, धर्मचन्द और फकीरचन्द निकलते दिखाई दिए...वे लोग नशे में लड़खड़ा रहे थे। धर्मचन्द ने टैक्सी देखकर पुकारा, "टैक्सी..."

राजन ने चुपचाप हाथ बढ़ा कर पिछली खिड़की खोल दी। अनिल को संभाले हुए धर्मचन्द और कुमुद पिछली सीट पर बैठ गए और फकीरचन्द लड़खड़ाता हुआ अगली सीट पर आन विराजा। उनमें से किसी ने भी राजन को नहीं देखा था। राजन ने कोट के कालर खड़े कर लिए और टोपी को और आगे माथे पर झुका लिया। टैक्सी चल पड़ी फकीरचन्द ने लड़खड़ाती हुई जबान में बताया कि उन्हें कहां जाना है। अचानक अनिल ऊंचे स्वर में रोने लगा। धर्मचन्द ने घबराकर कहा, "अरे अरे...क्या कर रहे हो? मैं पहले ही कह रहा था इतनी मत पियो..."

"मैं क्या करूं...एक क्षण भी तो मेरे मन को चैन नहीं पड़ता।"

"अरे! ऐसी हरजाई औरत के लिए रोते हो?" फकीरचन्द ने बुरा-सा मुंह बनाकर कहा, "क्या तुम्हें मालूम नहीं कि वह तुमसे पहले भी कितने पूंजीपतियों, सेठों से प्रेम की पींगें बढ़ा चुकी है...यह तो उसका धंधा है।"

राजन ने हल्की-सी सांस ली। उसके होंठों पर एक शांतिमयी मुस्कराहट रेंग गई। वह जानता था कि बातचीत का विषय संध्या थी। अनिल ने कहा, "अरे, मुझे उस हरजाई का दुख थोड़े है...मुझे तो चिन्ता उन दस हजार रुपयों की है जो उसे अपने डैडी की तिजोरी से निकालकर दिए थे जो उन्होंने एक सौदे के लिए रखे थे...पचास हजार थे...दस हजार मैं निकाल लाया था...यदि सौदे के समय पूरे पचास हजार न मिले तो डैडी की सारी साख मंडी में समाप्त हो जाएगी। मेरे डैडी बहुत सख्त हैं...वह मुझे झट-फारखती दे देंगे। और फिर पूरी धन-सम्पत्ति का अधिकारी मेरा छोटा भाई रह जाएगा। वह वैसे ही मुझसे जलता है, क्योंकि उसे पढ़ना पड़ रहा है और मैं ऐश करता हूं।"

"अरे, तो आंखें बन्द करके देने की आवश्यकता ही क्या थी।" कुमुद ने क्रोध से कहा।

"मुझे क्या मालूम था कि वह नीच केवल अभिनय कर रही है...उसने कुछ इस ढंग से प्यार जताया था कि मैं समझा अब वह मुझे चाहने लगी है....और शीघ्र ही हमारी मंगनी हो जाएगी...मैं क्या जानता था कि जिस दिन मुझसे पैसे लेगी उसके दूसरे ही दिन सन्तोष के साथ दिखाई देने लगेगी...मुझे लिफ्ट तक नहीं दी उस दिन....मेरे पास कोई प्रमाण भी नहीं है कि मैंने उसे दस हजार रुपये दिए हैं।"

"छोड़ो यार नरक में झोंको," धर्मचन्द बोला, "मिट्टी की हंडिया टूटी कुत्ते की जात मालूम हो गई...हम तुम्हारे दोस्त हैं, ऐसे तुम्हें कंगाल थोड़े ही होने देंगे...पांच हजार मैं दे दूंगा, शेष पांच हजार फकीरचन्द और कुमुद मिलकर पूरा कर देंगे..किन्तु, अब तुम ऐसी मूर्खता छोड़ो....जैसा कि तुम्हारे डैडी कहते हैं फौरन पूरा कारोबार अपने हाथ में ले लो...तुम्हारे छोटे भाई की शिक्षा पूर्ण हो रही है...यदि डैडी ने उसे कारोबार का प्रबंधक बना दिया तो टापते रह जाओगे।"

"ठीक कहते हो तुम लोग....आजकल किसी का क्या भरोसा। मैं कल ही डैडी के सामने गम्भीर हो जाऊंगा।"

राजन के होंठों पर मुस्कराहट फैल गई। उन लोगों की मंजिल आ गई थी इसलिए राजन ने टैक्सी रोक दी।

* *

अचानक टैक्सी में करड़-करड़ की आवाज हुई और टैक्सी धक्के खाने लगी। राजन ने हड़बड़ाकर ब्रेक लगा दिए। पिछली सीट पर बैठे सूटेड-बूटेड व्यक्ति ने घबराकर आगे झुकते हुए पूछा, "क्या हुआ ड्राइवर?"

"साहब..." राजन ने क्षणभर मस्तिष्क पर बल दिया और बोला, "शायद टाप गेयर की गरारी टूटी है।"

अचानक सूटेड-बूटेड व्यक्ति ने जेब से रिवाल्वर निकाला और राजन की गर्दन पर रखते हुए कठोर स्वर में बोला, "गोली मार दूंगा...वरना टैक्सी आगे बढ़ाओ..."

राजन सन्नाटे में रह गया। सूटेड-बूटेड व्यक्ति ने पीछे देखा एक कार तेजी से पीछे आ रही थी। अजनबी फिर राजन की ओर मुड़कर बोला, "जल्दी बढ़ाओ, नहीं तो मारता हूं गोली...मैं सब समझता हूं...तुम भी शायद उसी टोली के साथ हो जो बैंक से मेरे पीछे लगी आ रही है...मुझे अपनी कार की प्रतीक्षा थी...यदि बैंक बन्द होने का समय इतना कम न होता तो टैक्सी में न बैठता...मेरा अर्दली भी वर्कशाप चला गया था ड्राइवर के साथ।"

"साहब!" राजन आश्चर्य से बोला, "मेरी समझ में नहीं आता आप क्या कह रहे हैं।"

एकाएक पीछे से आने वाली कार टैक्सी के पास पहुंचकर रुकी और इससे पूर्व की अजनबी कोई हिल-जुल करता फुर्ती से एक व्यक्ति कूद कर टैक्सी के समीप आया और अजनबी की गरदन से रिवाल्वर लगा कर बोला, "बैग उठाओ...जल्दी से....रिवाल्वर गिरा दो...."

अजनबी के चेहरे की रंगत उड़ गई। उसने धीरे से रिवाल्वर गिरा दिया। अब राजन की समझ में बात आ गई थी...टैक्सी को चारों ओर से चार व्यक्तियों ने घेरे में ले लिया था। रिवाल्वर केवल एक ही व्यक्ति के हाथ में था जो अजनबी को निशाना बनाए हुए था। राजन चुपचाप दम साधे बैठा रहा। रिवाल्वर वाला व्यक्ति फिर गुर्राया, "जल्दी करो...वरना ट्रिगर दबाता हूं।"

अजनबी ने कांपता हुआ हाथ बढ़ाया और पैरों के पास रखा हुआ बड़ा-सा चमड़े का बैग उठाकर रिवाल्वर वाले व्यक्ति की ओर कर दिया। सड़क सुनसान पड़ी थी। यह ऐसा मार्ग था जहां दिन में भी सन्नाटा ही रहता था। राजन का हाथ चुपके-से अपनी खिड़की के हैण्डल पर पहुंच गया था। आक्रमणकारी ने बाएं हाथ से बैग ले लिया और रिवाल्वर को घुमाता हुआ बोला, "यदि शोर मचाया तो गोली मार दूंगा...."

राजन ने झट खिड़की खोल दी। आक्रमणकारी ने खिड़की की ओर दृष्टि उठाई ही थी कि पलक-झपकने में ही राजन ने पिछली-खिड़की के भीतर ही उसका रिवाल्वर वाला हाथ पकड़ कर इतनी जोर से झटका दिया कि उसका पूरा चेहरा टैक्सी की छत से टकरा गया। उसके मुंह से चीख निकली और बाहर उसके हाथ से बैग गिर गया और भीतर रिवाल्वर छूट गया। शेष तीनों व्यक्ति राजन की ओर लपके किन्तु जब तक वे लोग घूमकर राजन तक पहुंचते राजन खिड़की से उतर चुका था। पीछे से आने वाले ने बैग पर झपट्टा मारा। दूसरा व्यक्ति बैग उठा कर कार की ओर झपट रहा था। राजन ने झट छलांग लगा कर उसे दोनों कंधों से पकड़ लिया और जोर से पीछे झटका दिया। बैग उसके हाथ से निकलकर सड़क पर जा गिरा। राजन ने पूरे बल से उसे कार की ओर धक्का दिया। पलट कर आने की बजाय वह व्यक्ति तेजी से कार में घुस गया। राजन ने फुर्ती से बैग उठा लिया। उसी समय अजनबी ने टैक्सी की खिड़की से फायर किया। शेष तीनों व्यक्ति भी शीघ्र ही कार की ओर लपके और इसके पूर्व की अजनबी टैक्सी से उतरता कार स्टार्ट होकर हवा हो गई थी। राजन बैग लेकर अजनबी की ओर मुड़ा। राजन के होंठों से लहू बह रहा था। चेहरे पर कई जगह खरोचें आ गई थीं। अजनबी ने कंपकंपाते स्वर में कहा, "त...त तुमने डूबने से बचा लिया नौजवान...मुझे क्षमा कर दो...मैंने तुम पर व्यर्थ ही सन्देह किया था।"

"आप टैक्सी में बैठिए" राजन ने उसे बैग देकर कहा, "रिवाल्वर हाथ में रखिए...इंजन को न्यूटरल करके स्टेयरिंग संभाल लीजिए....मैं धकेलता हूं..."

कुछ देर बाद राजन टैक्सी को धक्का देता हुआ चल रहा था और अजनबी स्टेयरिंग घुमा रहा था। अचानक सामने से एक कार आती हुई दिखाई दी और अजनबी ने झट टैक्सी को ब्रेक लगा दिए। राजन झटका लगने से गिरते-गिरते बचा। अजनबी बड़ी फुर्ती से नीचे उतर आया और कार को खड़ी करने का संकेत करने लगा। उसमें से एक ड्राइवर और एक सफेद वर्दी पहने व्यक्ति जो अर्दली दिखाई देता था, नीचे उतरे। अजनबी ने क्रोध में कहा–

"इतनी देर लगा दी तुम लोगों ने? तुम्हें मालूम है कि दफ्तर कितने बजे बन्द होता है और आज तो नौकरों को वेतन बांटना है।"

"साहब..." अर्दली ने नम्रता से झुककर कहा, "वर्कशाप में देर लग गई थी।"

"चलो...टैक्सी में से बैग उठा कर कार में रखो।" अजनबी ने कहा और फिर राजन की ओर देखते हुए बोला, "अच्छा नौजवान! मैं तुम्हारा उपकार जीवन-भर नहीं भूल सकता...शायद तुम अनुमान भी न लगा सको....बैग में पूरे साढ़े तीन लाख की धन-राशि थी...इसके लिए मेरी ओर से एक छोटा-सा इनाम स्वीकार करो..."

अजनबी ने अपना पर्स खोला और सौ-सौ के पांच नोट निकालकर राजन की ओर बढ़ा दिए। राजन मुस्कराकर बोला, "यदि आप इसे उपकार ही समझते हैं तो क्या उपकार का मूल्य केवल पांच सौ रुपयों से चुकाया जा सकता है?"

अजनबी के होंठ आश्चर्य से खुले और फिर बन्द हो गए। राजन उसी मुस्कराहट के साथ बोला, "ये पांच सौ रुपये कुछ गरीबों में बांट दीजिएगा जिससे उनकी शुभ कामनाएं, उनकी प्रार्थनाएं ऐसे ही समय में आपके काम आएं।"

यह कहकर राजन टैक्सी की ओर बढ़ा ही था कि अजनबी ने कहा, "ठहरो नौजवान..."

राजन अजनबी की ओर मुड़ा। अजनबी ने लज्जित-सी मुस्कराहट के साथ कहा, "मैं एक बार फिर क्षमा चाहता हूं कि मैंने तुम्हें समझने में भूल की...इस उपकार का बदला तो मैं शायद कभी न चुका सकूं...हां शायद जीवन के किसी मोड़ पर मैं तुम्हारे काम आ सकूं। मैं जेमसन का मैनेजर हूं...तुमने यह नाम अवश्य सुना होगा...बहुत बड़ी फैक्टरी है जहां मोटर कारें तैयार होती हैं...यह रहा मेरा कार्ड।" मैनेजर ने कार्ड निकालकर राजन को देते हुए कहा, "आधी रात को भी तुम किसी आवश्यकता के समय मेरे पास आ सकते हो।"

राजन ने चुपचाप कार्ड लेकर जेब में रख लिया। अजनबी ने एक स्नेहमयी मुस्कराहट के साथ राजन को देखा, उसके कंधे पर बड़ी आत्मीयता से हाथ रखा और कार में सवार हो गया। थोड़ी देर बाद कार चली गई। राजन टैक्सी धकेलने लगा।

* *

जोर-जोर से खांसते हुए शंकर की सांस फूल गई। राजन ने कार के नीचे लेटे-लेटे पूछा, "क्या बात है दादा! आज बहुत खांसी उठ रही है तुम्हें?"

शंकर ने खांसते-खांसते बलगम थूका और सांस ठीक करता हुआ बोला, "दो बज गए हैं भई! तू कब तक लगा रहेगा?"

"दादा! सुबह तक किसी भी तरह गाड़ी ठीक करनी है।"

"सुबह तक? अरे यह तो कल दोपहर तक भी कठिनता से ठीक होगी।"

"मुझे कल सुबह से गाड़ी चलानी है दादा...और तुम्हारे गैरेज में कोई फालतू टैक्सी है नहीं।"

"एक दिन न चलाएगा तो क्या हो जाएगा?"

"बहुत कुछ हो जाएगा दादा! अब मैं दिन-भर में बीस रुपये कमा लेता हूं...महीने में पांच

दिन भी यदि इस प्रकार छुट्टी कर लूं तो सौ रुपये की हानि हो जाती है।"

"पर मेरी तो तबीयत खराब है....उधर बेबी घर पर प्रतीक्षा कर रही होगी...नौकरानी अलग बिफरी बैठी होगी...जब तक मैं नहीं पहुंच जाता नौकरानी रुकी रहती है...बाल-बच्चों वाली है वह भी..."

"तुम जाओ दादा! आराम करो।"

"अरे मैं चला जाऊंगा तो तू कैसे ठीक करेगा! कभी पहले भी यह काम किया है?"

"अब तो कर रहा हूं...किसी गोरख धंधे की गिरह तो समझ में आ जानी चाहिए शेष गिरहें स्वयं खुलती चली जाती हैं।"

राजन कार के नीचे से निकल आया। उसके कपड़े काले हो रहे थे, चेहरे पर भी कालिख लगी हुई थी...हाथ में बड़ा-सा रेंच था। शंकर को फिर खांसी आई और राजन ने कहा, "जाओ दादा! तुम आराम करो....तुम्हें तो बुखार भी लगता है।" राजन ने शंकर का हाथ छूकर देखा।

बड़ी कठिनाई से शंकर घर जाने पर सहमत हुआ। जाते-जाते भी उसने कई बातें राजन को समझाईं, फिर बोला, "यदि वास्तव में तूने यह काम कर लिया तो मैं समझूंगा तू ड्राइवर से अच्छा मैकेनिक है...सात-आठ सौ रुपये महीना लेता है हैड-मैकेनिक किन्तु; इस गाड़ी को तो दोपहर से पहले वह भी न ठीक कर सकता...वह भी जब निरन्तर लगा रहता तब..."

राजन कुछ न बोला। उसने सिगरेट सुलगाई और शंकर के जाने के बाद वह फिर काम में लग गया।

लगभग बीस मिनट बाद अचानक फाटक चरमराया और राजन ने सिर निकालकर देखा...फिर वहीं सन्नाटे में लेटा रह गया। उसने सुषमा को देखा था जो इधर-उधर देखती हुई आगे बढ़ रही थी...उसके हाथ में छोटा-सा टिफिन-कैरियर भी था। राजन कार के नीचे था इसलिए सुषमा उसे न देख पाई थी। राजन ने धीरे से हाथ बढ़ाकर सुषमा के पैर छू लिए। सुषमा डर से उछलकर चीख पड़ी। राजन कार के नीचे से हंसता हुआ निकला और बोला, "डर गईं?"

"क्या दशा बना रखी है आपने?" सुषमा ने कहा।

"तुम रात में अकेली क्यों चली आईं? डर नहीं लगा तुम्हें?"

"डर तो बहुत लगा किन्तु; करती भी क्या, भैया को बहुतेरा जगाने का प्रयत्न किया...उनकी नींद तो आप जानते ही हैं...मैंने सोचा आप भूखे होंगे इसलिए खाना लेकर चली आई।"

"बहुत ध्यान रखती हो मेरा!" राजन ने सुषमा को ध्यान से देखते हुए कहा।

"न किया करूं।"

"साहस टूट जाएगा।"

"काहे के लिए बांध रखा है इतना साहस आपने...दिन-भर टैक्सी चलाते हैं, रात-भर गैरेज

में काम करते हैं...क्या केवल ड्राइवरी करने से आपका पेट नहीं भरता?"

"पेट तो चार आने के चने खाकर भी भर सकता है सुषमा" राजन ने ठंडी सांस लेकर कहा, "मानव संसार में केवल पेट भरने के लिए ही तो जन्म नहीं लेता...तुम नहीं जानतीं सुषमा, मैं यह कुछ क्यों कर रहा हूं।"

"बताएंगे भी नहीं मुझे?"

"किसी को भी नहीं बताना चाहता था, किन्तु न जाने क्यों मन चाहता है तुम्हें हर बात बता दिया करूं...क्यों मन चाहता है ऐसा करने को?"

राजन ने सुषमा की आंखों में झांककर देखा। सुषमा ने क्षण-भर उससे आंखें मिलाईं और फिर पलकें झुका लीं। राजन धीरे-से सुषमा के पास आया और बड़ी कोमलता से उसके दोनों कंधे थामकर बोला–

"बताओ ना सुषमा! क्यों मेरा मन यह चाहता है कि अपनी हर बात तुम्हें बता दूं...मेरा हर रहस्य तुम जान जाओ...मुझे ऐसे भान होता है कि तुम्हें सब-कुछ बता देने से मन का बोझ हल्का हो जाएगा...ऐसा क्यों होता है?"

"जी...मैं...मैं...भला क्या जानूं?"

"तुम जानती हो सुषमा! किन्तु तुम....तुम जबान खोलते हुए डरती हो...जो स्त्री स्त्री होती है वह आंखों से सब-कुछ कह सकती है किन्तु जबान से कुछ नहीं कहती।"

"आप समझते हैं आंखों की जबान को!"

"न समझता होता तो...आज अपनी जबान नहीं खोलता। यह कहने का साहस शायद कभी न करता...मैं तुमसे प्यार करता हूं सुषमा! मैं तुमसे प्यार करता हूं....मेरा रोआं-रोआं तुम्हें चाहता है...मैं नहीं जानता वह कौन सा मार्ग है जिससे होकर तुम इतनी चुपके-चुपके, इतनी दबे-पांव मेरे हृदय में उतरती चली आई हो कि तुम्हारे पांव की आहटों का भी मुझे भान न हो सका। मेरी आंखों से आंखें मिलाओ...कहीं मैं..मैं तुमसे बलपूर्वक ऐसी कोई वस्तु तो नहीं मांग रहा जो तुम मुझे न देना चाहती हो?"

सुषमा ने लाज से भरी पलकें उठाईं और राजन की आंखों में देखा–उसके होंठ धीरे से थरथराए किन्तु उनसे कोई ध्वनि न निकली....फिर उसने 'न' के संकेत में सिर हिलाकर जल्दी से एक हाथ अपने चेहरे पर रख लिया और सिर झुका लिया। राजन के रोएं-रोएं में एक कंपकंपी-सी दौड़ गई...एक आनन्ददायक-सी सनसनी....एक उल्लासपूर्ण-सी बिजली...दूसरे ही क्षण उसने सुषमा को छोड़कर आकाश की ओर मुंह उठाया और पूरी शक्ति से चीखा, "सुषमा..."

राजन की आवाज दूर तक वातावरण में लहरा गई। सुषमा गड़बड़ाकर बोली, "हांए, हांए...यह क्या करते हैं...? कोई सुन लेगा।"

"सुनने दो सुषमा...आज सारी दुनिया को सुनने दो...मेरी आवाज इन टिमटिमाते सितारों तक पहुंचने दो...सुषमा! आज मैं दुनिया के कण-कण को अपनी आवाज सुनाना चाहता हूं...मैं सारे संसार को यह बता देना चाहता हूं कि मैंने वह सब-कुछ पा लिया है जो यह सारी दुनिया मुझसे छीनती रही है...हां सुषमा! यह सारा संसार कल तक मुझसे छीनता ही रहा...लूटता ही रहा।"

कहते-कहते राजन की आवाज भर्रा गई और उसकी आंखों से आंसू टपक पड़े। वह भर्राई हुई आवाज में बोला, "सब-कुछ छीन लिया था इस दुनिया ने मेरा...सब-कुछ लूट लिया था...मैं बिल्कुल अकेला रह गया था सुषमा...बिल्कुल अकेला और कंगाल...किन्तु आज...आज मैंने सब कुछ पा लिया है...आज मैं बहुत प्रसन्न हूं सुषमा...बहुत खुश हूं...मैं बहुत ही खुश हूं..." यह कहते-कहते राजन रो पड़ा, और फिर रोते हुए बोला, "जी चाहता है आज ठहाके मारकर आकाश हिला कर रख दूं.."

रोते-रोते बीच में राजन ठहाके लगाने लगा। सुषमा ने टिफिन-कैरियर मडगार्ड पर रखा और राजन के दोनों कंधे पकड़कर हिलाते हुए बोली, "क्या हो गया है राजन बाबू! आपको क्या हो गया है?"

और राजन अचानक सुषमा के बालों में मुंह छिपाकर फिर रोने लगा।

* *

राजन ने खाने का अंतिम ग्रास गले में उतारा और पानी पीकर हाथ पोंछते हुए उसने सुषमा की ओर देखा। सुषमा ध्यानपूर्वक बड़ी गम्भीर मुद्रा में राजन को देखे जा रही थी। एक फीकी मुस्कराहट के साथ राजन ने कहा–

"यह है मेरी कहानी, सुषमा। कोई भी घटना जो मानव के जीवन की दशा बदल दे वह उसकी कहानी का शीर्षक होती है। आज भी भैया की वे आंखें मेरी कल्पना में हैं जब उन्होंने मुझे मेरे अधिकार से वंचित किया था। कितना परायापन था उन आंखों में जैसे हम दोनों में रक्त का कोई सम्बन्ध ही न हो सुषमा! मैं जीवन में किसी भी मोड़ पर इन घटनाओं को नहीं भूल सकता जिनके कारण मैं अकेला रह गया था, इतना अकेला कि मुझे अपनी सांसें तक अपरिचित लगने लगी थीं...दुनिया और दुनिया के हर सम्बन्ध से मेरा विश्वास उठ गया था...निराशा के इस गहरे अंधकार में मुझे तुमने और चन्दर ने उजाले की हल्की-सी किरण दी थी...वह किरण, वह प्रकाश मेरे जीवन के लिए अपर्याप्त था...मेरे साहस और विश्वास के लिए पूरा न था! तुम्हारे प्यार, तुम्हारे स्नेह ने मुझे नया साहस, नई शक्ति प्रदान की है...एक नया निश्चय दिया।...आज मेरा मन चाहता है कि जीवित रहूं...और जीवित रहकर उन लोगों को बताऊं कि तुम्हारे सब कुछ छीन लेने पर भी मैं कंगाल नहीं हुआ...मुझे प्यार का धन मिल चुका है...और जिस दौलत के तुम पुजारी हो, एक दिन मैं उसी दौलत के ढेर लगा कर उन ढेरों पर बैठूंगा और चीख-चीख कर लोगों को बुलाऊंगा और उनसे कहूंगा...आओ, ऐ दौलत के पुजारियों, आओ मेरे आगे सिर झुकाओ...मुझे सजदा करो।"

कहते-कहते राजन की आंखें एकाएक लाल हो गई...चेहरे से बहुत क्रोध टपकने लगा। सुषमा ने एक ठंडी सांस ली। राजन उसी क्रोध की दशा में उठा और रेंच लेकर टैक्सी ठीक करने लगा। सुषमा ने बरतन समेटे और उठकर राजन के पास आ खड़ी हुई...कुछ क्षण ध्यानपूर्वक उसका चेहरा देखती रही, फिर धीरे से बोली–

"आपकी कहानी हमारी कहानी से कोई भिन्न नहीं है राजन बाबू! अन्तर केवल इतना है कि आपको अपने बड़े भाई से शिकायत है और हमें हमारे चाचा ने इस दशा में पहुंचाया...हम भी एक बहुत बड़े आदमी की सन्तान हैं, मां बचपन में भगवान को प्यारी हो गई थी...पिता मुझे और चन्दर भैया को सात और नौ वर्ष का छोड़कर चल बसे...भैया ने मेरे लिए बहुत-कुछ किया है...स्वयं मजदूरी की है...और मुझे थोड़ा बहुत पढ़ाया है। मैंने...जीवन में बहुत मोड़ देखे हैं...किन्तु...मैं जीवन के प्रति निराश नहीं हूं...हां, राजन बाबू जब आदमी आदमी से निराश हो जाएगा उस दिन दुनिया पलट जाएगी...आकाश टूट पड़ेगा...प्रलय आ जाएगी..."

"ये कहानियों-कथाओं की बातें हैं, सुषमा।"

राजन हाथ चलाता हुआ कसैली मुस्कराहट के साथ बोला, "इस दुनिया में हर वह व्यक्ति निराश है जो अपनी बांहों का प्रयोग नहीं जानता...मैं भी अब तक अपने हाथों-पैरों का प्रयोग नहीं जानता था। आज मैं अपनी बांहों का प्रयोग जानता हूं...मैं जान गया हूं कि वे वस्त्र जिन पर कोई सलवट या कोई धब्बा न हो वे आदमी को ऊंचा नहीं उठाते...उसे मान नहीं देते...वे कपड़े आदमी के लिए सम्मान और इज्जत खरीदते हैं जिनमें काम की शिकनें पड़ी हों, जिनमें आदमी के हाथों के परिश्रम का लेख अंकित हो...आज मैं निराश नहीं हूं, इसलिए मैं दुनिया को अपने पैरों में झुकाने का साहस रखता हूं...और एक दिन दुनिया को अपनी इच्छा से झुका कर दिखा दूंगा।"

"राजन बाबू!" यह वास्तविकता भी तो आपको एक कहानी के शीर्षक से ही मिली है। कहानियां भी तो कोई आकाश से नहीं उतरतीं...मेरे, आपके गिर्द फैली हुई वास्तविकताओं को जो लोग पैनी दृष्टि से देख लेते हैं उन्हें कहानियों में डाल कर हमारे सम्मुख मार्ग रख देते हैं।"

राजन कुछ न बोला। उसके हाथ निरन्तर चलते रहे और सुषमा उसका चेहरा ध्यान से देखती रही...फिर उसने एक लम्बी सांस ली और धीमे स्वर में बोली–

"मैं आप से निराश नहीं हूं राजन बाबू! आपसे दुनिया ने इतना छीना है कि आप मानवता की कल्पना से ही निराश हो गए हैं...यही निराश मानव में उन व्यक्तियों को जन्म देती है जो हिरण्यकश्यप, कंस और रावण का रूप धारण करके मानव को अपने सामने सिर झुकाने पर विवश करते हैं...राजन बाबू! मैं आप को वह सब कुछ दूंगी जो आपसे दुनिया ने छीना है...मैं आपको इससे भी कहीं अधिक दूंगी..."

राजन चुपचाप हाथ चलाता रहा और सुषमा ने धीरे से राजन के कंधे से सिर लगा दिया। राजन ने कहा, "बहुत रात हो गई है सुषमा! अब तुम घर जाओ।"

"तुम...रात-भर काम करोगे?"

"तुम जाओ सुषमा! कल का सवेरा मेरे लिए एक नया प्रकाश लेकर आएगा। सुबह जब मैं नाश्ता करने आऊंगा तो तुम अपनी मुस्कराहट की शक्ति मुझे देना जिससे मैं एक बार फिर ताजा-दम होकर अपने उद्देश्य की पूर्ति में लग जाऊं..."

सुषमा ने हौले से टिफिन-कैरियर उठाया और एक दृष्टि राजन पर डालकर फाटक की ओर बढ़ गईं। राजन ने भी उसे जाते हुए देखा और मुस्कराकर फिर अपने काम में जुट गया...उसमें एक नये निश्चय, नई शक्ति का संचार हुआ था।

* *

शंकर ने फाटक पर पहुंचकर अचानक गाड़ी के इंजन की गुर्राहट सुनी और चौंक पड़ा...फिर फाटक में प्रवेश करते ही उसने राजन को देखा जो टैक्सी में बैठा हुआ टैक्सी स्टार्ट करके गेयर डाल रहा था। शंकर की आंखें आश्चर्य से फैल गईं। वह लपक कर राजन के पास पहुंचा। राजन ने मुस्कराकर उसे देखा और बोला, "आओ दादा...बैठो...तुम्हें ट्राई दे दूं..."

"ठीक हो गई?" शंकर ने विस्मय से पूछा।

"बैठो...मालूम हो जाएगा..."

शंकर बैठ गया। राजन ने टैक्सी आगे बढ़ा दी। फाटक से निकलकर उसने सैकंड गेयर डाला, फिर थर्ड और फिर फोर्थ...गाड़ी पानी में तैरती हुई मछली के समान फिसलती चली गई। शंकर आंखें फाड़े बैठा देखता रहा। कुछ दूर जाकर उसने राजन को स्टेयरिंग से हटाया और स्वयं ड्राइव करता हुआ राउंड लेकर गैरेज की ओर लौटा...इंजन बिल्कुल ठीक काम कर रहा था। टैक्सी गैरेज में रोककर शंकर उतर आया। उसके चेहरे पर आश्चर्यमय जोश था। राजन ने मुस्कराकर पूछा, "क्या सोच रहे हो दादा!"

"विश्वास नहीं आता," शंकर आंखें फाड़कर बोला, "इतना काम तो मेरे तीनों बड़े मिस्त्री भी मिलकर नहीं निपटा सकते हैं। हे राम!... आखिर तू ड्राइविंग के चक्कर में क्यों पड़ा है? ड्राइवर केवल ड्राइवर रहता है और मैकेनिक के लिए तो उन्नति के कई द्वार खुले हैं...कई मार्ग हैं..."

"मुझे तो अपने मार्ग की खोज है दादा। चाहे वह ड्राइवर बनकर मिले चाहे मैकेनिक।"

"ठीक है, आज से तू यह ड्राइवरी का चक्कर छोड़ दे...मेरे गैरेज में इतना काम आता है कि बहुत-सा काम मुझे लौटा देना पड़ता है, क्योंकि काम के मिस्त्री नहीं मिलते...मेरे अपने फेफड़ों में अब इतनी शक्ति नहीं रही कि अधिक काम संभाल सकूं...तू यह गैरेज संभाल ले, मुझे तुझ पर बहुत भरोसा है...मैं देख-भाल के लिए कभी-कभार आ जाया करूंगा...यदि तेरी काम की लगन और गति यही रही तो सम्भव है चार-पांच सौ के स्थान पर हजार-डेढ़ हजार रुपये महीना कमाने लगे।"

राजन कुछ न बोला...वह सिगरेट सुलगा रहा था। थोड़ी देर बाद गैरेज के दूसरे मिस्त्री और कारीगर भी आ गए। राजन की टैक्सी को तैयार देखकर सभी प्रशंसा करने लगे। शंकर ने उन्हें

बताया कि किस प्रकार राजन ने अठारह घंटों का काम केवल बारह घंटों में ही पूरा कर दिया है....आज से राजन हैड मिस्त्रयों का भी हैड बना दिया गया है...पूरे गैरेज की देखभाल राजन ही करेगा।

जब चन्दर टैक्सी लेने आया और उसने राजन के काम के विषय में सुना तो तनिक भी आश्चर्य प्रकट नहीं किया और बड़े सन्तोष से बोला, "पागल हो गया है साला...ऐसे ही एक दिन देखने वालों को पागल बना देगा।"

रात-भर का जागा हुआ राजन जब कोठरी में पहुंचा तो सुषमा उसके लिए नाश्ता तैयार कर रही थी। राजन को देखते ही सुषमा के होंठों पर एक हल्की मोहिनी, स्नेहमयी और हृदय में उतर जाने वाली मुस्कराहट उभर आई। राजन को यों अनुभव हुआ मानो वह रात-भर का जागा हुआ न था...बरसों से वह इस मुस्कराहट के नर्म गदले झूले में झूल रहा हो...उसके शरीर का एक-एक रोआं ताजा हो उठा था।

* *

कार अचानक एक उजाड़ स्थान पर रुक गई। संध्या ने चौंककर इधर-उधर देखा, फिर घबराकर बोली, "यह आप कहां ले आए, रमेश बाबू!"

"क्यों?" रमेश ने मुस्कराकर गहरी दृष्टि से संध्या को देखते हुए कहा, "पसन्द नहीं तुम्हें यह स्थान?"

संध्या की आंखों में एक हल्की-सी घबराहट झलकी जिसे दूसरे ही क्षण उसने बड़ी सुन्दरता से मुस्कराहट के पर्दे में छिपा लिया और इठलाकर बोली, "वीराना कौन पसन्द करता है रमेश बाबू...?"

"मुझे बहुत भाता है वीराना..." रमेश ने कार की खिड़की खोलते हुए कहा, "क्योंकि ऐसे स्थान पर किसी के हस्तक्षेप का भय नहीं होता।"

"मैं समझी नहीं।" संध्या बौखलाई।

"तुम्हें दस हजार रुपयों की आवश्यकता थी ना अपने डैडी के कारोबार की गिरती हुई साख संभालने के लिए।"

"और इस उलझन से निकलते ही डैडी हमारी शादी कर देंगे।"

"जिस प्रकार राजन, अनिल, सन्तोष और दूसरे बहुत से मंगेतरों से कर चुके हैं।" रमेश मुस्कराया।

"ओह...उनकी बात मत कीजिए...रमेश बाबू। आप नहीं जानते वे लोग कितने स्वार्थी निकले...शादी से पहले ही वे मुझे पत्नी बनाने की सोचने लगे थे...ऐसे आदमियों का क्या भरोसा...पत्नी बनाने के बाद शादी करें या न करें।"

"तुम्हारे डैडी का क्या भरोसा कि अपने कारोबार की गिरती हुई साख संभालने के बाद भी तुम्हारी शादी करें या न करें।"

"ओह! रमेश बाबू, मेरे डैडी बहुत ग्रेट हैं...वह मेरी इच्छा के विरुद्ध एक पग भी नहीं उठा सकते।"

"वह व्यक्ति क्यों ग्रेट न होगा डार्लिंग! जिसका कोई कारोबार न हो और वह काल्पनिक कारोबार की साख संभालने के लिए दामाद बनाने के सपने दिखाता फिरे...यह क्या कम सौदा है?"

"आप क्या कह रहे हैं रमेश बाबू!" संध्या सीधी बैठती हुई झट बोली।

"क्यों? मेरी जबान से वास्तविकता को सुनकर डर गईं मिस संध्या! मैं रमेश हूं....राजन, अनिल या सन्तोष नहीं हूं जो तुमसे शादी के सपने देखते हुए तुम्हारे डैडी की गिरती हुई साख संभालने के लिए दस-दस, पन्द्रह-पन्द्रह हजार रुपयों की भेंट देते रहे....मैं तुम्हें बहुत लम्बे समय से पढ़ता आ रहा हूं.....तुम्हारे डैडी के विषय में बहुत कम जानता हूं....उनकी जो छोटी-सी फर्म थी वह उनकी ऐश की भेंट चढ़ चुकी है....आदमी जब ऐश के जीवन में से गुजर चुका हो....और इसी ऐश की लत डाल चुका हो....तो इसे एकाएक छोड़ देना उसके बस की बात नहीं और यों आदमी गिरता है और गिरता चला जाता है.....जैसे तुम्हारे डैडी....वह शराब और मुजरों में इतने डूब चुके हैं कि आंखें उठाकर तुम्हारी ओर पिता की दृष्टि से देख ही नहीं सकते....उनके लिए तुम बेटी नहीं हो....वह केवल यह जानते हैं कि तुम सुन्दर, सोसाइटी में घूमने वाली लड़की हो....एक ऐसी लड़की जो उनके लिए सोने की चिड़िया से कम नहीं....अब तक तुम्हें ऐसे ही शिकार मिले हैं जो तुम्हारी सुन्दरता की चकाचौंध में खोकर हिसाब-किताब भूलते रहे हैं....किन्तु, मैं रमेश हूं.... मेरे पिताजी ने दांतों से एक-एक पैसा पकड़कर धन एकत्र किया था....मैं पैसे का सही प्रयोग जानता हूं....मैं जिस वस्तु की जितनी कीमत समझता हूं, उसके उतने ही दाम देता हूं।"

"अरे....रमेश बाबू!" संध्या की आवाज कंपकंपा गई।

"घबराओ नहीं..." रमेश मुस्कराया, "मैं व्यापारी हूं....सौदा खरीदूंगा और दाम दूंगा....मैं किसी एक चीज के सौदे का पाबन्द होकर नहीं रह सकता....तुमसे शादी का कोई विचार मेरे मन में नहीं....इसके अतिरिक्त मैं यह भी नहीं जानता कि जो सौदा मैं खरीद रहा हूं वह ताजा माल है या दस-पांच हाथों से गुजरा हुआ....अब तक तुम पर हजार डेढ़ हजार खर्च कर चुका हूं....यदि माल ताजा है तो कीमत दस हजार तक हो सकती है.....बासी है तो अधिक से अधिक दो हजार....ताजापन या बासीपन का ठीक अनुमान माल के प्रयोग के बाद ही हो सकेगा....या तो एक हजार और ले लेना....या नौ हजार...."

"रमेश बाबू...." संध्या थूक निगलकर रह गई।

दूसरे ही क्षण रमेश ने संध्या का हाथ पकड़कर उसे कार से नीचे खींच लिया। संध्या चिल्लाई–

''बचाओ.....बचाओ....''

"यही तो लाभ है वीराने से....किसी के हस्तक्षेप का डर नहीं होता लेन-देन में...."

संध्या लाख मचलती रही किन्तु, रमेश की मजबूत बांहों ने शीघ्र ही उसे निढाल और बेसुध कर दिया।

आकाश पर एक तारा टूटकर एक लम्बी रेखा बनाता चला गया।

* *

चन्दर ने उस छाया को देखा जो दूर से हल्की अंधेरी सड़क पर बिल्कुल मध्य में चलती हुई दिखाई दे रही थी। उसकी पीठ चन्दर ही की ओर थी। चन्दर इस ओर की एक सवारी पहुंचाकर लौट रहा था....वह ध्यान से इस चलती हुई छाया को देखता रहा। यह कोई स्त्री थी जो धीरे-धीरे सड़क के बीच चली जा रही थी....उसके बाल बिखरे हुए थे और साड़ी का आंचल सड़क पर घिसट रहा था.....उसके हाथ में कोई कागजों की गड्डी थी जिससे एक-एक कागज गिरता जा रहा था।

चन्दर की टैक्सी की हैड-लाईट का प्रकाश उस स्त्री की पीठ पर पड़ा किन्तु वह तब भी नहीं चौंकी। चन्दर ने हॉर्न बजाया और बड़बड़ाने लगा किन्तु, उसने नहीं सुना। अचानक चन्दर की दृष्टि एक कागज पर गई जो उस स्त्री के हाथ से गिरा था। चन्दर चौंक पड़ा.....यह एक नोट था....बड़ा सा नोट।

"पागल तो नहीं हो गई....." चन्दर बड़बड़ाया, "साली के योंही कोई खचाक से पेट में चाकू उतार देगा।"

फिर चन्दर टैक्सी रोककर उतरा....एक दृष्टि उसने गिरे हुए नोट पर डाली.....हजार का नोट था....चन्दर स्त्री की ओर बढ़ता हुआ बोला, "ऐ देवीजी! आपका नोट।"

एक नोट गड्डी में से और गिर गया। चन्दर तेजी से स्त्री के पास पहुंचा और उसकी बांह पकड़ता हुआ उसे रोककर बोला–

"ऐ देवी....!"

दूसरे ही क्षण चन्दर के मस्तिष्क को एक जोर का झटका लगा....घूमते ही टैक्सी के प्रकाश के सामने उस स्त्री का चेहरा आ गया था और वह चुपचाप आंखें फाड़े शून्य में घूरे जा रही थी....बिल्कुल भावनाहीन चेहरा जिस पर बिगड़ा हुआ मेकअप था....गालों पर खरोंचे स्पष्ट थीं। चन्दर बड़बड़ाया, "संध्या!"

किन्तु; संध्या कुछ न बोली....संध्या के बिखरे हुए बाल, उसका चेहरा, मसली हुई साड़ी और गिरा आंचल....चन्दर से बहुत कुछ कह रहे थे। चन्दर इस प्रकार सन्नाटे में खड़ा था जैसे उसका शरीर हल्का-फुल्का होकर तेजी से आकाश के विस्तार में उड़ता चला जा रहा हो....और

फिर.....अचानक वह किसी गहरी गुफा में गिरने लगा हो।

* *

गाड़ी के इंजन की गुर्राहट सुनकर संध्या का बाप चौंका....फिर शराब का गिलास गले में उड़ेल कर मुस्कराया और बड़बड़ाने लगा, "आ गई...."

खिड़की खुलने और बन्द होने की आवाज आई फिर धीरे-धीरे पांव की चापें सुनाई दीं....संध्या का बाप चुपचाप दृष्टि से द्वार की ओर देखता रहा....उसने गिलास में कुछ और शराब उड़ेली, उसके हाथ लड़खड़ाए और कुछ शराब नीचे मेज पर गिर गई। कुछ देर बाद पांव की आवाजें साथ वाले कमरे में चली गईं....संध्या के बाप ने दो एक घूंट पीए और गिलास मेज पर रखते हुए फिर बड़बड़ाया, 'उधर चली गई....'

पांव की आहटें फिर गूंजी....संध्या के बाप की दृष्टि फिर द्वार की ओर लग गई। थोड़ी दूरी पर संध्या दिखाई दी। वह चुपचाप द्वार ही में आकर खड़ी हो गई थी। बाप ने ध्यान से बेटी को देखने का प्रयत्न किया, फिर उसकी दृष्टि उसके चेहरे से फिसलती हुई उसके दाएं हाथ पर रुक गई जिसमें नोटों की एक गड्डी दिखाई दे रही थी.....बाप की बांछें खिल गईं.....वह मुस्कराता हुआ उठा और लड़खड़ाता हुआ बढ़कर बोला, "कितने हैं? आज तो मैं घर से निकल ही नहीं सका था...कुछ भी नहीं था पास..."

संध्या के हाथ से नोट गिरे और बाप के पैरों में बिखर गए। बाप ने झुकते हुए कहा, "अरे! यह तो पांच-छः हजार ही मालूम होते हैं?"

बाप के हाथ में नोट आए....अचानक संध्या का दूसरा हाथ आंचल के नीचे से निकला....प्रकाश में पिस्तौल की चमक लहराई....एक गोली निकली....एक धमाका हुआ....दूसरे ही क्षण संध्या के बाप की पीड़ा-भरी चीख कमरे में गूंजी....एक बार उसका शरीर ऐंठा, फिर वह एक ओर लुढ़क गया....उसकी मुट्ठी मजबूती से बन्द थी और उसमें हजार-हजार रुपये के छः नोट थे।

अचानक भागते हुए पैरों की आवाजें गूंजी....चन्दर द्वार पर ठिठककर रुक गया। उसकी दृष्टि संध्या के बाप पर पड़ी और फिर उसने संध्या को देखा।

"यह....यह तूने क्या किया संध्या?"

किन्तु, संध्या के होंठों पर एक सन्तोषमय मुस्कराहट थी। दूसरे ही क्षण वह लड़खड़ाई, उसने झकोले लिए और पिस्तौल उसके हाथ से गिर गई। संध्या चन्दर की बांहों में झूल गई। उन दोनों के पीछे खड़ा हुआ घर का नौकर बुद्धू आश्चर्यचकित, भयपूर्ण दृष्टि से आंखें फाड़े यह दृश्य देख रहा था।

* *

अचानक उसकी भारी-भरकम आवाज अदालत में गूंज उठी।

''अपराधिनी संध्या देवी सुपुत्री दयाराम वर्मा जिस पर अपने पिता दयाराम वर्मा पर पिस्तौल से गोली चलाकर प्राण लेने का अपराध था....मौका वारदात पर उपस्थित साक्षियों, घर के नौकर बुद्धू, टैक्सी ड्राइवर चन्दर वर्मा के बयान, जिस पिस्तौल की गोली से दयाराम की मृत्यु हुई उस पिस्तौल का हत्या के स्थान पर पाया जाना....और पिस्तौल पर अपराधिनी की उंगलियों के चिंहों से यह बात सिद्ध होती है कि दयाराम वर्मा की हत्या अपराधिनी संध्या देवी ने ही की है....इसलिए अदालत अपराधिनी संध्या देवी को अपने पिता दयाराम की हत्या की अपराधिनी ठहराती है। इस सम्बन्ध में अपराधिनी संध्या से बिना किसी दबाव के स्वयं स्वीकार किया है कि उसने अपने पिता दयाराम को उन्हीं की पिस्तौल की गोली से मारा है....साथ ही अपराधिनी संध्या देवी ने हत्या के कारणों पर प्रकाश डालते हुए बयान दिया है कि अपराधिनी संध्या देवी को उसके पिता दयाराम ने किस प्रकार का जीवन व्यतीत करने पर विवश किया था.....उसने संध्या देवी को विवश किया कि वह पूंजीपति युवकों को अपनी सुंदरता के जाल में फांसे और उनसे अपने बाप के खर्चो के लिए रुपये ऐंठे.....उसने चौबीस वर्ष तक संध्या देवी की शादी केवल इसलिए नहीं की कि वह सोने का अंडा देने वाली बत्तख को अपने ही पास रखना चाहता था....नहीं तो उसका ऐश का खर्चा कौन उठाता? दुर्घटना वाली रात को अपने पिता की वासना की बलिवेदी पर, एक ऐसे शिकारी के हाथों, जो वास्तव में शिकारी सिद्ध हुआ, अपने सतीत्व का बहुमूल्य मोती चढ़ा बैठी....यह बात मेडिकल रिपोर्ट से भी सिद्ध होती है कि घटना वाली रात को ही उसकी पवित्रता छीनी गई.....इस रिपोर्ट के लिए अदालत अपराधिनी के चचेरे भाई चन्दर वर्मा का धन्यवाद करती है जिसने न्याय का ध्यान इस ओर आकर्षित कराया....सतीत्व खो देने के बाद अपराधिनी के सब भ्रम एकाएक टूट गए और वह इतनी निराश हो गई। उसे अपने बाप से इतनी अधिक घृणा हो गई कि उसने घर पहुंचकर अपने बाप को गोली मार दी। इस वास्तविकता का ज्ञान होने के बाद अदालत को अपराधिनी से सहानुभूति है.....किन्तु अपराधिनी की हत्या का अपराध चूंकि सिद्ध हो चुका है इसलिए न्याय की दृष्टि में वह हत्यारिन है और इस अपराध में उसे दस वर्ष कठोर कैद का दण्ड दिया जाता है–साथ ही अदालत यह आदेश देती है कि बलपूर्वक अपराधिनी संध्या देवी का सतीत्व बिगाड़ने के अपराध में श्री रमेशकुमार पर मुकदमा चलाया जाए–अपराधिनी ने रमेशकुमार पर यह दोष लगाया है–इसका प्रमाण वे हजार-हजार रुपये के नोट हैं जो अपराधिनी ने अपने पिता को लाकर दिए। छानबीन से यह पता चला है कि ये नोट उसी दिन रमेश कुमार ने बैंक से निकलवाए थे–

जज की आवाज थम गई–अदालत में सन्नाटा छा गया। संध्या के होंठों पर एक सन्तोषजनक मुस्कराहट नाच रही थी–कुर्सियों पर एक ओर बैठे हुए राजन, सुषमा और चन्दर इस प्रकार बैठे थे मानो वे पत्थर की मूर्तियां हों।

* *

संध्या को दो सन्तरी अदालत के कमरे से बाहर लाए। पुलिस की गाड़ी की ओर जाते हुए

सामने उसे राजन, सुषमा और चन्दर दिखाई दिए। संध्या ने उन लोगों पर दृष्टि डाली....फिर उसकी दृष्टि राजन के चेहरे पर जम गई....उसकी आंखों में आंसुओं की नमी तैरती दिखाई दी....फिर वह तेजी से पुलिस की गाड़ी की ओर बढ़ गई।

सुषमा ने एक सिसकी ली और चन्दर धीरे-धीरे उसका कंधा थपकने लगा.....उसकी आंखों में भी आंसू तैर रहे थे...राजन चुपचाप बिना आंखें झपकाए संध्या की ओर देखे जा रहा था।

संध्या पुलिस की गाड़ी में बैठी और गाड़ी अदालत के अहाते से बाहर निकल गई।

* *

राजन ने ट्रक के नीचे से देखा। कुछ लोग एक कार को धकेलते हुए भीतर ला रहे थे। दूसरे ही क्षण राजन एकाएक चौंक पड़ा। कार मर्सिडीज थी ड्राइविंग सीट पर मोहन बैठा हुआ था। कार भीतर आ गई और मोहन की आवाज, आई, "हां....बस ठीक है...."

मर्सिडीज रुक गई। राजन ने ट्रक का आखिरी नट कसा और रेंच लिए हुए ट्रक के नीचे से निकल आया। मोहन कार से उतरा और कार का बोनट खोलकर उसने रुमाल से हाथ पोंछा। इस बीच में राजन कार के पास पहुंच चुका था.....दूसरे कारीगर काम में लगे थे। मोहन ने भीतर झांकते हुए कहा–

"देखो तो मिस्त्री....अचानक चलते-चलते बन्द हो गई है....न जाने क्या खराबी हो गई है।"

मोहन जेब से सिगार निकालकर दांतों से दबाकर सुलगाने लगा....राजन इंजन से झुककर इधर-उधर देखने लगा....न जाने क्यों इस समय उसके मस्तिष्क में एक विचित्र-सांय-सांय हो रही थी....बार-बार उसके अंगों में एक तनाव का भास हो रहा था....वह निचला होंठ दांतों तले दबा कर अपने क्रोध पर नियन्त्रण पाने का प्रयत्न कर रहा था।

"समझ में नहीं आता कुछ।" मोहन ने सिगार सुलगाने के बाद राजन की ओर मुड़कर देखा।

राजन सीधा हुआ और दूसरे ही क्षण मोहन की दृष्टि उसके चेहरे पर पड़ी....वह सन्नाटे में खड़ा रह गया, परन्तु राजन ने बिना उसकी ओर देखे हुए एक लड़के से टाट लाने को कहा। जब टाट आ गया तो उसे बिछा कर वह कार के नीचे रेंग गया।

जब राजन का आधा धड़ कार के नीचे छिप गया तो मोहन के होंठों पर एक मुस्कराहट फैल गई.....एक ऐसी मुस्कराहट जिसमें विजय का भान था।

राजन कार के नीचे लेटा हुआ रेंच चला रहा था.....और उसके मस्तिष्क में लावा सा खौल रहा था। बार-बार उसे संध्या के बाप का विचार आता और मोहन की तस्वीर गडमड होकर रह जाती....उसके होंठ भिंच जाते और क्रोध एवं घृणा के भावों की अधिकता से उसका मस्तिष्क जलने लगता।

थोड़ी देर बाद जब वह कार के नीचे से निकला तो उसकी आंखें स्थिर थीं और चेहरे पर एक

गहरी सांत्वना थी। उसने एक बार फिर बोनट उठाया और इंजन में हाथ चलाता रहा....फिर उसने बोनट बन्द करके एक कारीगर को कार में बैठकर इंजन स्टार्ट करने को कहा। कारीगर ड्राइविंग सीट पर बैठा और दूसरे ही क्षण इंजन स्टार्ट होकर शोर मचाने लगा। राजन के संकेत पर कारीगर इंजन बन्द करके उतर आया। मोहन ने मुस्कराकर राजन से पूछा-

"क्या मजदूरी हुई मिस्त्री साहब?"

राजन ने मोहन की ओर देखे बिना जेब से सिगरेट का पैकेट निकालते हुए कारीगर से कहा, "सेठ साहब से दस रुपये ले लो।"

फिर वह ट्रक की ओर बढ़ गया। मोहन ने मुस्कराकर दस रुपये का नोट कारीगर को दिया और कार में बैठ गया। कार स्टार्ट हुई और घूमकर फाटक से बाहर निकल गई। राजन फिर ट्रक पर सवार हो गया उसके मस्तिष्क में एक हलचल-सी मची थी,आंखों में गहरी बेचैनी थी....एकाएक उसके चेहरे पर एक भूचाल-सा दिखाई दिया और वह फुर्ती से ट्रक से उतर आया और बड़े व्याकुल भाव में उसने इधर-उधर देखा....फिर एक कारीगर को सम्बोधित करके बोला, "ऐ शम्भू! जरा जल्दी से इधर आना।"

"क्या बात है दादा?" शम्भू लपककर आ गया।

"चल फुर्ती से ट्रक स्टार्ट कर और उस सेठ की कार के पीछे चल जो अभी-अभी गया है।"

"क्यों?" शम्भू ने आश्चर्य से पूछा, "वह तो दाम दे गया है।"

"अब चल....वाद-विवाद न कर...."

शम्भू झट उछलकर ट्रक में सवार हो गया। राजन इतनी देर में एक मोटा-सा रस्सा उठा चुका था जो गाड़ियों के अगले या पिछले भाग उठाने के काम आता था। इसमें आगे एक मजबूत मोटा-सा लोहे का कांटा लगा हुआ था। राजन ने फुर्ती से रस्से का एक सिरा, मजबूती से ट्रक के अगले बम्फर में बांधा और रस्से का लच्छा बनाकर कांटा हाथ में पकड़कर उछल कर ट्रक के बोनट पर बैठ गया।

कुछ ही देर में ट्रक गैरेज से निकलकर बिजली की सी गति से सड़क पर दौड़ रहा था। लम्बी सुनसान सड़क पर बहुत दूर मोहन की मर्सिडीज दौड़ती दिखाई दे रही थी। राजन ने शम्भू से कहा, "और तेज....शम्भू और तेज...."

शम्भू ने ट्रक की गति और तेज कर दी....उसकी समझ में कुछ न आ रहा था। मर्सिडीज बिजली की सी गति से दौड़ती जा रही थी और अब वह ऐसे झकोले खा रही थी जैसे उसकी गति उसके अधिकार से बाहर हो गई हो। ट्रक की गति भी प्रतिक्षण बढ़ती जा रही थी किन्तु राजन शम्भू को तेज और तेज की रट लगाए जा रहा था।

फिर थोड़ी देर बाद ट्रक मर्सिडीज से केवल चन्द ही गज के अन्तर पर दौड़ रहा था। मर्सिडीज ऐसे हिचकोले खा रही थी जैसे वह अभी फुटपाथ पर चढ़कर अभी किसी पोल से टकरा जाएगी या किसी आती हुई सवारी से....दूसरी ओर से आती हुई गाड़ियों से मर्सिडीज एक लहर

लेकर बचती और राजन का मस्तिष्क बुरी तरह झनझनाकर रह जाता....वह कौनसी शक्ति थी जो उसे इस प्रकार दौड़ने पर विवश कर रही थी। इस बात पर शायद उसका दिमाग विचार ही न कर रहा था।

जब ट्रक और मर्सिडीज का अन्तर बहुत ही कम रह गया तो राजन ने रस्से वाला हाथ झुलाया और कांटा मर्सिडीज के पिछले बम्पर पर फेंका। कांटा तिरछा पड़ा और टकराकर लौट आया। राजन ने शीघ्र रस्सा समेट लिया। मर्सिडीज ने एक बड़ा-सा हिचकोला खाया और सामने से एक पेट्रोल-टैंक के ट्रक से टकराते-टकराते बची। राजन का हृदय जोर-जोर से धड़क रहा था...चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं। धीरे-धीरे मर्सिडीज रेलवे क्रासिंग के निकट होती जा रही थी जिसका फाटक बन्द था। वहां पहले ही से कई गाड़ियां खड़ी थीं....राजन के रोंगटे खड़े हो गए।

अब यह बात शम्भू की समझ में भी आ गई थी कि मर्सिडीज के ब्रेक फेल हो चुके हैं। किसी भी क्षण वह एक्सिडेन्ट का शिकार हो सकती है;...वह बड़ी सावधानी से ट्रक ड्राइव कर रहा था।

राजन ने एक बार फिर हाथ को संभाल कर रस्सा हिलाया और कांटा मर्सिडीज के पिछले बम्पर पर फेंका....कांटा झटके से मर्सिडीज की पिछली खिड़की से जा टकराया, शीशा चूर-चूर हो गया किन्तु, कांटा सीधा होकर पिछली खिड़की में अटक गया....राजन हाथ हिला कर चिल्लाया, "शम्भू! ब्रेक लगा....ब्रेक लगा...."

रेलवे क्रासिंग निकट आता जा रहा था....शम्भू ने सोचा एक साथ ब्रेक लगाने से रस्सा टूट भी सकता है या कांटा खिड़की के चादर फाड़ कर निकल सकता है, सो उसने धीरे-धीरे ब्रेक लगाने आरंभ कर दिए। ट्रक की गति के साथ ही मर्सिडीज की रफ्तार भी कम होती चली गई।

अचानक ट्रक रुका और इसके साथ ही मर्सिडीज भी रुकी.....इस समय मर्सिडीज का अन्तर क्रॉसिंग के पास खड़े हुए एक बड़े ट्रक से केवल चन्द फुट रह गया था।

राजन फुर्ती से ट्रक के बोनट से कूदकर उतरा और मर्सिडीज के पास पहुंचा। मर्सिडीज का इंजन बन्द हो चुका था और स्टेयरिंग पर सिर रखे मोहन इस प्रकार हांफ रहा था मानो वह हजारों मील की चढ़ाई चढ़ कर अभी-अभी आया हो। राजन चुपचाप मोहन को देखता रहा। कुछ देर बाद मोहन ने स्टेयरिंग से सिर उठाया और राजन की ओर देखा....राजन को देखकर वह अनायास चौंक पड़ा।

थोडी देर बाद मोहन गहरी-गहरी सांस लेता हुआ मर्सिडीज से नीचे उतरा.....उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं और वह वर्षो का बीमार दिखाई पड़ता था.....उसने गाड़ी के पीछे खिड़की से लगे कांटे को देखा, फिर उस रस्से को देखा जो ट्रक के बम्पर से बंधा था....फिर एक गहरी सांस लेकर वह राजन की ओर मुड़ा। राजन के चेहरे पर फिर पहले जैसी कठोरता आ गई थी। मोहन धीरे-धीरे चलता हुआ राजन के पास पहुंचा। राजन ने जेब से सिगरेट का पैकेट निकाला....एक सिगरेट सुलगाई और तीली हवा में उछालते हुए बोला, "मैंने आपको मरने से बचा लिया है।"

"मरने क्यों नहीं दिया?" मोहन राजन की आंखों में देखता हुआ व्यंग्यपूर्ण ढंग से मुस्कराकर बोला–

"इसलिए कि आप मर जाते तो वह इन्तकाम अधूरा रह जाता....शत्रु के प्राण ले लेना कोई बदला नहीं है....आपको जीवित रहना है और एक दिन यह देखना है कि जो कुछ आपने मुझसे छीना है उस पर केवल आप ही भगवान के घर से अपना अधिकार लिखवाकर नहीं लाए....और आपके छीन लेने से मैं आयु-भर के लिए निर्धन और कंगाल नहीं हो गया.....शीघ्र ही वह समय आने वाला है जब मैं भी आप ही के समान एक बढ़िया मर्सिडीज में सवार होकर आपके सामने से इस ठाट से गुजरूंगा जिस ठाट-बाट से आप मेरा अधिकार छीन कर मेरे सामने से गुजरते हैं।"

फिर राजन तेजी से मुड़ा और ट्रक में जा बैठा। शम्भू ने पिछली खिड़की से कांटा निकला.....रस्सा खोलकर ट्रक में रखा और राजन के साथ जा बैठा। जब ट्रक घूमकर वापस चला गया तो राजन के होंठों पर एक विजयी मुस्कराहट नाचने लगी थी।

* *

काम करते-करते थककर राजन थोड़ी देर आराम करने के लिए कार के मडगार्ड पर बैठ गया और कारीगर से बोला, "जरा बाहर वाले से एक चाय तो मंगवाओ।"

कारीगर दौड़ता हुआ बाहर चला गया। राजन पैकेट निकाल कर सिगरेट सुलगाने लगा। कार के मालिक सूटेड-बूटेड व्यक्ति ने अखबार पढ़ते-पढ़ते राजन की ओर देखा और मुंह बनाकर बोला, "भई! मुझे जरा जल्दी है...."

"आप ही का काम हो रहा है साहब।" राजन ने सिगरेट सुलगाते हुए कहा, "दो घण्टे से अधिक हो गए लगे लगे-चन्द मिनट सुस्ताने तो दें।"

"सुस्ताने के लिए तो पूरी रात पड़ी है..." वह व्यक्ति झल्लाकर बोला, "मैं लेट हो गया तो मैनेजर से भेंट भी न हो सकेगी..."

राजन उठ खड़ा हुआ। उसने सिगरेट के दो गहरे कश लिए और उस व्यक्ति की आंखों में देखता हुआ बोला, "यहां जो भी काम कराने आता है हवा के घोड़े पर सवार आता है....हम लोग इन्सान है मशीन नहीं कि थकान का भान ही न हो....और फिर मशीन को भी आराम की आवश्यकता होती है।"

राजन के तेवर देखकर व्यक्ति कुछ नर्म पड़ गया और खुशामद भरे स्वर में बोला, "तुम नहीं समझ सकते भाई। यह मेरे भाई के भविष्य का प्रश्न है....मुझे हर हालत में पांच बजे से पहले जेमसन कम्पनी के मैनेजर से मिलना है। मेरा भाई इंजीनियर है....मैं जेमसन कम्पनी के मैनेजर के नाम एक सिफारिशी पत्र लाया हूं....यदि काम बन गया तो मेरे भाई को पांच हजार रुपये महीने की नौकरी मिल जाएगी।"

राजन ने ध्यान से उस व्यक्ति के चेहरे को देखा....कितनी तड़प थी अपने भाई के लिए इस व्यक्ति के चेहरे पर....राजन के हृदय में एक ज्ञात-सी हूक उठी....उसी समय कारीगर चाय लेकर आ गया राजन ने कहा, "पी ले तू....मैं थोड़ी देर बाद पी लूंगा।"

राजन कार के पास आ गया। उस व्यक्ति के चेहरे पर धन्यवाद कहती हुई मुस्कराहट आ गई। वह राजन के पास खिसककर बोला–

"क्षमा करना मिस्त्री....मैं झुंझलाहट में जरा कठोर शब्दों में कुछ कह गया था। तुम नहीं जानते मैं अपने भाई के लिए कितना चिन्तित हूं....बड़ी कठिनाई से मैंने उसे इंजीनियरिंग पढ़ाई है....किन्तु, दो वर्षों से बेकार फिर रहा है;...कहते हैं हिन्दुस्तान में टैकनिकल हैन्डस का अभाव है....हजारों युवक इंजीनियरी पास करके बेकार फिर रहे हैं।"

"जब हर तीसरा व्यक्ति इंजीनियर बन जाएगा तो यही होगा।" राजन ने रेंच चलाते हुए कहा, "आप उसके बड़े भाई हैं?"

"बड़ा भाई ही छोटे भाई के भविष्य के लिए इतना चिन्तित हो सकता है....बेकार फिरते-फिरते लड़का बिगड़ा जा रहा है....मैं उसका मन नहीं तोड़ सकता.....जो मांगता है खर्च के लिए देता हूं....कहीं वह यह न समझने लगे कि बड़ा भाई मेरी बेकारी से तंग आ गया है और अब पीछा छुड़ाना चाहता है।"

राजन के मन में एक विचित्र-सी हलचल हो रही थी....एक हूक....एक कसक....एक विशेष सी तड़प....उसने उस व्यक्ति से पूछा–

"क्या नौकरी है जेमसन एण्ड जेमसन में...."

"नौकरी क्या? कुछ समय गुजरना है.....वास्तव में मेरी अपनी फैक्टरी में ही काम निकलने वाला है....किन्तु चन्द महीने और भाई बेकार रहा तो बिल्कुल नाकारा हो जाएगा....दोस्त-यार बस हा-हा, हू-हू के ही साथी होते हैं....इसीलिए सोचा है जेमसन एण्ड

जेमसन में कुछ दिन लगा रहेगा तो कम से कम समय अनुकूलता तो सीख जाएगा....मैं जानता हूं वह बहुत सख्त काम नहीं कर सकता...जेमसन एण्ड जेमसन अपने यहां तैयार होने वाली कारों के कुछ खास पुर्जे विदेश से मंगवाती है....किन्तु धीरे-धीरे इन पुर्जों को भारत में तैयार करने की योजना बन रही है....उनमें से एक पुर्जा ऐसा है जो यहां के बड़े-बड़े इंजीनियरों को भी चक्कर में डाले हुए है। उस पुर्जे की तैयारी के लिए फर्म छः छः महीने के लिए इंजीनियर नौकर रखती है....छः महीने तक वह सफल नहीं होते तो समझौते के अनुसार उन्हें अलग कर दिया जाता है और नये किसी इंजीनियर को प्रयोग का अवसर दिया जाता है। मैं जानता हूं मेरा भाई वह पुर्जा नहीं बना सकता किन्तु छः महीने तक पांच हजार रुपये महीना तो कमा ही लेगा....यदि छः महीने बाद भी कोई काम न मिला तो पैसे से कोई धंधा ही कर लेगा।"

"किन्तु यह तो अच्छी बात नहीं, यह तो केवल स्वार्थता है....आप जानते हैं कि आपका भाई वह पुर्जा नहीं बना सकता, फिर भी आप उसे वह नौकरी दिवाना चाहते हैं....यह तो समाज और देश से द्रोह होगा।"

"अरे भई आजकल अपने कर्तव्यों में कौन ईमानदारी बरतता है....आपने सुना नहीं गंगा के उस पुल के विषय में जिसका बजट तैयार हुआ, पुल कागजों पर बना, रकम दे दी गई और जब निरीक्षण के लिए सरकारी कमीशन गया तो उस स्थान पर कभी कोई पुल नहीं बना था।"

राजन कुछ न बोला। वह चुपचाप इंजन की मरम्मत करता रहा।

दस मिनट बाद कार ठीक हो गई। उस व्यक्ति ने मरम्मत का बिल चुकाया और इतनी शीघ्र काम पूरा करने पर राजन का धन्यवाद करके चला गया। उसके चले जाने के बाद राजन ने सिगरेट सुलगाया और वहीं एक दूसरी गाड़ी के मडगार्ड पर बैठते हुए उसने एक कारीगर को चाय लाने के लिए कहा। उसकी दृष्टि अचानक ही उस अखबार पर पड़ी जिसे वह व्यक्ति पढ़ रहा था। राजन ने अखबार उठा लिया। अखबार तह किया हुआ था और सबसे ऊपर ही एक इश्तहार पर राजन की दृष्टि पड़ी जिसके गिर्द लाल पेंसिल से हाशिया खींच दिया गया था। यह अखबार वह व्यक्ति शीघ्रता में यहीं भूल गया था। इश्तहार के बीच में एक पुर्जे की तस्वीर थी जिसे बनाने के लिए जेमसन कम्पनी को किसी कुशल इंजीनियर की आवश्यकता थी।

राजन बड़े ध्यान से उस पुर्जे की तस्वीर देखता रहा।

* *

शंकर ने राजन को मुस्कराकर देखा और बोला–

"आओ बैठो....आज इधर कैसे चले आए?" फिर शंकर ने नौकरानी को पुकारा, "जरा दो प्याली चाय बना देना काकी।"

"यह इश्तहार देखा है तुमने दादा?"

शंकर ने विज्ञापन पर एक दृष्टि डाली और मुस्कराकर बोला, "तो तुम्हारे दिमाग में यह

सनक समा गई?"

"मैं समझा नहीं..." राजन ने आश्चर्य से पूछा।

"इस चक्कर में पड़कर मैं भी अपना बहुत-सा समय और धन नष्ट कर चुका हूं।" शंकर ठंडी सांस लेकर बोला, "वास्तव में मुझे यह जेमसन एण्ड जेमसन कम्पनी की सनक ही लगती है....इसमें शायद वे लोग कभी सफल न हों....जेमसन एण्ड जेमसन विभाजन से पूर्व एक यूरोपियन फैक्टरी थी....इस फैक्टरी की बड़ी फैक्टरी इंग्लैंड में, हैम्पशायर में है। यहां वह फर्म यूरोप में खुली गाड़ियों का आयात करके असेम्बल करती थी। जो-जो पुर्जे यहां तैयार होते गए उनका आयात बन्द होता गया....जो पुर्जे यहां न बन सके वे हैम्पशायर से आते रहे.....अब एक पुर्जे को छोड़कर शेष सभी पुर्जे यहां बनते हैं....इस एक पुर्जे को यूरोप से ही इम्पोर्ट करते हैं.....और यूरोप वालों ने इसका मूल्य इतना बढ़ा दिया है कि मुबादले की बहुत-सी धनराशि इसमें चली जाती है। पिछले दो वर्षों से जेमसन वाले इस पुर्जे को देश में ही बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। पहले ये लोग अपने नियुक्त इंजीनियरों से प्रयोग करवाते रहे और जब उनके अपने इंजीनियर यह बनाने में सफल न हो सके तो उन्होंने देश-भर में विज्ञापन द्वारा इस पुर्जे को बनाने के लिए आमंत्रित किया। आरम्भ में वे प्रत्येक इंजीनियर को एक-डेढ़ महीने के लिए नियुक्त करते थे और असफल होने पर वह अलग कर दिया जाता था किन्तु बाद में यह अनुभव किया गया कि एक-डेढ़ महीना इतने प्रयोग के लिए थोड़ा है इसका समय बढ़ा कर छः महीने कर दिया गया और वेतन पांच हजार रुपया....किन्तु खेद यह है कि हमारे देश में राष्ट्रीय और सामाजिक, लाभों की अपेक्षा निजी लाभ उत्तम समझे जाते हैं....सुना गया है कि जेमसन एण्ड जेमसन कम्पनी में ऐसे-ऐसे इंजीनियर नियुक्त हुए हैं जो निर्माण शक्ति और बुद्धि में बिल्कुल कोरे थे.....बड़े-बड़े मन्त्री और अधिकारीगण पूंजीपतियों की सिफारिशें लेकर पहुंचे हैं और खाया-पिया है, मौज की है और निश्चित समय के बाद निकल आए हैं....इसलिए जेमसन एण्ड जेमसन निराश भी हो गए हैं और इस प्रकार की नियुक्ति बड़ी सावधानी से करते हैं ताकि फर्म का धन व्यर्थ में न जाए....साथ ही अब उन्होंने इस प्रकार की योजना भी रखी कि इस पुर्जे के निर्माण के लिए यह आवश्यक नहीं कि इंजीनियर केवल डिग्री पाया हुआ ही हो....यदि कोई और कारीगर भी इसे ठीक से बना सके तो वे उसका स्वागत करेंगे और न केवल उसे इस सफल प्रयोग के लिए कम्पनी की ओर से पचास हजार रुपया मिलेगा बल्कि वह आजीवन वेतन पर फर्म का अधिकारी बना दिया जाएगा...छः महीने के एग्रीमेंट पर सफल प्रयोग करने पर इंजीनियर का समय आवश्यकता अनुसार बढ़ाया भी जा सकता है...इसके अतिरिक्त निजी तौर पर भी स्वयं कोई यह पुर्जी तैयार करके कम्पनी की तसल्ली कर सकेगा, तो भी कम्पनी यह सब लाभ उसे देगी। इस सम्बन्ध में मैंने स्वयं भी महीना-भर तक सिर खपाया और छः-सात हजार रुपया भी नष्ट किया किन्तु सफल न हो सका...हार कर मैंने इस ओर ध्यान देना ही छोड़ दिया।"

"ऐसी क्या बात है इस पुर्जे में?"

"यह तो समझ में नहीं आता...किन्तु यह पुर्जा इतना महत्वपूर्ण है कि न केवल जेमसन एण्ड जेमसन की तैयार की हुई एक विशेष मॉडल की गाड़ी में इसका प्रयोग होता है बल्कि इसी प्रकार

के मॉडल की दूसरी फर्मों की गाड़ियों में भी सुविधा से चलता है...यदि जेमसन एण्ड जेमसन इस प्रयोग में सफल हो गई तो न केवल अपनी ही गाड़ियों के विषय में वह आत्म-निर्भर हो जाएंगे बल्कि दूसरी फर्मों को भी इसकी सप्लाई कर सकेंगे...इस प्रकार लाखों पौंड वार्षिक की मुबादले की राशि की बचत हो जाएगी...किन्तु; जेमसन एण्ड जेमसन इस प्रोजेक्ट पर लाखों रुपये खर्च करने पर भी सफल नहीं हुई।"

राजन चुपचाप सोच में डूबा बैठा रहा। शंकर ने ध्यानपूर्वक उसका चेहरा देखा, फिर मुस्कराकर बोला, "इस सनक को मन से निकाल दो राजन! वरना जो कुछ कर रहे हो वह भी हाथ से निकल जाएगा!"

"साथ में कुछ-न-कुछ तो प्राप्त हो ही जाएगा।" राजन ने गम्भीरता से कहा।

इतने में काकी चाय लेकर आ गई। राजन और शंकर प्यालियां उठाकर धीरे-धीरे चुस्कियां भरने लगे। कुछ देर बाद राजन ने धीरे से पूछा, "कोई ऐसी भी गाड़ी अपने गैरेज में है जिसमें यह पुर्जा प्रयोग होता है?"

"मेरी निजी कार ही टूटी पड़ी है...एक कारीगर ने ट्रक से एक्सीडेन्ट कर दिया था।"

"मैं उसमें से यह पुर्जा निकाल लूंगा।"

"तुम अपना निश्चय बदलोगे नहीं?"

"यही तो पागलपन है मेरे दिमाग में...जो निश्चय एक बार कर लूं...उसे बदल नहीं सकता।"

"कोई बात नहीं..." शंकर मुस्कराया, "तुम भी अपना पागलपन आजमा लो...गैरेज का एक भाग अपने प्रयोग के लिए अलग कर लो...जिन कल-पुर्जों और हथियारों की इसके लिए आवश्यकता पड़ सकती है वह मैं अपने प्रयोग के लिए खरीद ही चुका हूं...तुम्हें दो-चार हजार से अधिक रुपये नहीं लगाने पड़ेंगे...इस सम्बन्ध में जो सहायता मुझसे बन पड़ेगी वह भी दूंगा...सम्भव है इस काम पर अभी तक किसी ने मन लगाकर गम्भीरता से एकाग्र होकर ध्यान ही न दिया हो...मेरा दिमाग बुढ़ापे की ओर अग्रसर है, तुम युवक हो, तुम्हारी बुद्धि तीव्र है...मैं तुम्हारी लगन और धुन भी देख चुका हूं...मैं शीघ्र निराश हो गया था, यदि एक महीना और जमकर लगा देता तो शायद सफल हो जाता...हो सकता है तुम्हारा धन और लगन तुम्हें सफलता की मंजिल तक पहुंचा दें...कल ही काम आरम्भ करने के लिए दो हजार रुपये ले लेना।"

"इसकी आवश्यकता नहीं दादा! दस-बारह हजार तो मेरे पास भी निकल आएंगे..." राजन ने गंभीरता से कहा।

"दस-बाहर हजार?" शंकर ने आश्चर्य से पूछा।

"हां दादा! मैंने केवल कमाया है गंवाया नहीं...जब से गैरेज का काम संभाला है गैरेज और घर के बाहर की दुनिया से अनभिज्ञ हूं...दूसरे मिस्त्रियों के समान थकान से मुक्ति पाने के लिए

दस-पांच रुपये ठर्रे या व्हिस्की पर नष्ट नहीं करता...थ्री फाइव मेरे प्रिय सिगरेट थे किन्तु अब मैं कैवेण्डर पीता हूं....."

शंकर ध्यान और आश्चर्य से राजन को देखता रहा, फिर धीरे से बोला, "थ्री फाइव...यह सिगरेट तो कोई करोड़पति या राजकुमार ही पी सकता है..."

"मैं भी अपने समय का प्रिंस हूं..." राजन फीकी-सी मुस्कराहट के साथ बोला, "किसी पतलून पर उंगली का हल्का-सा दाग लग जाता तो उसे उतारकर लांडरी भिजवा देता था।"

"तुम्हारी सूरत और व्यवहार से तो यही प्रतीत होता है कि तुम किसी धनी और ऊंचे घराने के सदस्य हो...किन्तु तुमने किस प्रकार अपने-आपको हालात के सांचे में ढाला है, भगवान की कसम, राजन! मैं विश्वास से कहता हूं कि तुम जिस काम पर भी लग जाओ उसमें कोई शक्ति सफल होने से नहीं रोक सकती..."

राजन के चेहरे पर एक दृढ़ निश्चय झलक उठा।

* *

सुषमा टिफिन-कैरियर बन्द करते-करते चौंक पड़ी...उसने कोठरी के सामने किसी गाड़ी के इंजन का झन्नाटा सुना था जो तुरन्त ही बन्द हो गया...फिर चन्द ही क्षण बाद चन्दर ने कोठरी में प्रवेश किया...उसके चेहरे पर थकान के चिन्ह थे। चन्दर ने एक दृष्टि सुषमा की ओर डाली और मटके की ओर बढ़ता हुआ बोला, "ला, शीघ्र से खाना निकाल दे...यह राजन अभी तक खाना खाने नहीं आया।"

"वह तो सप्ताह-भर से रात को भी नहीं आ रहे...मैं ही खाना पहुंचा देती हूं..." सुषमा खाना निकालते हुए बोली, "मेरी समझ में नहीं आता तुम दोनों को क्या हो गया है...तुम दिन-रात भर टैक्सी चलाते हो और वह चौबीस घण्टे मशीनरी से उलझे रहते हैं...आखिर इतना धन कमाकर तुम लोगों को महल खड़े करने हैं क्या?"

"महल भी खड़े किए जा सकते हैं।" चन्दर हाथ पोंछकर पटरे पर बैठता हुआ बोला, "तू नहीं जानती राजन क्या कर रहा है...चौबीस-चौबीस घण्टे के निरन्तर परिश्रम के साथ ही दस-बारह हजार रुपया अपना भी लगा चुका है...दो-चार हजार शंकर दादा से लेकर समाप्त कर चुका है...यदि मैं रात-रात भर टैक्सी न चलाऊं तो उसका यह पागलपन यहीं का यहीं रह जाए।"

"आखिर मैं भी तो सुनूं कैसा पागलपन है यह, जिसमें इतना समय और धन नष्ट किया जा रहा है..."

"नष्ट नहीं किया जा रहा पगली! यह वह दांव लगाया जा रहा है जो भगवान से जुआ खेलते समय लगाया जाता है...मुझे विश्वास है कि लगन और उसके परिश्रम के आगे भगवान यह दांव अवश्य ही हारेगा...और जानती है फिर क्या होगा?" चन्दर ने ठंडी सांस ली और मुस्कराकर बोला, "हम इस कोठरी में रह जाएं शायद और राजन पलक झपकते ही जाने कहां पहुंच जाए।"

सुषमा चुपचाप खाना निकालने लगी।

* *

चन्दर ने फाटक के पास टैक्सी रोककर सुषमा को उतार दिया और सुषमा टिफिन का डिब्बा उठाये हुए भीतर चली आई। गैरेज के एक कोने से किसी मशीनरी के चलने की ध्वनि सुनाई दे रही थी। सुषमा उसी ओर बढ़ गई। वह उस शेड के पास पहुंचकर रुक गई। जहां राजन बड़ी तन्मयता से हाथ चला रहा था। उसके बाल बिखरे हुए थे और दाढ़ी बढ़ी हुई थी मानो कई दिन से शेव न बनाया हो...उसे सुषमा के अपने निकट पहुंचने की भी सूचना नहीं हुई।

सुषमा चुपचाप राजन का चेहरा देखती रही...यह राजन का चेहरा कहां था? यह तो एक फौलादी चट्टान का चेहरा था जिससे एक अलौकिक प्रकाश फूट रहा था....थोड़ी देर बाद सुषमा ने राजन के कंधे पर धीरे से हाथ रख दिया....राजन चौंका नहीं....वह निरन्तर हाथ चलाता रहा....उसके होंठों पर एक सन्तोषजनक मुस्कराहट रेंग गई।

"सुषमा आ.....गईं तुम...."

"थोड़ी देर तो आराम कर लीजिए...." सुषमा ने धीरे से कहा।

"आज की रात आराम की रात नहीं है सुषमा!" राजन का हाथ वैसा ही चल रहा था, "कल का सूरज तुम्हारे राजन के लिए एक नया प्रकाश लेकर आने वाला है।"

"इतने ही समीप हो सफलता के?"

"सफल हो चुका हूं सुषमा! गगनमुखी पर्वत टुकड़े-टुकड़े हो चुका है....अब तो केवल मार्ग साफ कर रहा हूं...."

राजन के मुख पर उन्माद भरी मुस्कराहट थी और आंखों से एक विचित्र प्रकाश फूट रहा था। सुषमा के शरीर में एक प्रसन्नता की झुरझुरी-सी दौड़ गई....उसने राजन के कंधे से सिर लगा दिया और धीरे से बोली, "खाना तो खा लो...."

"हां अवश्य खाना खाऊंगा...." राजन ने अचानक मशीन बन्द कर दी।

फिर धीरे से राजन सुषमा की ओर मुड़ा और उसे दोनों कंधों से पकड़कर उसकी आंखों में झांकता हुआ बोला, "आज मैं कांटों-भरे मार्ग से गुजरकर सफलता की उस मंजिल पर पहुंच चुका हूं सुषमा! जहां मेरे सपनों की तस्वीरें मेरे पांव में शीश नवा रही हैं....जानती हो मुझे यह सफलता किसने प्रदान की है।"

"आपके साहस ने....आत्मविश्वास ने..."

"नहीं, सुषमा....साहस आत्मविश्वास, मन की दृढ़ता ये मानव के मजबूत हथियार हैं जिन्हें उठाने वाले हाथ में एक शक्ति की भी आवश्यकता होती है....एक बल चाहिए....और उस हाथ में शक्ति नहीं उत्पन्न हो सकती जिस हाथ के हृदय में प्यार नहीं....प्यार मानव को हर निश्चय

और साहस प्रदान करता है जो संसार की कोई भी दूसरी शक्ति नहीं कर सकती....कई अच्छे-अच्छे मस्तिष्क केवल इसलिए नष्ट हो जाते हैं कि उन्हें प्यार की शक्ति नहीं मिलती....वे इस अमृत से वंचित रहते हैं....उनकी कला और निर्माण-शक्ति निराशा और झुंझलाहट का शिकार हो जाती है जो दुनिया उन्हें घृणा और ठोकरों के रूप में देती है....प्यार....मां का हो, भाई का हो, बहिन का हो....या अपने प्रीतम का प्यार हो....मानव के लिए बहुत बड़ा आश्रय, बहुत बड़ी शक्ति है....मुझे शक्ति तुमसे मिली है....चन्दर से मिली है....आज तुम लोगों की प्रेरणा मेरे साथ न होती तो मैं सचमुच शायद एक दीवाना राजन होता....किन्तु आज...जानती हो....जब मैं चौबीस घन्टे तक काम करता हूं....और रात का वह समय निकट आता है जब तुम मेरे लिए खाना लेकर आती हो तो मेरे अन्तर में एक नया निश्चय एक नया साहस जन्म लेता है....एक नई ताजगी मिलती है.....और जब तुम सामने आती हो तो मेरी सारी थकान दूर हो जाती है।"

"राजन बाबू!" सुषमा बड़े स्नेह से राजन के कंधे से लग गई।

दूसरी सुबह सबसे पहले शंकर गैरेज में आया। गैरेज में गहरा सन्नाटा था.....जिस शैड में राजन काम करता था वहां भी मौन था.....मशीनरी बन्द थी। शंकर का हृदय किसी अज्ञात शंका से धड़क उठा। वह धीरे-धीरे बोझल पांव से शैड की ओर बढ़ा। एकाएक वह राजन को देखकर चौंक पड़ा। राजन अपनी मैली-कुचैली डांगरी में जमीन पर चित-लेटा हुआ गहरे खर्राटे ले रहा था.....टोपी से उसका चेहरा ढका हुआ था और दोनों हाथ सीने पर बंधे हुए थे....उसके हाथ में कई स्थानों पर खराशें थी जिनमें कालिख की लकीरें भरी हुई थीं....शंकर का मन डूब-सा गया। उसने बड़बड़ाए स्वर में पुकारा, "राजन....!"

राजन की नींद शायद टूट गई, क्योंकि खर्राटों का तांता सहसा रुक गया। चन्द क्षण बाद ही राजन ने हल्की-सी एक सिसकी ली और उसका हृदय बुरी तरह धड़क उठा....फिर उसकी सिसकियां कुछ तेज हो गईं। शंकर के चेहरे पर कई सलवटें-सी उभर आईं;...वह धीरे से बोला, "पागल हुआ है लड़के! आदमी दांव लगाता है तो दोनों में से एक चीज मिलती है....या हार, या जीत....हारने वाला यदि तुम्हारे ही समान हाथ-पैर छोड़ बैठे तो आदमी जीवन के प्रति ही निराश हो जाए...चल, उठ खड़ा हो। नरक में झोंक सब कुछ....तू एक कुशल मिस्त्री है और वह हुनर तुझसे कोई नहीं छीन सकता..."

फिर शंकर अपनी डबडबाई आंखों को छिपाने के लिए पीठ मोड़कर खड़ा हो गया.....कुछ देर बाद राजन ने पीछे से उसके गले में बांहें डाल दीं....उसकी सिसकियां और तेज हो गईं....शंकर ने आंसू पोंछकर प्यार से उसके दोनों हाथ थपथपाए....फिर अचानक उसकी दृष्टि राजन के एक हाथ में दबे पुर्जे पर पड़ी। शंकर चौंक पड़ा और इतनी तेजी से राजन की ओर मुड़ा जैसे उसे स्प्रिंग ने उछाल दिया हो। झपटकर उसने राजन के हाथ से पुर्जा ले लिया और पागलों की भांति उसे चारों ओर से उलट-पलट कर देखने लगा....फिर आंखें फाड़कर उसने राजन को देखा। राजन के होंठ कंपकंपपाए और उसके मुंह से बहुत धीमे स्वर में निकला, "मैं सफल हो गया....शंकर दादा! मैं सफल हो गया।"

दूसरे ही क्षण वह शंकर के कंधे से लगकर सिसकियां लेने लगा। शंकर ने पागलों के समान

उसे भींच लिया और बार-बार उस बाप के समान प्यार करने लगा जिसका बेटा देश-भर में परीक्षा में प्रथम आया हो....अधिक प्रसन्नता में वह कुछ बोल न पा रहा था।

* *

जेमसेन एण्ड जेमसन के मैनेजर ने घंटी बजाकर चपरासी को बुलाया और पुर्जे को देखता हुआ बोला, "मिस्टर राजन को भीतर भेज दो..."

चपरासी के जाने के बाद मैनेजर पाइप में तम्बाकू भरकर उसे सुलगाने लगा। थोड़ी देर बाद राजन भीतर आया और मैनेजर को देखते ही ठिठक गया। मैनेजर ने कुर्सी की पीठ से टेक लगाए मुस्कराकर कहा, "आइए मिस्टर राजन! विराजिए।"

राजन धीरे-धीरे चलता हुआ आगे बढ़ा और कुर्सी खींचकर बैठ गया। मैनेजर ने ध्यान से उसे देखते हुए कहा, "तो आप भी उसी पुर्जे के सम्बन्ध में आए हैं?"

"जी...." राजन ने धीरे से कहा।

"देखिए मिस्टर राजन!" मैनेजर सीधा होता हुआ बोला, "हमारी फर्म इस पुर्जे के लिए लाखों रुपये खर्च कर चुकी है....किन्तु, अभी तक सफलता के नाम से एक पग भी आगे नहीं बढ़ी....अब हमारी फर्म हैम्पशायर के एक इंजीनियर की सेवाएं उपलब्ध कर रही है....उसे स्थायी तौर पर यहां नियुक्त किया जाएगा इसलिए यह प्रयोगों का चक्कर समाप्त कर दिया गया है....इन अढ़ाई वर्षों में हमें बड़ी निराशा का सामना करना पड़ा है....आश्चर्य है कि हमारे युवक इंजीनियरों में कोई इतना योग्य नहीं कि किसी यूरोपियन इंजीनियर का मुकाबला कर सके....यदि यही बुद्धि और सूझ-बूझ का अकाल रहा तो इस देश के भविष्य का क्या होगा....क्या हम सदा दूसरे देशों के अधीन रहेंगे इन बातों में?"

"हैम्पशायर से इंजीनियर बुलाया जा रहा है वह तो आपके इंजीनियरों को शिक्षा दे सकता है....उनको ट्रेनिंग दे सकता है।"

"असम्भव है....हम यूरोप के विचार को भली भांति जानते हैं....वे अपनी कला इतने सस्ते दामों में नहीं देते....यदि वे ऐसा करते तो संसार में इतने आगे न होते....आजकल देश अपना धन विदेशी मुद्रा के बदले से ही तो बढ़ाते हैं।"

"फिर आपको इस यूरोपियन इंजीनियर को बुलाकर क्या लाभ होगा?"

"उसका वेतन मुकाबले की उस राशि से कम होगा जो हैम्पशायर से दस हजार की आयात पर व्यय होता है....इसके अतिरिक्त और कोई उपाय भी नहीं....हमने अपनी ओर से पूरा प्रयत्न कर लिया है किन्तु पूरे भारत में कोई भी ऐसा दिमाग न खोज सके जो यह पुर्जा बना सकता।"

"आपकी खोजें केवल सिफारिशों तक सीमित रहीं..." राजन गम्भीर होकर बोला, "और सिफारिशें भी उन दिमागों की की जाती हैं जिनका अपना कोई मूल्य नहीं होता....जिन दिमागों

का मूल्य होता है वे सिफारिशों पर निर्भर नहीं करते...."

"आपका दावा बहुत ऊंचा है, मिस्टर राजन!"

"केवल दावा नहीं...इसका प्रणाम भी है मेरे पास!"

राजन ने एक बड़े से डिब्बे से पुर्जा निकालकर मेज पर रख दिया। मैनेजर इस प्रकार उछला जैसे अचानक ही उसकी कुर्सी में दांत निकल आए हों। उसने झट पुर्जा उठाकर इधर-उधर नीचे ऊपर से देखा, फिर राजन की ओर देखकर मुस्कराया–

"एक आदमी पहले भी मार्किट से ऐसा पुर्जा खरीद लाया था जिसे वह दावे के साथ अपना बता रहा था....बाद में उसकी पोल खुल गई।"

"परिणामस्वरूप उसे जेल में होना चाहिए..." राजन भी मुस्कराया।

"यदि हम ढील देते तो यह बात उलझ जाती!"

"ठीक है....आप इस पुर्जे को पूर्ण रूप से परखिए....विशेषत: पुर्जे का वह भाग देखिए जिस पर हैम्पशायदर की गुप्त मुहर लगी है जिसे किसी प्रकार भी मिटाया नहीं जा सकता....इस पुर्जे पर वह मुहर नहीं मिलेगी।"

मैनेजर ने पुर्जे के उस भाग को देखा....वास्तव में वहां कोई मुहर न थी....और वह स्थान भी इतना सपाट और साफ था कि अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता था कि खुदे हुए मुहर के स्थान पर वैल्डिंग से कोई धातु भर कर उसे समतल कर दिया गया हो। मैनेजर की आंखें आश्चर्य से फैली रह गईं....फिर उसने घण्टी बजाकर चपरासी को बुलाया, 'चीफ इंजीनियर साहब को सलाम बोलो।"

चपरासी के जाने के बाद मैनेजर कभी तो उस पुर्जे को देखता और कभी राजन को। थोड़े ही समय में चीफ इंजीनियर आज्ञा लेकर भीतर आया। मैनेजर ने उसे पुर्जा देकर कुछ आदेश दिया। जब चीफ इंजीनियर चला गया तो मैनेजर फिर राजन को देखने लगा, फिर बोला, "ऐसे लगता है आपको पहले भी कहीं देखा है।"

राजन ने चुपचाप मुस्कराकर एक सफेद कार्ड निकाल कर मैनेजर को देते हुए कहा, "शायद साल-भर पहले आपने यह कार्ड एक टैक्सीड्राइवर को दिया था जिसकी टैक्सी में आप स्टेट बैंक से कुछ पैसा लेकर लौट रहे थे....आपकी अपनी कार उस समय वर्कशाप गई हुई थी।"

मैनेजर एक बार फिर अनायास उछल पड़ा।

"ओह....याद आया...तुमने मुझे लुटने से बचाया था...उफ फो...तुम वह हो....तभी तो मैं सोच रहा था इससे पहले भी तुम्हें कहीं देखा है....किन्तु तुम तो टैक्सी ड्राइवर थे....मिस्त्री कैसे बन गए?"

"आदमी आगे बढ़ने के लिए हर वह मार्ग अपनाता है जिस पर वह समझता है, आगे चलकर उसे मंजिल मिलने वाली है।"

"मंजिल!" मैनेजर ने आश्चर्यचकित उसे देखा, "यदि यह पुर्जा वास्तव में तुम्ही ने निर्माण किया है तो पचास हजार रुपया नकद और दस हजार रुपये प्रतिमाह तो पैसे ही तुम्हारे हुए।"

राजन कुछ न बोला....मैंनेजर अब भी उसे बेचैन और असमंजसभरी दृष्टि से देख रहा था।"

लगभग बीस मिनट बाद चीफ इंजीनियर वापस आया। उसके चेहरे पर गहरा जोश और आश्चर्य के चिन्ह स्पष्ट थे। उसने व्याकुल भाव से मैनेजर से पूछा, "क्या इसे मिस्टर राजन ने ही बनाया है?"

"कोई कमी?" मैनेजर ने संभलकर बैठते हुए पूछा।

"इम्पोर्ट किए हुए और इस पुर्जे में बस इतना ही अन्तर है कि उस पर मुहर है और इस पर मुहर नहीं।"

सहसा मैनेजर ने अनायास खड़े होकर राजन से हाथ मिलाते हुए कहा, "बधाई हो मिस्टर राजन!"

चीफ इंजीनियर ने भी बड़े तपाक में राजन से हाथ मिलाकर उसे बधाई दी....फिर चन्द ही मिनटों में पूरी फैक्टरी में एक शोर मच गया। फैक्टरी के कर्मचारियों ने राजन, शंकर और चन्दर को घेरे में लिया था। इस समय वे लोग फैक्टरी की अस्टडी में थे। चन्दर और शंकर के सीने गौरव से फूल गए थे....उन्हें यों अनुभव हो रहा था जैसे यह सफलता राजन की नहीं बल्कि स्वयं उनकी विजय थी।

बड़े यत्न से मैनेजर राजन को उन लोगों से अलग करके दफ्तर में ले गया–उसके संग शंकर और चन्दर भी थे। मैनेजर ने चपरासी को बुलाकर चाय का ऑर्डर दिया और राजन से सम्बोधित हुआ, "आज मेरी छाती गौरव और मान से फूल गई है मिस्टर राजन कि हमारे देश में भी ऐसे युवक हैं जो दूसरे देशों के सामने हमरा सिर ऊंचा कर सकते हैं....पिछले अढ़ाई वर्षों से मैं अपने युवकों से बहुत निराश हो गया था....मैं नहीं बता सकता मुझे कितनी प्रसन्नता हुई है....मेरा बेटा भी विलायत में इंजीनियरी की शिक्षा ग्रहण कर रहा है....वह वहां से कोई पोजीशन भी प्राप्त करके आता तो भी मुझे इतनी प्रसन्नता न होती.....क्योंकि मैंने तुम्हारा एक वह रूप भी देखा है जब तुम टैक्सी ड्राइवर थे और तुमने मेरा बैग लुटेरों से बचाकर साढ़े तीन लाख रुपये बचा दिए।" कुछ क्षण रुक कर वह फिर बोला, "मैं आज ही यह पुर्जा मालिकों के सामने रख दूंगा....एक-दो दिन में तुम्हारा इन्टरव्यू हो जाएगा और इसी सप्ताह तुम्हारी नियुक्ति भी हो जाएगी....पचास हजार रुपया नकद और दस हजार रुपया महीना....कोठी और कार फैक्टरी की ओर से....यह समझ लो तुम्हारा जीवन बदल गया।"

शंकर और चन्दर के चेहरे प्रसन्नता से चमक उठे....किन्तु राजन ने बड़े सन्तोष से उत्तर दिया, "किन्तु इस प्रकार मैं अपना जीवन नहीं बदलना चाहता।"

मैनेजर के साथ ही चन्दर और शंकर ने भी चौंककर राजन की ओर देखा और शंकर बोला, "यह क्या कह रहे हो राजन?"

"मैं ठीक कह रहा हूं दादा! मुझे न पचास हजार इनाम चाहिए न दस हजार महीना, न कोठी, न कार...."

"यह तुम कैसी बातें कर रहे हो?" मैनेजर ने आश्चर्य से पूछा, "फिर तुमने यह पुर्जा बनाने के लिए इतनी मेहनत किस लिए की थी?"

"दस हजार रुपये माहवार की नौकरी के लिए नहीं की।" राजन मुस्कराकर बोला, "मैं फैक्टरी की नौकरी का बन्दी नहीं होना चाहता....मैंने जो परिश्रम किया है उसे केवल पचास हजार के इनाम, दस हजार रुपये की नौकरी, एक कोठी और एक कार के बदले नहीं बेच सकता...."

"फिर...? क्या करोगे?'' मैनेजर ने विस्मय से पूछा।

"मैं इस पुर्जे के लिए स्वयं अपनी फैक्टरी खड़ी करना चाहता हूं....परिश्रम मैंने किया है और इसका लाभ जेमसन एण्ड जेमसन ही के लिए नहीं....देश की आधी दर्जन ऐसी उन फैक्टरियों के लिए महत्व रखता है जिन्हें यह पुर्जा विदेश से आयात करना पड़ता है....स्पष्ट है कि जब यह पुर्जा देश में ही बनेगा तो सरकार दूसरी कम्पनियों को इसे बाहर से इम्पोर्ट करने के लिए मुबादले की राशि नहीं देगी....वह भी यहीं से अपनी आवश्यकताएं पूरी करेंगी....इस स्थिति में मेरे परिश्रम का लाभ जेमसन एण्ड जेमसन ही उठाएगी जबकि मैंने यह परिश्रम, यह प्रयोग आपकी फैक्टी की देख-रेख में नहीं बल्कि अपने निजी पैसे से किया है...."

"हूं...." मैनेजर लम्बी सांस लेकर मुस्कराया और कुर्सी की पीठ से टेक लगा कर बोला, "इसके लिए फैक्टरी और मशीनरी के लिए ही कम-से-कम अढ़ाई लाख रुपये की आवश्यकता पड़ेगी....कहां से करोगे इसका प्रबंध? यदि तुम्हारे पास निजी धन है तो ठीक है....नहीं तो इसके लिए तुम जिससे सहायता मांगोगे वह कम-से-कम आधे का लाभ तो तुमसे लेगा ही।"

"आपकी फर्म इस सम्बन्ध में मेरी क्या सहायता कर सकती है?"

"फैक्टरी तो शायद कोई सहायता न दे, क्योंकि पचास हजार का इनाम वह तभी देगी जब तुम फैक्टरी की नौकरी स्वीकार करोगे, तो....हां, मैंने यह अनुभव किया है कि तुम साहसी युवक हो, तुम्हारी आकांक्षाएं ऊंची हैं....निश्चय दृढ़ हैं....तुमने जो मार्ग सोचा है बहुत अच्छा है किन्तु, ऐसे उच्च विचार साधारणत: विवशताओं की भेंट हो जाते हैं....हमारे देश में जिनके पास बुद्धि है उनके पास पूंजी नहीं, धन नहीं.....और जिनके पास धन है वे ऐसे दिमागों को न केवल खरीद ही लेते हैं बल्कि जीवन-भर के लिए दास भी बना लेते हैं।"

"और मैं ऐसी दासता कभी स्वीकार नहीं करूंगा।"

"और इसका परिणाम यह होगा कि यह आविष्कार तुम्हारी हठ की भेंट हो जाएगा और यह बात राष्ट्रीय हित के विरुद्ध होगी।"

"आप राष्ट्रीय हित का भास उन पूंजीपतियों को भी दिला सकते हैं जो मेरे जैसे दिमागों को खरीद कर नाकारा बना देते हैं....धन और पूंजी पर उन लोगों को अधिकार है जो दिमाग नहीं

रखते....इसीलिए धन चन्द एक हाथों में ही रहता है....तकनीकी हाथ उनके अधीन हैं.....वह स्वतन्त्र रूप से कुछ भी नहीं कर सकते....मैं इस प्रथा को तोड़कर रहूंगा.....लाभ उसे पहुंचना चाहिए जिसने परिश्रम किया है न कि उसे जो बैठे-बैठे एक दिमाग का अनथक परिश्रम खरीद ले।"

मैनेजर ध्यानपूर्वक राजन का चेहरा देखता रहा, फिर धीरे से बोला, "मैं फैक्टरी का कर्मचारी हूं इसलिए फैक्टरी के विरुद्ध यहां कुछ नहीं कर सकता...तुम मुझसे रात के आठ बजे के लगभग मेरी कोठी पर मिलो..."

मैनेजर ने अपना पता लिखकर राजन को दिया। थोड़ी देर बाद राजन निकला तो टैक्सी में बैठने के बाद शंकर ने आश्चर्य से पूछा, "यह तुम क्या मूर्खता कर रहे हो राजन! पचास हजार और दस हजार महीना, एक कोठी और एक कार.....क्या कम होते हैं? सारा जीवन ऐश से बीतेगा।"

"दादा! आप स्वयं ही सोचिए.....जो फैक्टरी मुझे पचास हजार और दस हजार महीना, एक कोठी और कार केवल इसलिए देगी कि मैंने एक ऐसा पुर्जा बना लिया है जो लाखों रुपये वार्षिक की मुबादले की राशि बचाएगा....तो वह फैक्टरी स्वयं इससे कितना कमाएगी....और यदि फैक्टरी कमाएगी तो उसका लाभ भी वह ही लेगी....मैं तो हर हाल में इसका नौकर ही रहूंगा....और वह भी जीवन भर के लिए....जितना फैक्टरी कमाएगी यदि उतना ही मैं स्वयं कमाऊं तो क्या बुरा है.....अपने मस्तिष्क के परिश्रम का फल मैं स्वयं ही खाऊं.....। इस प्रकार प्रेरणा मिलेगी और मैं कुछ और उन्नति कर पाऊंगा....आज यदि केवल एक पुर्जे की प्रोडक्शन के लिए हमारी फैक्टरी खड़ी होती है तो कल वह फैक्टरी और चीजें भी बना सकती है.....उन्नति से उन्नति का मोड़ मिलता है.....इसके अतिरिक्त जो फैक्टरी मैं बनाऊंगा यह किसी पूंजीपति की फैक्टरी न होगी वह टैक्नीकल हैन्डस की फैक्टरी होगी....उन्हीं का आधिपत्य होगा उस पर....उसमें शंकर दादा भी अपनी योग्यता दिखा सकते हैं और चन्दर भी....न जाने कितने चन्दर और शंकर दादा.....किसी पुर्जे का निर्माण करते-करते केवल इसलिए निराश हो जाते हैं कि उनके पास इस पर लगाने के लिए पर्याप्त धनराशि नहीं होती.....समय नहीं होता.....मेरी फैक्टरी में इस बात का पूरा ध्यान रखा जाएगा।"

"पागल है" ....चन्दर ने ठहाका लगाया, "और ऐसे ही पागल यदि हमारे देश में पैदा होते रहे तो देश की दौलत चन्द हाथों में एकत्र होकर न रह जाए....योग्य दिमाग पूंजीपतियों के अधीन न रहें...."

"वह सब तो ठीक है....किन्तु फैक्टरी बनाने के लिए रुपया कहां से आएगा?"

"रुपया?" राजन मुस्कराया, "दादा रुपया उन से छीना जाता है जो अपनी पतलून की क्रीज ठीक रखते हैं....चौबीस घण्टे शराब पीते हैं....अब आप देखिए....धन तो लोग मेरे पीछे-पीछे लेकर दौड़ेंगे।"

शंकर कुछ न बोला। उसकी आंखों में चिन्ता की झलक थी।

* *

मैनेजर ने राजन का स्वागत किया और उसे लिपटाता हुआ बोला, "आओ....मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था?"

राजन को बिठा कर मैनेजर ने सामने रखे गिलास ने व्हिस्की उड़ेली, और पूछा, "सोडा मिलाते हो?"

"धन्यवाद!" राजन ने गम्भीरता से कहा, "केवल सोडा पीता हूं, वह भी बदहजमी होने पर...."

"बहुत खूब...." मैनेजर की मुस्कराहट में स्नेह और प्रशंसा दोनों थीं, "कितनी खुशी की बात है कि तुम बिना शराब के ही इतना दिमागी काम कर लेते हो।"

"शराब को छोड़ कर ही दिमाग का प्रयोग कर सका हूं....जब शराब पीता था तो बिना नशे के कुछ अनुभव ही न करता था।"

"तुम निस्सन्देह योग्य युवक हो....काश! तुम मेरे ही बेटे होते....तुमने कल फैक्टरी में जिन विचारों को प्रकट किया था मैं उनसे पूर्णतया सहमत हूं....मैं चाहता हूं कि तुम जैसे नौजवानों का साहस बढ़ाया जाए....तुम्हें शायद ज्ञात न हो कि स्टेट बैंक इंडस्ट्री के लिए बड़े-बड़े ऋण भी देता है जिससे तकनीकी हाथ केवल पूंजी के अभाव के कारण देश के निर्माण में सहायता देने से पीछे न रह जाएं....मैंने स्टेट बैंक के मैनेजर से तुम्हारे विषय में बातचीत की है वह मेरा घनिष्ठ मित्र है....उसने मुझे सब समझाया है....तुम्हें स्टेट बैंक ऋण दे सकता है.....यदि तुम्हारी फैक्टरी अढ़ाई लाख की लागत से बनती हो तो बैंक से तुम्हें कम से कम डेढ़ लाख रुपया मिल सकता है....इसके लिए स्टेट बैंक की कुछ शर्तें भी हैं....उदाहरण के लिए तुम्हें डेढ़ लाख रुपया ऋण लेना हो तो इसके लिए तुम्हें कम से कम एक लाख रुपया अपनी निजी राशि भी दिखानी पड़ेगी।"

राजन चुपचाप सन्तोष से मैनेजर का चेहरा देखता रहा....मैनेजर ने मुस्करा कर पूछा, "कर सकोगे एक लाख का प्रबंध?"

"इस समय तो मेरे पास एक लाख पैसा भी नहीं...." राजन एक दृढ़ मुस्कराहट के साथ बोला, "किन्तु मुझे विश्वास है कि एक लाख का प्रबंध होगा और अवश्य होगा....जिन लोगों की बुद्धि रोशन हो और उनके हृदय की आंखें खुल जाएं भगवान उन्हें उन्नति के मार्ग दिखाता है और उन मार्गों से कांटे चुनकर साफ करना इन्सान का अपना काम है।"

मैनेजर के चेहरे पर सन्तोषजनक मुस्कान फैल गई और वह धीमे स्वर में बोला, "तो जाओ बेटा! डेढ़ लाख रुपया तुम्हारी प्रतीक्षा में है....चौरानवे हजार का प्रबंध करो और मेरे पास चले आओ।"

"चौरानवे हजार?"

"इसकी व्याख्या मत मांगो....बस इतना ही कह सकता हूं कि मैं एक फैक्टरी का मैनेजर हूं....छः हजार रुपये माहवार वेतन पाता हूं....पांच लड़कियों एक लड़के का बाप हूं....क्या स्टैन्डर्ड, क्या खर्चा दे सकता हूं....सहायता के रूप में नहीं, ऋण के रूप में जो बिना ब्याज के होगा और बिना लिखित के....तुम जब चाहो वापस करना....इसे अधिक.....मैं दे नहीं सकता....वरना मैं कहता अपने छोटे बेटे के कारोबार में अधिक लगा दिया है.....बस अब तुम चले जाओ....तुम्हारे समय का एक-एक क्षण कीमती है...."

राजन चकित दृष्टि से मैनेजर की ओर देखता रह गया....मैनेजर झुंझला कर बोला, "जाओ....देर मत करो..."

* *

राजन ने सिगरेट का कश लिया और आंखें फैलाए हुए उस धुएं को देखता रहा जो चूल्हे से सुलगती हुई लकड़ियों से उठकर बल खाता हुआ ऊपर की ओर जा रहा था। अचानक सुषमा ने राजन के कंधे पर हाथ रखा और धीरे से बोली, "राजन बाबू....!"

"हम..." राजन ने सुषमा की आंखों में देखा।

"आखिर कब तक आप इस प्रकार सोचते रहेंगे। आप समझते हैं इस प्रकार सोचने से एक लाख रुपये का प्रबन्ध हो जाएगा?"

राजन ने मुस्करा कर सुषमा के दोनों कंधों पर हाथ रख दिए और उसकी आंखों में देखता हुआ बोला, "हो जाएगा....यदि तुम्हारी आंखों की ज्योति यों ही मेरी आंखों को मार्ग दिखाती रही....सच कहता हूं सुषमा। मुझे तुम्हारे प्यार ने वह शक्ति, वह साहस दिया है कि मुझे कोई कठिनाई नहीं लगती....मार्ग कर रुकावटों के पहाड़ साधारण कंकर ज्ञात होते हैं जिन्हें मेरा साहस ठोकरों से हटाता हुआ चलता है.....और मुझे अपनी मंजिल बिल्कुल सामने दिखाई देती है...."

अचानक कोठरी के द्वार का किवाड़ दीवार से टकरा कर बजा और राजन और सुषमा ने एक साथ सामने देखा। उसी क्षण सुषमा ठिठककर कर राजन से अलग हो गई। उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगी थीं....किन्तु राजन के चेहरे पर कोई घबराहट, कोई चिन्ता न थी....वह बड़े सन्तोष से चन्दर को देख रहा था जिसके मुख पर बेचैनी-सी झलक रही थी। वह इस प्रकार द्वार का सहारा लिए खड़ा था जैसे उसने वर्षों से एक मूर्ति को भगवान समझ कर पूजा हो और अचानक उसे ज्ञात हुआ हो कि वह तो पत्थर की है। उसकी आंखों से उसकी घायल आत्मा कराहती हुई झांक रही थी। राजन के होंठों पर एक हल्की-सी मुस्कराहट फैल गई और वह धीरे से बोला–

"बहुत निर्बल है तुम्हारा विश्वास....मेरे दोस्त!"

चन्दर कुछ न बोला। वह धीरे-धीरे आगे बढ़ा और राजन के बिल्कुल सामने पहुंचकर रुक गया। चन्द क्षण तक वह राजन की आंखों में झांकता रहा। राजन ने आंखें नहीं झुकाईं। उन आंखों

में कोई लज्जा नहीं थी, कोई खेद नहीं था....धीरे-धीरे चन्दर का हाथ क्रोध में ऊपर उठता गया....सुषमा को अपनी सांस रुकती-सी लगी। अचानक चन्दर का हाथ पूरी शक्ति से घूमा और तड़ाके की आवाज के साथ एक तमाचा राजन के गाल पर पड़ा....सुषमा कलेजा थाम कर दीवार से लग गई। राजन के होंठों से लहू की एक रेखा फूट कर ठोड़ी पर आ गई....किन्तु उसकी मुस्कराहट में कोई अन्तर न आया। चन्दर कंपकंपाते स्वर में बोला–

"यह लहू की धारा तुम्हारी छाती से फव्वारा बनकर भी फूट सकती थी किन्तु, चन्दर मित्रता का खून करके तुम्हारी टोली में सम्मिलित नहीं होना चाहता। जाओ....तुम्हें शंकर दादा ने गैरेज में बुलाया है....चन्दर आज से तुम्हारे लिए मर चुका है।"

राजन के होंठों की मुस्कराहट और गहरी हो गई। उसने कहा, "चन्दर अमर है....चन्दर मेरे लिए कभी नहीं मर सकता।"

फिर राजन ने होंठ से बहते हुए लहू को अंगूठे पर लगाया और सुषमा की ओर मुड़कर उसी अंगूठे से बिंदिया लगा दी....सुषमा अवाक, हक्की बक्की-सी खड़ी रही। चन्दर की आंखें आश्चर्य से फैल गईं। राजन ने चन्दर की ओर मुड़कर देखा और धीरे से बोला, "जो प्यार और मित्रता.....एक बुझे हुए निर्जीव हृदय को फौलाद की शक्ति और समुद्र का साहस प्रदान करें वह न पाप कहलाते हैं, न मर सकते हैं।"

फिर राजन उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना चुपचाप तेज चलता हुआ कोठरी से बाहर निकल गया।

* *

जब राजन गैरेज के पास पहुंचा तो उसने आश्चर्य से देखा....गैरेज के बाहर सड़क के दोनों किनारों से लगी हुई दो दर्जन से अधिक कारें खड़ी थीं....अम्पाला....मर्सिडीज....शेवरलेट, हिलमैन....राजन ध्यानपूर्वक उन कारों को देखता हुआ होंठों पर मुस्कराहट लिए गैरेज में आया....गैरेज में बढ़िया वस्त्र पहने हुए कुछ लोग खड़े थे जिनके हाथों में बाहर वाले की चाय के घटिया गिलास थे....अचानक राजन के कानों से शंकर को आवाज टकराई, 'वह आ गया राजन।'

दूसरे ही क्षण उन लोगों ने राजन को घेरे में ले लिया। गैरेज से मरम्मत के लिए आई हुई गाड़ियों की छतों पर चढ़कर कुछ लोग फ्लैश कैमरों में धड़ाधड़, राजन की तस्वीरें लेने लगे। एक बड़ी-सी पगड़ी वाले ने राजन से पूछा, "मिस्टर राजन! तुम्हारे गैरेज की चाय तो रूसी शराब से अधिक बढ़िया नशे वाली है?"

"मिस्टर राजन! तुमने हमारे देश का सिर ऊंचा कर दिया है।" दूसरे ने कहा।

"ऐसे-ऐसे रत्न मिट्टी में पड़े हैं.....हमारे देश का दुर्भाग्य है...."

"किन्तु अब यह रत्न मिट्टी में नहीं पड़ा रहेगा।"

"यह है एक लाख का चैक एडवांस के रूप में...." एक हाथ राजन की ओर बढ़ा, "फैक्टरी की स्थापना का प्रबन्ध कराए देता हूं।"

"मैं दो लाख देता हूं एडवांस के रूप में।"

"ठहरिए....ठहरिए....ठहरिए..." राजन जोर से चिल्लाया। जब सब चुप हो गए तो राजन बोला–

"क्षमा करें....मैं आप में से किसी की भी सहायता स्वीकार करने को तैयार नहीं हूं..."

"हम तुम्हें पचास प्रतिशत का पार्टनर बनाते हैं।" एक ने कहा।

"हम साठ प्रतिशत...." दूसरा बोला।

"किन्तु मुझे पार्टनरशिप स्वीकार नहीं..." राजन हाथ उठाकर बोला, "आप लोगों को देश और जाति से इतनी ही सहानुभूति है और आप इस रत्न को मिट्टी से निकालना चाहते हैं तो फैक्टरी की स्थापना के लिए ऋण दीजिए जो ब्याज समेत वापस कर दिया जाएगा....दूसरी कोई शर्त मुझे स्वीकार नहीं....यही मेरा फैसला है....आप में से जिसे यह स्वीकार है वह यहां ठहर जाए शेष जा सकते हैं।"

सबने एक-दूसरे की ओर देखा....फिर एक ने दूसरे से कहा, "कितनी कबाड़ा चाय है....सारा मुंह कसैला हो गया है....क्या स्क्रीन मिलाते हैं चीनी की जगह...."

"इस शताब्दी का युवक आवश्यकता से अधिक आत्मविश्वासी होकर पागल हो गया है...." दूसरा बोला, "अनुभव की बात नहीं मानेगा..."

"आवाज तो जानेगा..." तीसरा मुस्कराया, "जब कोई मार्ग नहीं होगा तो हमारे पास ही आएगा।"

थोड़ी देर बाद सभी कारों वाले लौट गए और प्रेस वालों ने राजन को घेर कर प्रश्नों की बौछार कर दी।

* *

राजन ने गैरेज के मध्य में खड़े होकर चारों ओर दृष्टि घुमाई। गैरेज में एक भी मरम्मत वाली गाड़ी न थी....कोई औजार न था, कोई मशीनरी न थी....उसने गैरेज के एक-एक कारीगर को देखा। शंकर के चेहरे पर उसकी दृष्टि रुक गई। शंकर ने अपनी जेब से कुछ बड़े नोट निकाले और मुस्कराकर बीच में रखे एक मेज पर रखता हुआ बोला, "छत्तीस हजार....अब मेरे पास चन्द बर्तनों के अतिरिक्त कुछ नहीं रहा।"

"यह सात सौ रुपये....मेरी कुल पूंजी है....राजन दादा!" एक और कारीगर ने नोट डालते हुए कहा, "मेरी पत्नी के पास और कोई गहना नहीं था कि इनमें बढ़ोतरी कर सकता।"

"और यह पन्द्रह सौ रुपया है...." अचानक चन्दर की आवाज सुनकर राजन चौंका, "मेरी पूरी पूंजी जो मैंने बहन के दहेज के लिए एकत्र की थी....उसके दहेज में दे रहा हूं।"

उन लोगों ने आश्चर्यचकित चन्दर को देखा जिसके होंठों पर एक स्नेहमय मुस्कराहट खेल रही थी। दूसरे कारीगर भी एक-एक करके रुपये डालते रहे। आखिरी कारीगर लड़के ने ठण्डी सांस ली और फीकी-सी मुस्कराहट के साथ बोला, "मां की दवा लाने के बाद मैंने यह बीड़ियों के लिए चार आने बचाए थे....इससे अधिक मेरे पास कुछ नहीं है राजन भैया।"

राजन ने उस लड़के के चेहरे को ध्यान से देखा, फिर चन्दर को, शंकर को, शम्भू, करीम को और बचनसिंह को....इसके बाद उसकी दृष्टि मेज पर टिक गई...उसने दोनों हाथों से नोटों को टटोला और उसके होंठ कंपकंपाए....उसने आकाश की ओर देखा....फिर अचानक चीख पड़ा, "मोहन भैया! आओ, देखो.....तुमने मुझसे एक भाई छीनकर मुझे अकेला समझ लिया था....यदि आंखें हैं तो आकर देखो, मैं अकेला नहीं हूं....मेरे कितने भाई हैं....कौन कहता है कि मुझे एक लाख रुपया नहीं मिल सकता....पूछो उन निर्धनों से जाकर। जिनकी तिजोरियां करोड़ों रुपयों से भरी रहती हैं....वे मुझसे अधिक धनी हो सकते हैं....उसके पास किसी शंकर, किसी चन्दर, किसी शम्भू किसी करीम और किसी बचनसिंह के प्यार की दौलत है.....किसी के पास है यह दौलत....?"

चीखते-चीखते राजन की आवाज भर्रा गई और वह दोनों हाथों से मुंह छिपाकर सिसकियां लेने लगा....आवाज बढ़ती ही गई....फिर वह फूट-फूट कर रोने लगा।

* *

जेमसन एण्ड जेमसन कम्पनी के मैनेजर ने हजार-हजार के छः नोट मेज पर पड़े हुए रुपयों में मिला दिए और सब रुपयों को उठाकर गिनने लगा। फिर राजन की ओर देख कर बोला, "ये कुल मिलाकर सैंतालीस हजार रुपये होते हैं।"

"जी हां...." राजन ने धीरे से कहा, "मैं यह रुपया आपके पास अमानत रखने आया हूं।"

"किन्तु, इनमें अभी पूरे तिरेप्पन हजार की आवश्यकता है....पचास और तीन हजार..."

"मैनेजर साहब!" राजन मुस्कराया, "जब यह रकम सैंतालीस हजार तक पहुंच सकती है तो क्या एक लाख तक नहीं पहुंच सकती?"

"तुम्हारा विश्वास और साहस यही है तो एक लाख क्या दस लाख तक पहुंच जाएगी।"

"किसी अकेले आदमी का साहस और विश्वास काफी नहीं होता....मैनेजर साहब। जब तक आप जैसे प्यार करने वाले, सहानुभूति रखने वाले उसके संग न हो....आज ही से मैं एक फैक्टरी में दो हजार रुपये माहवार पर लग गया हूं....मेरे अन्य मित्र भी गैरेजों और कारखानों में लग गए हैं....शंकर दादा को एक हजार रुपया माहवार की मैकेनिक की नौकरी मिल गई है....चन्दर रात-दिन टैक्सी चलाने का निश्चय कर चुका है और ये सब हाथ मिलकर इस राशि को एक लाख तक पहुंचाने का निश्चय कर चुके हैं..."

"काम चालू रखो...." मैनेजर मुस्कराया, "मैंने स्टेट बैंक के मैनेजर से कागजात तैयार करा लिए हैं....गवाहियां, हस्ताक्षर ओर जमानतें भी हो चुकी हैं....जिस दिन एक लाख पूरा हो जाएगा....एक सप्ताह के भीतर-भीतर डेढ़ लाख स्टेट बैंक से मिल जाएगा....इसके अतिरिक्त सरकार ने पंचवर्षीय योजना में जो इंडस्ट्रियल एरिया बनवाया है उसमें एक फैक्टरी के लिए आसान किस्तों पर मैंने भी तुम्हारे लिए एक स्थान का प्रबन्ध कर दिया है।"

"मैं आपका धन्यवाद करके आपके प्यार का अपमान नहीं करूंगा मैनेजर साहब!"

"जाओ व्यर्थ बातों में समय नष्ट न करो।"

* *

राजन ने शंकर के गैरेज के फाटक में प्रवेश किया–जिसमें एक ओर शैड में शंकर की नौकरानी चूल्हा सुलगाकर रोटियां पका रही थी....दूसरी ओर एक टीन के नीचे बेबी बैठी पढ़ रही थी। राजन उस कोठरी की ओर बढ़ा जिसमें उसका बिस्तर लगा था....इसी समय उसे शंकर की आवाज सुनाई दी जो राजन को पुकार रहा था। राजन बेबी के पास से गुजरकर उसके सिर पर हाथ फेरता हुआ शंकर को कोठरी में पहुंच गया। शंकर ने मुस्कराकर उसे देखा और बोला, "आज के समाचार पत्र देखे तुमने?"

"नहीं।"

"लो देखो...."

शंकर ने ढेर सारे समाचार-पत्र राजन के सामने डाल दिए। राजन एक-एक समाचार पत्र देखने लगा–पहले ही पन्ने पर कई ढंगों में राजन की तस्वीर छपी थी....साथ ही कई शीर्षक थे जैसे–'विप्लवकारी दिमाग रखने वाला युवक मिस्त्री जिसने विदेशों के बड़े-बड़े इंजीनियरों को दांतों तले उंगली दबाने पर विवश कर दिया।' 'एक युवक मैकेनिक जिसने वह पुर्जा बना लिया जिसे देश का कोई इंजीनियर नहीं बना सका। 'एक युवक इंकलाबी जिसने लाखों की दौलत ठुकराकर पूंजीपतियों की दासता स्वीकार नहीं की।' शीर्षकों के नीचे पूरी खबरे थीं, राजन के इन्टरव्यू थे....कुछ अखबारों ने राजन को सिरफिरा कहा था....राजन ने समाचार पत्र एक ओर रखकर मुस्कराकर शंकर की ओर देखा और सिगरेट सुलगाने लगा। शंकर ने चुपचाप एक बड़ी-सी गड्डी राजन के सामने रखते हुए कहा, "और आखिरी समाचार यह है।"

"नोट–!" राजन चौंककर शंकर को देखने लगा।

"पूरे साठ हजार!" शंकर मुस्कराया।

"साठ हजार!" राजन की पुतलियां आश्चर्य से फैल गईं।

"यह न पूछो तो अच्छा है कि ये कहां से आए?" शंकर ने ठण्डी सांस लेकर कहा, "क्योंकि मुझे झूठ बोलना पड़ेगा।"

राजन ने ध्यान से शंकर को देखा और उसके कंधे को पकड़कर बोला "इधर देखो दादा! मेरी आंखों में....तुमने अपना फ्लैट पगड़ी लेकर किराये पर दिया था....या उसे बेच दिया?"

"राजन....बेटा..." शंकर भारी आवाज में बोला, "देर न करो अब, यह राशि लेकर तुम श्रीधर सिन्हा साहब के पास पहुंच जाओ। हमारे लिए अब वही सबसे बड़ी खुशी का दिन होगा जिस दिन तुम अपनी फैक्टरी का उद्घाटन समारोह मनाओगे...."

और राजन आंखें फाड़े हुए शंकर को देखता रह गया।

* *

'सुषमा प्रोडक्ट' का एक बहुत बड़ा-सा बोर्ड फैक्टरी के फाटक पर रंग-बिरंगी रोशनियों में झिलमिला रहा था।

फैक्ट्री के फाटक के सामने एक बहुत बड़े मैदान में छोटा-सा पंडाल बना हुआ था जिसमें कुछ पंक्तियां कुर्सियों की लगी हुई थी जिन पर सुषमा प्रोडक्ट फैक्टरी के उद्घाटन समारोह में चलाए गए चन्द एक विशेष व्यक्ति विराजमान थे। इनमें वे कारीगर भी थे जो राजन के साथ शंकर के गैरेज में काम करते थे। सबसे अगली पंक्ति में बीच वाली कुर्सी पर मिस्टर सिन्हा बैठे थे। राजन, शंकर और चन्दर के साथ एक ओर खड़ा हुआ बातें कर रहा था। अचानक एक कार फाटक पर आकर रुकी...शंकर ने जल्दी से कहा–

"वह देखो...ये कौन लोग हैं? बिठाओ जरा इन्हें...."

राजन आगे बढ़ा....कार की खिड़कियां खुलीं....और राजन के पुराने मित्र अनिल, धर्मचन्द, फकीरचन्द और कुमुद नीचे उतरे। चारों ने तेजी से बढ़कर राजन को घेर लिया। अनिल राजन से लिपटता हुआ बोला, "बधाई हो राजन! तुम्हें देखने को तो आंखें तरस गई थीं....हम तो सपने में भी नहीं सोचते थे कि हमारा मित्र इतना छिपा रुस्तम निकलेगा....बस यही सुना था कि तुम टैक्सी ड्राइवर बन गए हो....आज सारा देश राजन के गीत गा रहा है....इससे बड़ी खुशी की बात हमारे लिए क्या हो सकती है।"

"आजकल समाचार-पत्रों में आए दिन धड़ाधड़ तुम्हारे भाषण आ रहे हैं....हमारा तो मन बाग-बाग हो जाता था देख-देखकर" धर्मचन्द ने मुस्कराते हुए कहा।

"हम तो यह सोच रहे थे कि शायद इस समारोह में तुम हमें भी याद करोगे...." कुमुद ने बड़ी आत्मीयता से कहा।

"तुम लोगों को तो मैं जीवन के किसी भाग में भी नहीं भूल सकता।" राजन की मुस्कराहट और गहरी हो गई।

"आखिर दोस्त हैं न...." फकीरचन्द मुस्कराकर बोला, "दोस्तों को कैसे भूला जा सकता है।"

"अरे यार! यह खुला पंडाल बनवाया है तुमने?" अनिल बोला, "क्या पीने-पिलाने का प्रबन्ध न होगा इस समारोह में....बिना पिए-पिलाए तो खुशी का कोई समारोह पूर्ण नहीं होता...."

"पीने का प्रबन्ध भी है।" राजन की मुस्कराहट और गहरी हो गई। वह चन्दर से बोला, "चन्दर! मेरे बहुत अच्छे समय के साथी हैं ये जिन्होंने मेरे फालतू समय में मुझे कभी बोर नहीं होने दिया। इनकी देखभाल ध्यान से करना....इन्हें ले जाकर कुर्सियों पर बिठाओ....एक-एक ठण्डा गिलास पानी पिलाओ..."

फिर इससे पहले कि उन लोगों में से कोई बोलता....एक मर्सिडीज आकर रुकी। राजन शीघ्र मुस्कराता हुआ मर्सिडीज की ओर बढ़ गया। अनिल, धर्मचन्द, फकीरचन्द और कुमुद आश्चर्य से उसे देखते हुए कुर्सियों की ओर बढ़ गए। मर्सिडीज की खिड़की खुली और उसमें से पहले राजा कूदकर उतरा और लपककर राजन की गोद में चढ़ता हुआ बोला, "अंकल....अंकल डार्लिंग..."

"मेरा राजा बेटा...." राजन ने राजा को प्यार किया।

फिर राजन की दृष्टि मोहन पर पड़ी। मोहन मुस्कराता हुआ गाड़ी से उतरा था....उसकी आंखों में विजय का भाव झलक रहा था....साथ ही साथ राधा भी उतरी जिसने डबडबाई आंखों से स्नेह भरी मुस्कराहट से राजन को देखा। राजन मुस्कराया।

"आइए सेठ मोहनदास और श्रीमती मोहनदास....मुझे प्रसन्नता है कि इस खुशी के समारोह में सम्मिलित होने की मेरी प्रार्थना को आपने ठुकराया नहीं।"

"यह तुम क्या कह रहे हो राजन भैया।" राधा कंपकंपाते हुए स्वर में बोली, "तुम्हारी इस अनुपम सफलता पर हम खुश न होंगे तो और कौन होगा।"

"सच कहती हैं आप..." राजन की मुस्कराहट और गहरी हो गई, "आइए! केवल आप ही की प्रतीक्षा थी....शेष सब अतिथि गण आ चुके हैं...समारोह में।"

मोहन कुछ न बोला। उसके होंठों पर अब भी वही मुस्कराहट थी। उसने सिगार का कोना तोड़कर दांतों में दबा लिया और राधा के साथ धीरे-धीरे राजन के पीछे चलने लगा। राजन ने उन्हें कुर्सियों पर बिठाया। फिर राजन पंडाल से निकला तो उसकी दृष्टि सुषमा पर पड़ी और वह ठिठक गया। सुषमा के माथे पर एक लाल बिन्दिया जगमगा रही थी। उसकी आंखें लाज से झुक गईं। राजन मुस्कराकर बोला, "आज तुम सुषमा नहीं....साक्षात एक समारोह हो...प्रसन्नता का उत्तम समारोह....एक उत्सव हो।"

"हटिए! कोई सुन लेगा," सुषमां घबराहट से लजाते हुए बोली....और इधर-उधर देखने लगी।

"यही लड़की है वह?" राधा ने धीरे से मोहन की ओर झुककर पूछा।

"हां....सुषमा..."

"बड़ी प्यारी है....गुड़िया सी...राजन का चुनाव बहुत प्यारा है।"

थोड़ी देर बाद राजन सबके सामने खड़े होकर सब को सम्बोधित करते हुए बोला, "समारोह में उपस्थित देवियो और सज्जनो। अब सारे अतिथि आ चुके हैं सो कार्य वही आरम्भ करने की आज्ञा चाहता हूं....आप सोच रहे होंगे कि इस समारोह में शहर की प्रसिद्ध हस्तियां सम्मिलित नहीं हुईं....कोई मंच क्यों नहीं बनाया गया....कोई माइक का प्रबन्ध नहीं किया गया....इसके लिए मैं निवेदन करूंगा कि दो प्रकार के व्यक्ति ही आदर और सम्मान के योग्य होते हैं....पहले वे जिनका सम्मान उनके हाथों और उजले मन के कारण होता है और दूसरे वे जिनका आदर उनके धन के कारण होता है....यहां दोनों प्रकार की हस्तियां उपस्थित हैं....मंच और माइक इत्यादि वहां आवश्यक होते हैं जहां के समारोह दिखावे और प्रदर्शनी के लिए होते हैं....यह समारोह मेरे और मेरे मित्रों के मन की खुशी को प्रकट करता है....इस प्रसन्नता को प्रकट करने के लिए हमें किसी दिखावे की आवश्यकता नहीं....क्योंकि आवाज चाहे कितनी हल्की ही क्यों न हो वह उन हृदयों तक अवश्य ही पहुंच जाती है जिनमें स्नेह, सत्यता, सौन्दर्य होता है....सहानुभूति और आपस में समझने की बुद्धि होती है....जहां ये गुण नहीं होता वहां लाख ऊंचे स्वर में और मंच लगाकर बोलो....कुछ लाभ नहीं। अब आपसे प्रार्थना है कि फैक्टरी के मुख्य द्वार पर पहुंचकर उद्घाटन की रस्म में सम्मिलित हों।"

थोड़ी देर बाद सारे अतिथि फैक्टरी के फाटक पर थे। फाटक के बिलकुल पास ही राजन खड़ा था। राजन के पास सुषमा, चन्दर और शंकर भी थे....सब यही सोच रहे थे कि देखें राजन किसे फैक्टरी के उद्घाटन का श्रेय देता है। राजन ने इधर-उधर देखा और शंकर से बोला, "भैया! कल्लन किधर गया?"

"मैं हां हूं राजन भैया!" कल्लन ने आगे बढ़कर कहा।

सब लोग उधर देखने लगे। कल्लन दस-ग्यारह वर्ष का लड़का था जो घर के धुले हुए बिना प्रेस किए कपड़े पहने हुए था....राजन ने उसे अपने पास बुलाया और उसके कंधे पर हाथ रखकर मुस्कराकर इधर-उधर देखा और फिर बोला, "यह मेरा साथी, शंकर दादा के गैरेज का सवा दो रुपये दिन का सबसे छोटा कारीगर है जिसने अपनी मां की दवा में से बचे हुए चार आने जो इसने बीड़ियों के लिए बचाए थे....इस फैक्टरी की स्थापना के लिए सहायता में दिए थे...वे चार आने इस फैक्टरी के लिए जितने महत्वपूर्ण हैं उतने शायद कहीं से मिले हुए चार लाख रुपये भी न हों....यह फैक्टरी मेरी है किन्तु, इसका असली मालिक कल्लन है....इसलिए कल्लन ही फैक्टरी का उद्घाटन करेगा।"

सबसे पहले मोहन ने तालियां बजाईं और फिर बड़ी देर तक तालियां गूंजती रहीं....कल्लन ने घबराकर इधर-उधर देखा और कांपते हुए हाथों से फैक्टरी का उद्घाटन किया....फैक्टरी का फाटक खोला गया....उसमें सबसे पहले कल्लन ने प्रवेश किया। फिर राजन ने हाथ उठाकर जोर से कहा, "ठहरिए...."

सब लोग ठिठककर रह गए...राजन ने मुस्कराकर कहा–

"यह था मेरी फैक्टरी के उद्घाटन का समारोह जिसका दृश्य आपने देखा....यह है वह फैक्टरी जिसकी नींव प्यार और स्नेह पर रखी हुई है और उसकी स्थापना में मेरा हाथ बंटाने वाले वे लोग हैं जिन्होंने अपने घरों के गहने और बर्तन बेचकर, अपनी बीवियों के पैसे देकर मुझे इस काम को पूरा करने की शक्ति प्रदान की है। साहस बढ़ाया है....इसकी स्थापना में उन लोगों का कोई भाग नहीं जिन लोगों ने उस समय, जब मैं एक करोड़पति बाप का बेटा था मेरे साथ शराब पी, मौज उड़ाई, मुझे गलत मार्ग दिखाए....इसकी स्थापना में उनका कोई हाथ नहीं जिनकी दृष्टि में दौलत खून के रिश्ते से अधिक महत्वपूर्ण होती है...इसलिए फैक्टरी की जमीन पर केवल वही पैर जाएंगे जो एक निर्धन और गरीब राजन के साथी रहे हैं...वे पांव नहीं जाएंगे जिन्होंने राजन को गरीब बनाया....और उसके गरीब और निर्धन बन जाने पर उससे आंखें चुरा गए..."

"अरे!" शंकर बड़बड़ाया, "यह क्या बक रहा है तू!"

"मैं वह कह रहा हूं दादा जो कुछ कहने के लिए मैंने इतना समय प्रतीक्षा की....अपनी रात की नींदें और दिन का आराम हराम किया...मर्सिडीज के मालिक से टैक्सी-ड्राइवर बना...मिस्त्री बना, दादा! मैं वह समय कभी नहीं भूल सकता जब अचानक किसी की स्वार्थता ने मुझे निर्धन-मुफलिस बना दिया....और मेरे घनिष्ठ मित्र मुझे इस प्रकार छोड़कर भागे जैसे मैं उन पर बोझ बन जाऊंगा....इसी समय की प्रतीक्षा में मैंने कितनी रातें जाग-जाग कर बिताई हैं....दादा! आज मुझे अवसर मिला है उस इन्तकाम का, उस बदले का....यह आप बरसों मेरी आत्मा को झुलसाती रही है.....मुझे घृणा है ऐसे लोगों से....आज मेरा इन्तकाम पूरा हो चुका है....इन लोगों ने मुझसे एक दुनिया छीन कर यह समझा था कि बस अब मुझे कोई दुनिया नहीं मिलेगी....आज मैंने एक नई दुनिया बना ली है जिसका निर्माता मैं हूं....मैं अपनी दुनिया का मालिक हूं...मैं

अपनी दुनिया में इन स्वार्थी पांवों की चांप भी नहीं आने दूंगा।"

कुछ देर बाद सन्नाटा रहा...फिर अनिल, कुमुद, धर्मचन्द, फकीरचन्द बुरे मुंह बनाकर पलटे और बाहर चले गए....किन्तु मोहन वहीं खड़ा रहा। राधा ने धीरे से उसका हाथ पकड़ा और भर्राई हुई आवाज में बोली...."चलिए....अब कितना अपमान कराएंगे।"

"आभास हुआ आपको....श्रीमती मोहनदास!" राजन कड़वी मुस्कराहट होंठों पर लाता हुआ बोला, "जब आदमी का अपमान होता है तो उसकी आत्मा को कितना दुख होता है...."

"किन्तु मुझे तनिक भी नहीं पहुंचा...." मोहन बड़ी ममतामय मुस्कराहट से बोला, "क्योंकि मैं जानता हूं आज तुम उस स्थान पर हो जहां पर खड़े होकर तुम अपने अपमान का बदला लेने का अधिकार रखते हो....मुझे खुशी है कि मेरे भाई में इतना साहस, इतनी शक्ति है कि वह अपने अपमान का बदला ले सकता है....अपनी बेइज्जती को नहीं भूल सकता....क्योंकि उसने अपने अपमान का बदला लेने के लिए ही अपनी दुनिया का निर्माण किया है....किन्तु तुम भूल रहे हो कि जब मैंने तुम्हारा अपमान किया था उस समय मेरा दिन था तुम्हें अपमानित करने का इसलिए नहीं कि तुम मेरे छोटे भाई थे बल्कि इसलिए कि जिस दुनिया में उस समय मैं खड़ा था उस दुनिया की मैंने स्थापना की थी...मैंने निर्माण किया था....डैडी की दौलत अवश्य थी किन्तु ऐसे ही जैसे आज तुम्हारे पास अपना कुछ नहीं...सब कुछ इन्हीं सच्चे मित्रों की दौलत है...इस दुनिया का निर्माण तुमने किया है....डैडी की दौलत बेकार पड़ी थी, क्योंकि वह हृदय रोग के रोगी थे....और एक दिन इसी रोग से चल बसे...तुम्हारे भविष्य का उत्तरदायित्व मुझे सौंप गए....तुम यह भी जानते हो कि डैडी की मृत्यु के बाद मैंने दिन को दिन नहीं समझा और रात को रात....तुम्हारी ही तरह मैंने जीतोड़ कर परिश्रम किया....अपनी आधी शिक्षा छोड़ कर कारोबार को संभाला...अपने जीवन को सीमित कर लिया–केवल तुम्हारे लिए। मैंने जीवन की सारी दिलचस्पियां समाप्त कर दीं....क्योंकि मैं जानता था दौलत उन हाथों में रहती है जो उसे रोकना जानते हैं....मैं भी यदि तुम्हारे ही समान एक धनाढ्य बाप का अय्याश बेटा बनकर शराब, जुआ और सुन्दरी में खो जाता....जीवन की रंगीनियों में स्वयं को व्यस्त कर देता....तो एक दिन मैं स्वयं ही निर्धन न होता बल्कि तुम, राधा, राजा....सब मेरे साथ मुफलिस हो जाते....मैं सब कुछ भूल कर यह याद रखने का प्रयास कर रहा था कि डैडी ने तुम्हारे भविष्य का उत्तरदायित्व मुझ पर डाला है....मैंने कभी तुम्हारा मन नहीं दुखाया...तुम्हारी हर हठ मैंने पूरी की....तुम मेरे असीम, प्यार के कारण अनुचित रंगरेलियों में पड़ गए....शराब, जुआ, बुरी संगति....तुमने क्या नहीं किया? फिर एक दिन जब मुझे यह अनुभव हुआ कि तुम उस स्थान पर पहुंच चुके हो जहां मेरा समझाना तुम्हें विष लगता है और झूठे कपटी मित्रों के परामर्श अमृत.....तुम जिस लड़की से शादी के इच्छुक थे उसे मैं निकट से जानता था और तब मैंने बहुत सोच-समझकर फैसला किया कि यही समय है तुम्हें भास दिलाने का कि जो दौलत तुम पानी के समान बहा रहे हो उसे कमाने में लहू-पसीना एक करना पड़ता है और जब दौलत आदमी के पास होती है तो हजारों दोस्त होते हैं खाने-पीने और ऐश करने वाले....किन्तु सच्चे दोस्त वही है जो मुफलिस को सहारा बनें....असली प्रेमिका वही होती है जिसके प्यार का तौल धन न हो और मैंने क्षण-भर में तुम्हें

मुफलिस बना दिया। डैडी की वसीयत वास्तविक नहीं थी...नकली थी। निर्धन होकर तुमने देख ही लिया कि कौन तुम्हारा मित्र सिद्ध हुआ, कौन प्रेमिका। तुम्हारे एक-एक दिन के हालात से मैं परिचित हूं....तुम्हारे कष्ट सुनकर मेरे हृदय में नश्तर से चुभते रहे किन्तु मैं अपनी छाती पर सिल रखे रहा, ताकि डैडी की आत्मा के सम्मुख लज्जित न हो सकूं...और अपने भाई को कुछ बना देख लूं। तुम्हारी भाभी राधा जो तुम्हारे लक्षणों से घृणा प्रकट करती थी। वह तुम्हें राजा के ही समान चाहने लगी। उसने रो रोकर, मेरे पांव पकड़-पकड़ कर कहा कि तुम्हें वापिस बुला लूं....मैंने उसे दुत्कार दिया। तुमने टैक्सी चलाई, मिस्त्री बने....और आज तुम उस स्थान पर हो कि सारा देश राजन के नाम पर गौरव करता है...यह सब तुमने किन लोगों से मिल कर पाया? अच्छे मित्रों और अच्छे-परामर्श देने वाले शुभचिन्तकों से क्योंकि इनमें से कोई भी अनिल, फकीरचन्द, धर्मचन्द या कुमुद नहीं है....तुम यह जान चुके हो कि अच्छी संगत आदमी को कहां पहुंचा देती है और बुरी कहां। आज तुम यह सब कुछ प्राप्त कर चुके हो....मैं नकली वसीयतनामा फाड़ चुका हूं....असली वसीयतनामा मेरे पास है जिसके अनुसार तुम आधी सम्पत्ति के अधिकारी हो....मेरा उद्देश्य पूरा हो चुका है मेरे राजा के लिए आधी दौलत ही इतनी है कि वह स्वयं खाएगा और बच्चों के लिए छोड़ जाएगा....इसलिए तुम जब भी चाहो अपनी सम्पत्ति का आधा भाग मुझसे ले सकते हो.....और मेरा आशीर्वाद है कि तुम जीवन-भर फलते-फूलते रहो मेरे लाल..." कहते-कहते मोहन की आवाज भर्रा गई, "चलो राजा...राजा बेटा चलो।"

राजन और उसके सब साथी सन्नाटे में खड़े थे। अचानक शंकर ने बढ़कर कहा, "ठहरिए मोहन बाबू! बहुत हो चुका....अब मैं आपकी कसम नहीं रख सकता।" फिर वह राजन से बोला, "इतनी ठोकरें खाने के बाद भी तुझे बुद्धि नहीं आई लड़के, तू एक देवता का अपमान कर रहा है...जानता है वह साठ हजार रुपया किसने दिया था जिससे यह फैक्टरी बन सकी....वह मोहन बाबू देकर गए थे....मुझसे कसम लेकर कि रहस्य तुझ पर नहीं खोलूं किन्तु मैं एक देवता का अपमान होते नहीं देख सकता....यदि तूने मोहन बाबू के पांव पकड़ कर अभी क्षमा न मांगी तो मैं जीवन-भर तेरा मुंह नहीं देखूंगा।"

राजन भौंचक्का-सा रह गया। सुषमा ने उसका कंधा हिलाया और धीरे से बोली।

"सुन रहे हैं आप....मैंने आपसे कहा था कि जिस दिन आदमी आदमी से निराश हो जाएगा वह दिन दुनिया का अन्तिम दिन होगा अब भी आप सोच रहे हैं। आगे बढ़िए....मान दीजिए इस देवता को और खुशी के इस समारोह की शोभा बढ़ा लीजिए।"

राजन ने झट आगे बढ़कर मोहन के पैर पकड़ लिए। मोहन ने उसे उठाकर सीने से लगा लिया और हड़बड़ाई आंखों से बोला, "मेरे बेटे....मेरे लाल।"

"मुझे क्षमा कर दो भैया....मुझे क्षमा कर दो...." राजन मोहन के गले लगकर बच्चों के समान बिलख-बिलखकर रोने लगा।

* * *